विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व्दारा

पारित लघुशोध प्रबंध

वर्ष 2010 से 2012

मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन : एक अध्ययन

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. रमेश एस. जगताप

कला संकाय, बामखेडा

तह.शहादा जि. नन्दुरबार

(महाराष्ट्र) 4425409

प्राक्कथन

ग्रामीण कथाकारों के रूप में मिथिलेश्वर विख्यात है । उन्होंने कहानी और उपन्यासविधामें अपनी छाप छोडी है । ग्रामीण जनजीवन में भारतीय समाज की आत्मा बसती है । वहॉ रेणु की दृष्टि से फूल है तो कांटे भी है । किन्तु फिर भी ग्रामीण समाज अनेक समस्याओं के बावजूद अपने जीवन को ठेल रहा है । ग्रामीण जन जीवन की तथा सांस्कृतिक, उसी प्रकार पुराने जमाने में वर्ण व्यवस्था के आधार पर कार्य किये जाते थे । वही जाति बनकर आज भी विद्यमान है । राजनीति ने जातियों तथा संकिणताओं को अलग हवा देने का हमेशा काम किया है । ग्रामीण समाज हमेशा से छल का शिकार हुआ है । अशिक्षा, दरिद्रता , अंधविश्वास, अंधश्रध्दा आदि में जकडा रहा है । नारी शोषण के रूपों में परिवर्तन हो रहा है । ग्रामीण पढालिखा युवक के हाथों में काम नही है वह शिक्षित होकर शहरों की ओर भाग रहा है । मजबूरी में वह फूटपाथों पर रहने के लिए मजबूर है । सरकारी योजनाएँ पंचवर्षिय योजना के रूप में शुरू की गई । लेकिन सारी योजनाऍ गरीबों तक नही पहुॅच पाई क्योंकि भ्रष्टाचार इतना बढ गया कि, हर कोई नेता, मंत्री, सरकारी अफसर लूट के पीछे लगा है । नतीजा ग्रामीण वर्ग ठगा सा महसूस कर रहा है । मिथिलेश्वर बिहार के अति पिछडे इलाके के पैदा हुए है । उन्होंने ग्रामीण जीवन को बहुत करीब से देखा हैं और भोगा भी है । स्पष्ट है कि अपने कथा साहित्य में लेखक ने ग्रामीण जीवन का ताना बाना बुनने की कोशिश की है ।

हमारी संस्था के अध्यक्ष मा. जी आय पटेल, सचिव मा. बी. व्ही चौधरी तथा उपाध्यक्ष पुनाभाई पटेल इनका हमेशा सहयोग और प्रेरणा मिली । महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ए.एस.बागुल हमेशा प्रोत्साहित करते रहते है । महाविद्यालय के सभी अध्यापक, अध्यापकेत्तर कर्मचारी हरेक क्षण बल देते रहे है

उसी प्रकार ज्ञान अज्ञात परिजनों, मित्रों का ह्रदय से अभिवादन प्रकट करता हूॅ ।

डॉ रमेश जगताप

अनुक्रम

अध्याय - प्रथम	:-	मिथिलेश्वर का व्यक्तित्व कृतित्व
अध्याय - व्दितिय	:-	हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन
अध्याय - तृतिय	:	मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण सामाजिक जीवन
अध्याय - चतुर्थ	:-	मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में राजनीतिक ग्रामीण जीवन
अध्याय - पंचम	:-	मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण आर्थिक जीवन
अध्याय - षष्टम	:-	मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन
अध्याय - सप्तम	:	उपसंहार
		संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रथम अध्याय

मिथिलेश्वर का व्यक्तित्व: कृतित्व

भारत का बडा भूभाग ग्रामीण क्षेत्र का है । क्योंकि अस्सी प्रतिशत भारतीय लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते है । गांव की सभ्यता और संस्कृति कृषि व्यवस्था पर ही निर्भर है । स्वाभाविक तौर पर ग्रामीणता का प्रभाव साहित्यकारों पर देखा जा सकता है । हिन्दी साहित्य में यह प्रभाव प्रेमचंद पर भी दिखाई देता है । उन्होंने ग्रामीणों को लेकर कई कहानियाँ लिखी है । इसके बाद आंचलिकता की परम्परा शुरू हुई । स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य ग्रामीण परिवेश से अछूता नही रह सका है । जिसमें फ.रेणु, हिमाशु श्रीवास्तव , शैलेश मटियानी , रामदरश मिश्र, राजेद्र अवस्थी, गोविंद मिश्र, विवेकीराय , दूधनाथसिंह, शिवप्रसाद सिंह, शानी, मार्कडेंय, पंकज बिष्ट, प्रभा खेतान और मिथिलेश्वर आदि लेखकों ने अपनी महत्वपूर्ण रचनाएँ हिन्दी साहित्य को दी है ।

इन सभी साहित्यकारों में से मिथिलेश्वर जीने मुझे काफी ज्यादा प्रभावित किया हैं । क्योंकि उनके साहित्य से ग्रामीण परिवेश पूरी ईमानदारी और सच्चाई से उभरकर आता है । 'प्रेम न बाडी उपजै' इसकी मिसाल दी जा सकती है । मिथिलेश्वरजी ने अपने जीवन में जो भी लिखा है वो अपने आस पास के परिवेश को लेकर ही लिखा है । उनका काफी जीवन ग्रामीण क्षेत्र से जुडा हुआ रहा है । अध्यापकीय जीवन के दौरान भी वे अपने गांव आते जाते रहें है । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर ग्रामीण कथाकार के रूप में ख्यातिप्राप्त लेखक है ।

मिथिलेश्वर की जन्म कथा पर प्रकाश डालते हुए यह कहॉ जा सकता है कि, उनका जन्म 31 दिसंबर 1950 में बिहार के भोजपुर जिले में बेसाडीह ग्राम में हुआ है । मिथिलेश्वर अपने जन्म स्थान के बारें में लिखते हैं - मैं आपको बता दूं , मेरा जन्म भोजपुर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है जो चोरी - डकैती लूटपाट मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहुर है । उस इलाके में कोई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी, अब बन्दूक की नोंक पर तय की जाती थी । पता नही क्यों, बचपन से ही अपने इलाके के अत्याचार - अनाचार जुल्मसितम, शोषण, अन्याय को मैं सह नही पाता था" ।[1] शायद यहा बचपन की व्यथा जीवन भर साहित्य के माध्यम से बार बार उभरती रही है । मिथिलेश्वर के पिताजी वंशरोपनलाल थे जिनमें अद्‌भूत प्रतिभा थी । और माताजी का नाम श्रीमती कमला देवी था । पुत्र मिथिलेश्वर के जन्म के

बारें में मॉ कमलादेवी कहती है - "इसका जनम सतवॉस बच्चे के रूप में हुआ था । याने सात महिने में ही पैदा हो गया" ।[2] इस कारण बडे दुबले पतले थे । मिथिलेश्वर को देखकर मॉ हमेशा कहती थी "यह कैसा लडका है । एकदम चरंगे (दुबली पतली मछली की एक प्रजाति) जैसा इसकी देह में तनिक भी हेरा बेरा (हड्डी मांस) नहीं । केवल सिरिजना (आकृति संरचना) भर है ।[3] याने सात मास में जो बच्चे पैदा होते है उनका बचपन कमजोरी में बीतता है । जब उनके जन्म की सूचना उनके पुरोहित को मिली तो वे दौडकर इनके गांव आये और उनका भविष्य फल का ज्ञान इस प्रकार बताया "जिस मुहूर्त और नक्षत्र में यह बालक पैदा हुआ है, उसके अनुसार इसे धन और यश की कभी कमी नहीं होगी । यह अपने कुल-खानदान का नाम रेाशन करेगा । लेकिन अभी यह सतइसा में पडा है । अब सताइस दिन तक पिता को इसका मुॅह नही देखना । सताइस दिन बाद जब सताइस का अनुष्ठान सपंन्न होगा , तभी पिता इसे देख सकेगें" ।[4] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी ने पढाई-लिखाई के बाद वे कॉलेज में प्रोफेसर बने और पुरोहित की भविष्यवाणी सही साबित की ।

मिथिलेश्वर के पिता आरा (बिहार) के एच डी जैन कॉलेज में वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष थे । वह बडे ही प्रतिभाशाली व्यक्ति थे । केवल डिग्री पर उन्हें यह नौकरी मिली थी । मिथिलेश्वरजीने बाद में एक थे प्रो. बी लाल नामक कथा संग्रह लिखा जिसकी पहली कहानी अपने पिता की जीवनी को रेखाकिंत करती है । अपने पिता के बारें में लेखक लिखते हैं - प्रो. बी. लाल मेरे पिता थे । ऐसे पिता, जिनकी विलक्षण प्रतिभा की मार मैं बचपन से ही सहता रहा हूँ । गांव की पाठशाला में गुरूजी का विशेष ध्यान मेरी उत्तर पुस्तिका पर ही होता था और छात्रों की सभी गलतियॉ उनके लिए क्षम्य होती थी । लेकिन मेरी सामान्य भूल पर भी वे माफ नही करते थे - "प्रो. बी. लाल का लडका होकर यह यह भूल ।[5] बडे हाकर भी यही पीडा मिथिलेश्वर जी को भोगनी पडी क्योंकि उनके व्दारा लिखी कहानी को पिता व्दारा लिखी होने का भ्रम फैलाया गया था । इस बात पर लेखक स्वंय कहते है - "मुझे उनके इस प्रचार से दुख नही हुआ । जानता था मेरे प्रति यह उनका ईर्ष्या या रोष भाव नहीं पिताजी की विद्वता के प्रति उनकी अतिशय श्रध्दा भावना थी" ।[6] तात्पर्य मिथिलेश्वर दुष्प्रचारों से डरे नही ना कभी कोई भद्दी प्रतिक्रिया दी । प्रो. वंशरोपनलाल अदभूत ज्ञानी व्यक्ति थे । उनके व्यक्तित्व के

बारें में मिथिलेश्वर जी कहते हैं "सांवला रंग, लम्बी तगडी कद काठी । धोती कुर्ता पहने हुए । एक हाथ में धोती का छोर पकडे तथा दूसरे हाथ में छाता थामे । अपनी चिर परिचित चाल में किसी योध्दा की भॉति वे आ रहे थे "।[7] प्रोफेसर साहब एक बार कुछ पढ लेते थे तब वह पूरी की पूरी याद रहती थी । जिसका जिक्र प्रो. बी. लाल के परिसंवाद में डॉ. बोस ने किया था । जब उन्हें रेलवे की घटना याद आती हैं - वे कहते हैं - ट्रेन में जब वे अपने आलेख को पढते हुए टाइपिंग की भूलों को दुरूस्त कर रहे थे तब एक पहलवान सा दिखने वाला देहाती व्यक्ति कंबल ओढे भूॅजा चबा रहा था और उनके आलेख को ध्यान से निहारे जा रहा था । डॉ. बोस को याद आया की वह देहाती और कोई नही प्रोफेसर बी. लाल ही थे ।[8] इससे उनकी प्रतिभा का ज्ञान होता है । वे बडे दयालु और निम्न वर्ग से बेहद हमदर्दी रखते थे । इसे मिथिलेश्वर अपनी रचनाओं में कहते हैं - "पैडों के कटने से बगीचे की खाली जमीन के निकट रहनेवाले यादव लोगों को बेचते चले गये । यादव लोगों के पास बसने लायक वहॉ जमीन नही थी । बगीचे की जमीन को पाना वे अपने लिए वरदान से कम नही समझते थे । बस छोटे छोटे टुकडों में वे उसे खरीदते चले गये । आज उस बगीचे के स्थान पर यादवों की एक भरी पूरी बस्ती कायम है । इस बात के लिए वे यादव मेरे पिताजी की सराहना करते नही थकते कि, उन गरीबों को उनकी मनचाही जगह में बसा दिया । बगीचे की उस जमीन के लिए रसौली में बडे खरीददार भी थे जो एक मुश्त में अच्छी रक्कम दे देते । लेकिन नागा बाबा के निकटस्थ और इस जमीन के वास्तविक हकदार यादव लोगों को ही पिताजी ने वह जमीन दी" ।[9] इस तरह प्रोफेसर साहब सहृदयता के मामले में औरों से काफी अलग व्यक्ति थे ।

प्रोफेसर साहब के विवाह की जब बात चली तो कई रिश्ते आने लगे । तब इनके नाना लालूजी प्रसाद ने इन पर इतना दबाव डाला तो वे राजी हो गये । इस संदर्भ में मॉ कहती है- "मेरे पिताजी ने केवल लडके की पढाई और तेजस्विता देखकर मेरी शादी तय कर दी । मेरे घर परिवार के लोग पिताजी को मना कर रहे थे कि, बैसाडीह में क्या देखकर लडकी ब्याह रहे हो ? रामदहिन लाल के घर तो दोनों जून खाने का इन्तजाम भी नहीं वहॉ लडकी कैसे रहेगी ?

लेकिन मेरे पिताजी सबको समझा देते - "लडके का भविष्य मैं देख रहा हूॅ । वह एक न एक दिन बडा आदमी बनेगा । घर को आबाद कर देगा । अभी तो पढ रहा

है , इसीलिए उसके बाप ने पीठ पर हाथ भी धरने दिया । जब कुछ बन जायगा तो हमारे जैसे लोगों को वे सटने नहीं देगें "।[10] स्पष्ट है कि वे पढाई पूरी कर प्रोफेसर बने और अच्छा पैसा कमाने लगे ।

मिथिलेश्वर के पिता नौकरी करते करते खेती बाडी भी संभालते थे । इस बारे में लेखक की माँ कहती है हमारे खानदान में दीर्घ जीवन की परम्परा रही है । हमारे परदादा, दादा और बाबा सब लंबी आयु को प्राप्त हुए । इस संम्बंध में पिताजी के अल्यायु जीवन और आकस्मिक निधन को वह शहर और गांव के लिए उनकी बेचेनी, परेशानी और भाग दौड को जिम्मेदार समझती रही "।[11] जब उनकी 1968 में मृत्यु हुई तब मिथिलेश्वर मैट्रिक में पढते थे ।

मिथिलेश्वर की मॉ कमलादेवी थी जो धार्मिक संस्कारों वाली महिला थी । इस संदर्भ में मिथिलेश्वर जी कहते हैं - "जैसे मेरे पिताजी गांव के पढे लिखे पुरूष थे वैसे ही मेरी मॉ गांव की पहली शिक्षित महिला रामायण और महाभरत के अधिकांश महत्वपूर्ण प्रसंग उसे कठंस्थ थे, इसीलिए अपने मन की उलझन और शंका को हम जब भी उससे पूछते वह माकूल जबाब देती " ।[12] उसी प्रकार वह पूजा अर्चा भी बडी निष्ठा से करती थी । मिथिलेश्वर इसके बारें में लिखते है - "गांव के आहद के किनारे छटव्रती महिलाएँ जुटती । फिर डूबते सुर्य को अर्ध्य देती और अगले दिन उगते सुर्य को अर्ध्य देने के लिए वही बनी रहती । इस बीच सारी रात उसी आहद के किनारे धूप दीप लाकर छठी मइया के गीत गाती रहती " ।[13]

कमलादेवी अपने परिवार और पति पर अपार प्रेम करनेवाली महिला थी । लेकिन उसके मन में एक टीस भी थी । क्योंकि वह अपने पति से शहर में रहने की जिद करती लेकिन गांव की खेती बाडी के कारण ऐसा हो न सका । इसीलिए वह अपनी आशा आकांक्षाओं को दबाती रही । परन्तु पति के मृत्यु के बाद उनमें काफी परिवर्तन आ गया । और वह किसी भी बात पर गुस्सा करने लगी ।

इस बारें में लेखक अपनी पत्नी से इस प्रकार की सफाई देते है- "मॉ का स्वभाव कुछ कडा है । वह अगर पूरब को पश्चिम कहे तो उसे खुश रखने के लिए वैसा ही कहना पडेगा । अपने किसी भी तरह के आदेश की अवहेलना व बर्दाश्त नही कर पाती" । पत्नी भी उसका जबाब देती "तब तो अम्माजी का स्वभाव बहुत कडा है । हसन बाजार में किसी ने कहा था कि, सास बहुत गुस्सैल है .. । हे भगवान, वे मुझ पर

गुस्सा न करे ---। लेखक भी अपनी पत्नी से मॉ के स्वभाव के बारें में कहते है "मॉ ऐसी नही थी रेणु। मॉ को मुझसे अधिक कौन जान सकता है ? मॉ से सबसे अधिक मैं ही जुडा हूँ। पिताजी की मृत्यु के बाद वह ऐसी हो गयी है "।[14] इस तरह श्रीमती कमलादेवी बुढापें में किसी पर भी गुस्सा करती थी। उन्हें किसी भी हालत में उनके फैसले के खिलाफ जाना अच्छा नही लगता था। उन्हें जीवन के अंतिम समय में कई बिमारियों ने जकड रखा था। इस कारण उनके इलाज के लिए कई शहरों के अस्पतालों में जाना पडा। लेकिन कमला देवी इन रोगों से उबर न सकी और 2003 में इनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद लेखक अपनी भावनाएँ इस तरह बयान करते है - "उनके दाह संस्कार के बाद हमने उनके बक्से को खोला कि, उन्होंने क्या कुछ संचित कर रखा है ? लेकिन वह देखकर मेरी ऑखे भर आयी कि रॉची से मॉ के नाम भेजे मेरे पत्र उस बक्से में किसी अमूल्य निधि की तरह सॅजोंकर रखे थे। अपने प्रति मॉ के इस पुत्र मोह और लगाव ने अब मेरे संयम का बॉध तोड दिया। मैं वहीं उनके बक्से के पास ही फूट फूटकर रो उठा "।[15] स्पष्ट है कि श्रीमती कमलादेवी अपने परिवार तथा मिथिलेश्वर से अपार स्नेह रखती थी। यही लेखक की पुँजी है जिसे जीवन भर संचित किया जा सके ।

बचपन

मिथिलेश्वर जी का बचपन अपने पैत्रिक गॉव में बीता। उन्हें बचपन में मिथि नाम से बुलाते थे। गॉवों की जातिगत व्यवस्था उनमें बचपन से छु गई थी क्योंकि बैसाडीह गांव में उनके (कायस्थ) दो ही परिवार बसते थे। इसका फायदा गॉव के सवर्णा ने उठाया था उनके घर में एक बार चोरी हुई थी इस संदर्भ में वे लिखते है - "सुवर्ण बहुल हमारे गांव में हम कायस्थ सिर्फ दो ही घर थे। इस पर भी दोनों घर एक दूसरे से पृथक। अपने भाग्य से गॉव में बने हुए। अपने इस गॉव में जातिगत स्तर पर भी कमजोर और असहाय। पिताजी अकेले थे। उनके कोई और भाई बहन नहीं। नौकरी में उनके होने के चलते मॉ के साथ गांव पर हमे मासूम बच्चे ही रहते। शायद उस वक्त गांव का कोई भी घर हमारी तरह असुरक्षित और कमजोर नहीं "।[16] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर जी का बचपन इसी आंतक और भय में बीता। उपर से मिथिलेश्वरजी बचपन में बहुत ही कमजोर बच्चे थे। इस कारण उनक परिवार अधिक ध्यान देते थे। इसे स्वयं मिथिलेश्वर इस प्रकार बयान करते है "मेरे बाद जब छोटी बहन उर्वशी और

छोटे भाई कामेश्वर का जन्म हुआ तब भी मॉ का विशेष ध्यान मुझ पर ही बना रहा, क्योंकि मेरे सभी भाई बहन मोटे ताजे और मजबूत थे । अकेला मैं ही दुबला पतला बना हुआ था" ।[17] फिर भी मिथिलेश्वर की तबियत के बारें में मॉ हमेशा सचेत रहती और थोडी भी परेशानी होती तो तुरन्त उन्हें अस्पताल लेकर दौडती । उन्हें तरह तरह के खुराक देती । किन्तु फिर भी मिथिलेश्वर के शारीरिक ढांचे में कोई बदलाव नही आता । वे हमेशा अपनी मॉ से शिकायत करते की मेरी तबीयत ठीक है । और मै कभी बिमार नही रहता हूँ । इसी कमजोरी में मिथिलेश्वर जी का बचपन बीता ।

मिथिलेश्वर जी की प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव में हुयी । क्योंकि शारीरिक कमजोरी के कारण उन्हे स्कूल में देरी से भेजा गया था । वे लिखते है - "इसके मूल में सतवॉस बच्चे के रूप में मेरी दुबली पतली काया ही रही । मेरे गांव की पाठशाला गांव के उत्तर किनारे थी जहाँ अभी भी है । मेरे घर से पाठशाला की दूरी अधिक नही । अपना बस्ता लिए मैं एक ही दौड में स्कूल पहूंच जाता । स्कूल के आसपास का दृश्य मुझे बहुत अच्छा और मोहक लगता" ।[18] तथा प्राथमिक शिक्षा के बाद की व्यवस्था उनके गांव में नही थी । इसलिए उन्हें दूसरे गांव की स्कूल में भेजा था । और मैट्रिक की परिक्षा वीर कुँवरसिहं की नगरी जगदीशपुर से पास की थी । लेकिन मैट्रिक वे जैसे तैसे पास हुए । मैट्रिक पास करने के बाद उन्होनें विज्ञान में जाने का फैसला लिया । इस बारें में वे लिखते है इ "उस समय आई. ए. की जगह प्री युनिवर्सिटी की कक्षाए चलती थी । मैं प्री युनिवर्सिटी साईन्स का छात्र बना । मैट्रिक में मुझे कम अंक आये थे । उन अंकों पर जैन कॉलेज में दाखिला संभव नही था । लेकिन पिताजी की वजह से यह भी संभव हो गया" ।[19] इस तरह आपने ए एस कॉलेज विक्रमगंज (रोहतास) से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की । नवल किशोर गौड के कहने पर आपने एम. ए. की क्लास के लिए प्रवेश किया । इस बीच उनकी शादी भी हुयी और 'बाबूजी' नामक कथासंग्रह भी प्रकाशित किया था । अन्त मे मगध विश्वविद्यालय बोध गया से एम. ए. पूर्ण किया और इसी विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति की उपाधि भी हासिल की ।

मिथिलेश्वर का मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार था । उनके परिवार के संदर्भ में उनकी माता इस प्रकार कहती है -"हमारे उन पुरखों के नाम मॉ ने दर्ज कर रखे थे जो बावा ने उन्हें लिखवाए थे । अब मॉ ने वे नाम समय के अनुसार हमें भी लिखा दिये । उनके अनुसार हमारे यदि पुरखे धरनी धरदास के पुत्र मटुक मनदास हुए । फिर मटुक

मनदास के पुत्र शंकरदास । फिर शंकरदास के पुत्र फकीरदास । फिर फकीरदास के दो पुत्र हुए - मुन्नीदास और कन्नीदास इन में मुन्नीदास को तीन पुत्र हुए गोविन्दलाल, ठाकुर लाला और राघव शरण लाला इन में गोविन्द लाल को दो पुत्र हुए केशवलाल एंव रामदहिनलाल और ठाकुर लाल को एक पुत्र भोला लाल तथा राघव शरण लाल ने शादी ही नही की । वे साधु बनकर जिये । पूरा गांव उन्हें नागा बाबा कहता था । गांव में अपनी जोड के वे अकेले आदमी थे । इन पुरखों में सिर्फ रामदहिन लाल को ही एक पुत्र वंशरोपनलाल हुए जो हमारे मिथिलेश्वर के पिता कहलाए" ।[20] तात्पर्य इनका वंश भरा पूरा रहा है और आगे भी मिथिलेश्वर , नर्वदेश्वर, कामेश्वर और बज्रेश्वर तथा उषा , उर्वशी और उर्मिला आदि भाई बहन रहे है ।

मिथिलेश्वर जब बी.ए. में पढ रहे थे । तब उनके एक मित्र थे रामायण । जब इन की शादी की बात चल रही थी तब रामायण मिथिलेश्वर से बडे आग्रह करते रहें की आपको रेणू से ही शादी करनी चाहिए । रेणू रामायण की सहपाठी थी । इस बारें में मिथिलेश्वर लिखते है - "इसके बाद रामायण अब मेरे पीछे ही पड गया प्राय: रोज ही उस लडकी के बारे में बताने लगा । क्लास की उसकी एक एक हरकत को उसने जैसे आत्मसात कर लिया था । मुझे यह समझते देर नही लगी कि, उस सुन्दर लडकी के विलक्षण रंग रूप का अतिशय प्रभाव रामायण के मन पर था । वह चाहता था कि, उसके सम्पर्को के दायरे में ही वह लडकी आ जाए" ।[21] इस तरह मिथिलेश्वर का विवाह हसन बाजार के पोस्ट मास्टर श्यामसुन्दर प्रसाद की बेटी रेणु से 8 जून 1969 में बडी धूम धाम से हुआ । लेकिन रेणु से शादी करने के लिए मिथिलेश्वर को काफी समस्याएँ आती गई क्योंकि मिथिलेश्वर का परिवार दहेज चाहता था और एक बडी बहन की शादी भी होनी थी । रामायण व्दारा रेणु की सुन्दरता के किस्से सुन सुन कर मिथिलेश्वर के दिल में वह घर कर चुकी थी । इसलिए वह किसी भी हाल में रेणु से शादी करना चाहते थे और अपने परिवार तथा माँ से समझाते रहें कि लडकी चाहे गरीब परिवार की हो लेकिन सुसंस्कारी हो । मिथिलेश्वर अपनी माँ से यह भी कहते कि बडी भाभी अमीर परिवार की होने कारण आपको क्या क्या समस्याएँ झेलनी पडती हैं । तब कही जाकर मॉ मान लेती है किन्तु रेणु से शादी के लिए एक शर्त रखती है । और रेणु के पिता से कहती हैं - "हम आपके यहाँ शादी करेंगे । हमारा लडका भी तैयार है । लेकिन आप तो जानते है कि हमें भी अपनी एक लडकी ब्याहनी है । वह इस लडके की पीट पर ही है । आपसे तिलक दहेज लेकर हम उसमें लगाते । पर आप तो कुछ देने के

लिए तैयार नहीं । अब मेरी उस लडकी की शादी ही अपने परिवार में कही तय करा दीजिए । फिर मेरे लडके से शादी कर लीजिए" ।[22] रेणु के पिता ने यह शर्त मान कर उनकी बेटी का भी विवाह कराया और इस तरह रेणु का विवाह संपन्न हुआ ।

मिथिलेश्वर जी की पत्नी रेणु बुध्दिमान समझदार और प्रेरणा देनेवाली औरत है । मिथिलेश्वर की शादी से पहले रेणु जानती थी कि ये साहित्य लेखन करते हैं । इसलिए उन्होंने कलम उपहार स्वरूप दी थी । इस संदर्भ में रेणुजी कहती हैं - "तब तो आपको किसीकी टिका - टिप्पणी पर कोन नहीं देना चाहिए । जब लोग जिस काम को जानते ही नहीं उसके बारे में भ्रमवश भी कुछ ना कुछ कह सकते हैं । मेरे पिताजी का मानना है कि ऐसी भ्रामक बातों के पीछे आदमी को नहीं पडना चाहिए । जो जिस क्षेत्र का जानकार हो उसी की बात माननी चाहिए ... । आप अब खुब लिखिये" ।[23] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी को गृहलक्ष्मी के रूप में रेणु प्रसाद मिली ।

मिथिलेश्वर जी को पहले तीन बेटियाँ हुयी , लेकिन उनमें सबसे छोटी बेटी जो बहुत सुन्दर थी उसे भगवान से बचाया नही जा सका ।

मिथिलेश्वर जी ने अपने जीवन में बहुत ही संघर्ष किया है । पहले पहल उन्होंने पितृत्व में मिली खेती सम्हाली लेकिन वह नाकाफी था । इसलिए साहित्य से जुडने का प्रयास किया । बादमें नौकरी की तलाश में निकले । प्रतियोगिता परीक्षाओं को भी अजमाना चाहा लेकिन उसमें स्पर्धाएँ बहुत दिखाई देती थी । वे कहते है इ "स्कूल कॉलेज में पढते हुए मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि, हमारे यहॉ बेरोजगारी की समस्या इतनी बडी है । लेकिन जब नौकरी के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में जाने लगा तो इसकी तिक्तता के एहसास ने मुझे आंतकित करना शुरू कर दिया । इस पदों की विज्ञप्ति पर तीन-चार हजार से कम उम्मीदवार नहीं जुटते । यानी एक पद के लिए तीन चार सौ प्रत्याशी । ऐसी तगडी प्रतियोगिता के एहसास से ही हमारे हौसले पस्त हो जाते"।[24] बादमें उन्होंने प्रतियोगिताओं में जाना ठीक नही समझा । मिथिलेश्वर जी ने पहली नौकरी डॉ. नेमिचंद शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय में शुरू की । जहॉ मासिक वेतन समय पर मिलने की उम्मीद कम थी वे कहते है- "मैं भी यह सोचकर मौन रहा कि जब शिक्षक के रूप में बहाल हुआ हूँ तो अन्य शिक्षकों की भाँति मुझे उचित वेतन मिलेगा ही । लेकिन जब वेतन मिलने लगा और मेरी बारी आयी तो यह देखकर दंग रह गया कि मुझे मात्र 50 रूपये मिले" ।[25] बादमें आपने कॉलेज की नौकरी शुरू की ।

लेकिन वहॉ पर भी तनख्वाह कम ही मिलती थी । इसी बीच आपने कई जगह साक्षात्कार दिए । और उन्हें रॉची विश्वविद्यालय में पहली नौकरी प्राप्त हुई । उनकी सही नौकरी की शुरूवात 9 दिसबंर 1981 से हुयी । और वहॉ तनख्वाह भी ग्यारह सौ सत्तर रूपये मिलती थी । तब से अनवरत रूप में अध्यापन कार्य करते हुए व्याख्याता से प्रपाठक और रीडर तक पहुँचे और अब उसी विभाग से सेवा निवृत्त हुए है ।

मिथिलेश्वर जी विविध गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति है । वे हमेशा दूसरों को दुखों से उबारते हैं । हमेशा मदद करते है । चाहे वो छोटा आदमी क्यों न हो । इसी बीच उनकी मुलाकात एक युवा लेखक बिपिन बिहारी से हुयी जो पेशे से बस विभाग में काम करते थे । लेकिन वे अकेले होटल में रहते थे । यह जानकारी मिथिलेश्वर को मिली तो उनका सामान उठाकर अपने घर ले आये । इस बारें में वे स्वंय कहते है कि - "बिपिन जी की यह आवासीय व्यवस्था देखकर मेरा मन वाकई दुखी हो उठा । अब मैं अपने को रोक नहीं सका । उन्हें अपने साथ रहने का अनुरोध किया प्रारंभ में नये परिचय और शिष्टाचार में उन्होंने इनकार किया । मेरे पुन: पुन: आत्मीय आग्रह पर उनका इनकार स्वीकार में बदल गया । ... लेखक के रूप में समानधर्मी होने के चलते एक दूसरे के प्रति विश्वास पैदा होने में भी देर नहीं हुई । बस, बिपिनजी शाम की अन्तिम बस रवाना कर मेरे साथ चल पडे । उनके पास सामान अधिक नहीं । एक रिक्शे में ही सब ॲट गये" ।[26] इसी प्रकार मिथिलेश्वरजी ने समय के साथ नामक संघटन बनाकर नव लेखकों को प्रेरणा दी ।

इसी प्रकार मिथिलेश्वरजी के कई मित्र थे । कई तो बचपन के थे जिनमें जीन और बजाजी थे । कॉलेज में भी शिवनाथ सिंह , केशव सिन्हा और रामायण तैले आदि स्नेही मित्र थे । साथ ही साथ साहित्यकारों में प्रमुख मित्र थे - बनारसी प्रसाद भोजपुरी , रामेश्वर नाथ तिवारी, भगवती राकेश, डॉ. चंद्रभूषण तिवारी, मधुकरसिंह , नीरजसिंह, रामेश्वर उपाध्याय, ज्योति प्रकाश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, बिपिन बिहारी, राजेश कुमार, सुभाष प्रसाद सरकार, नवलकिशोर गौंड आदि । अत: यही कहा जा सकता हैं कि मिथिलेश्वर जी पारिवारिक तथा मित्रों का जमावडा काफी बडा और विशाल था ।

मिथिलेश्वर जी काफी भावनाशील व्यक्तित्व हैं जब उन्होंने कई पदों के लिए साक्षात्कार दिया किन्तु कही भी उनका काम नही बना तो निराश हो गये इस सम्बध में वे कहते है - "लेकिन सच तो यह था कि, मेरा संवेदनशील मन इतनी जल्दी उस घटना को विस्मृत नहीं कर पा रहा था । छोटे स्तर की घटनाएँ छोटी प्रक्रिया के साथ

मन में जज्ब हो जाती थी । वे मुझे देर तक परेशान नहीं करती । लेकिन यह काफी बडे स्तर की घटना थी" ।[27] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी कोई भी घटना छोटी हो या बडी उसे सहज भूल पाना उनके लिए बडा कठीण था ।

आधुनिकता के कारण आज संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है । गांवों में आज भी भरे पूरे परिवार देखे जा सकते हैं लेकिन शहरों में यह सब नही दिखता । मिथिलेश्वर जी भी संयुक्त परिवार को ही मानते है । क्योंकि उनके साथ ऐसी घटना घटी की, उनकी जमीन का टुकडा किसी ने हडप लिया । और उसे वापस पाने के लिए काफी मशकत करनी पडी । उस समय उनकी तबीयत ठीक नही थी । और उस जमीन पर घर बनाना बेहद जरूरी था । इसीलिए उन्होंने अपने भाई कामेश्वर से बात की । और उसे उस काम में लगाया गया । तब मिथिलेश्वर निश्चित हुए । तब से वे जानते थे कि एक से भला दो होता है - वे कहते है - "इसी बिन्दू पर संख्या बल का महत्व मेरी समझ में आया । एक के हारते - थकते दूसरा मोर्चे पर तैनात । यहॉ इस सत्य से अवगत हुआ कि संयुक्त परिवार और संयुक्त समाज की सामुहिक सफलता इस संख्या बल के बिना संभव नही" ।[28] इस तरह वे हमेशा रिश्ते निभाने के लिए तत्पर रहते है ।

मिथिलेश्वर जी अन्य व्यक्तियों से काफी आत्मीय भाव रखते हें - "वह व्यक्ति कोई भी हो । जब उनकी मॉ बीमार हुयी तो वे अस्पताल ले गये । डॉक्टर से सलाह मशवरा कर वापिस आये । जब उनके एक ओर मित्र थे डॉ. के. बी. सहाय जिनसे सलाह लेने के लिए गये तो उन्होंने उनसे मिलकर काफी वार्तालाप किया । और उनकी पत्नी ने भी साहित्यिक चर्चाए की । उन्हें यह बहुत अच्छा लगा । इस मुलाकात के बारे में वे कहते है -"मैं देख रहा था, मेरी उपस्थिति में डॉक्टर साहब ने मरीज देखना भी स्थगित कर रखा था । उनकी व्यस्तता लक्षित कर मैं वहॉ अधिक देर तक नही रूका । मॉ के बारें में आवश्यक परामर्श लेकर चल पडा । इस बार फिर दोनों पति-पत्नी की सह्रदयता और आत्मीयता से प्रभावित बना रहा" ।[29] स्पष्ट है की, मिथिलेश्वर जी कभी जीवन भर इस बात को भूल नही पाये ।

मिथिलेश्वर पीडित, ग्रसित, दलित लोगों के प्रति काफी सहानुभूति रखते हैं । उनके गॉव में बाल विवाह कभी कभी हो जाते थे । उन्होंने देखा है कि उनके गांव में दो विधवा लडकियॉ है । गॉव के समाज ने अभी तक इतनी तरक्की नही की है कि उनका पुर्नविवाह किया जा सकें । वे कहते है - "लेकिन ऐसी सोच के खिलाफ मेरा मन जेहाद

करता रहता । यह धारणा मुझे रूढ , जड और मिथ्या प्रतीत होती रहती । लेकिन चाहते हुए भी उन लडकियों की शादियाँ मैं नही करा सका था । इस स्थिति में उनकी पीडा मेरे मन में धनीभूत होती चली जा रही थी" ।[30] यह कसक उन्होंने पहली घटना को लेकर पूरी की । और अपनी संवेदना उन विधवा लडकियों के प्रति समर्पित की ।

मिथिलेश्वर रूढियों परम्पराओं तथा अंधश्रध्दाओं का हमेशा विरोध करते रहें है । जब उनकी रेणू से शादी हुई तब मुहँ दिखाई की रस्म होती है । और गांव भर महिलाएँ आती है । शादी ब्याह में भी ऐसी कई परम्परा मनाई जाती है । मुँह दिखाई के समय कोई नही सोचता की उसने खाना खाया या नही । वे निरंतर आते और मिलते रहते हैं । इस संदर्भ में वे स्वंय लिखते है - "यह तो मुँह दिखाई के नामपर नयी आयी दूल्हन को परेशान करना है । समय कुसमय का कोई ख्याल नही । गॅवई समाज में समय असमय पर विचार कर लोग कहॉ चलते है ? । अपने घर से फुर्सत पाते ही महिलाए चल देती है । घरेलू कामों के अतिरिक्त वे तो खाली ही रहती है । इसी बहाने दूसरे तिसरे घरों में घूमने का अवसर भी पाती है । बहू देखने के नाम पर बहू के घर से आयी मिठाई भी खाती है" ।[31] उसी प्रकार जब उन्होंने नया मकान बनवाया तो गृहप्रवेश की बारी आयी । तब उन्होंने उस अनुष्ठान का भी जमकर विरोध किया । वे इस तरह के कर्मकाडों से दूर रहना चाहते थे । मिथिलेश्वर जी इस बारे में कहते है - "लेकिन मेरा विश्वास ऐसे परेशानी भरे कर्मकाडों में नही था । कुछ लोगों के यहॉ ऐसे कर्मकांड मैंने देख थे । उनमें कई स्थानों की मिट्टी तथा कई स्थानों के जल मॅगवाने के साथ साथ पुरोहितों के आदेशानुसार कर्मकांड की जटिल और उबाऊ प्रक्रियाओं से गुजरना होता था । मैंने मन ही मन तय कर लिया था यह सब मुझे नही करना" ।[32] इससे स्पष्ट होता हैं कि मिथिलेश्वर जी इन सब पुरानी परम्पराओं को त्यागना चाहते हैं ।

मिथिलेश्वर कभी अपनी जिम्मेदारी से भागे नहीं । घर परिवार की देखभाल उन्होंने अच्छी तरह से की । पिताजी की बिमारी के समय वे ही घरपर अकेले रहे थे । उस समय उन्होंने पूरी जिम्मेदारी अपने कंधे पर ली और उसे पूरी सेवा भाव से निभाई । उसी तरह मॉ की बिमारी के समय भी उसकी पूरी सेवा की । उन्हें मुक्तिबोध पुरस्कार की घोषणा हुयी और वे उस कार्यक्रम में जाना चाहते थे लेकिन मॉ की बिमारी के कारण जा न सके । और उसे डाक से प्राप्त किया । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर अपनी जिम्मेदारी को बखुबी निभाते थे ।

मिथिलेश्वर जी का व्यक्तित्व बहु आयामी और सहृदय व्यक्ति के रूप में जाना जाता हैं । वे हर कार्य मेहनत और बडी लगन से करते है । आम आदमी के प्रति उन्हें अपार स्नेह है । दया, क्षमा उनकें दिलमें कूट कूटकर भरी है । ऐसे भावपूर्ण व्यक्ति ने जीवन भर अध्ययन के अलावा साहित्य की भी सेवा की हैं । उनके साहित्यिक कृतित्व के पहलु इस प्रकार है ।

कृतित्व:

मिथिलेश्वर जी महाविद्यालयीन जीवन से साहित्य की ओर मुडे । तब से साहित्य सृजन में लिप्त है । उनके मित्र रामायण ने उनकी सहपाठी रेणु के बारें में बात की तो रेणु उनके दिल में घर कर बैठी । क्योंकि तब प्रेम और सहजीवन के बारें में मिथिलेश्वर कुछ भी नही जानते थे । वे कहते हैं - "मेरे साथ यह विचित्र स्थिति थी कि, मेरे टोला-पडोस की लडकियाँ या तो उम्र में मुझसे बडी थी या फिर काफी छोटी । इस दृष्टि से मेरा परिचय और माहौल किसी लडकी से प्रेम करने लायक था ही नही । इस तरह के रिश्ते नाते भी नहीं थे । इसका अवसर भी मुझे कभी नही मिला । साथ ही मेरी प्रकृति और परिस्थिति भी ऐसी नहीं रही । प्रेमी दृष्टि से मेरा प्रारंभिक जीवन बंजर ही रहा । शायद यही वजह है कि, जिस उम्र में लोग अपनी शुरूआत कविताओं से करते हैं, मैने कहानी और उपन्यास से की" ।[33] किन्तू मेरा मानना है कि, लेखकीय प्रतिभा मनुष्य में पहले से होती है । मिथिलेश्वर जी भी यही मानते है कि उनमें लेखन के बीज मैट्रिक से ही बोये गए थे । वे आने लेखन के संदर्भ में कहते हैं - "मेरे अंदर कथा की पचखियॉ ऐसे फूटने लगी कि मैं कापी पर कापी करने लगा । फिर किसी गोपन रहस्य की भाँति दालान के अपने एकान्त कमरे में दोस्तों को सुनाता । उन्हें मेरा यह कार्य अजुबे से भरा लगता, क्योंकि मुझसे पहले मेरे गांव में कभी कोई लेखक नही हुआ था । फिर भी अपनी उन पांडुलिपियों को मैं सहेजकर रखता जैसे वे अमूल्य निधि हो" ।[34] यही से मिथिलेश्वर जी के लेखन की शुरूवात हुयी और उनकी पहली कहानी के संदर्भ में भी विवाद हैं । इस संदर्भ में वर्षा मिश्र कहती है- "आपकी प्रथम प्रकाशित कहानी 'अनुभवहीन' है जो सारिका के नवलेखन विशेषांक में मई 1973 में प्रकाश में आयी थी" ।[35] लेकिन इस बात से मिथिलेश्वर जी भी सहमत नही हैं । क्योंकि उनकी पहली रचना महाविद्यालयीन पत्रिका 'अभियान' में छपी थी । जिसका नाम पंद्रह मई और सात अगस्त है । यह कहानी उनके अपने जीवन और उनके पिताजी की मृत्यु की है । इस

संस्मरणनुमा कहानी से लेखक प्रकाश में आये । इस बारें वे स्वंय कहते हैं - "मैं महसूस कर रहा था , मेरी उस रचना की चर्चा ने अब मुझे सामान्य से विशिष्ट बना दिया था । लॉज के मेरे साथी भी मुझे खास नजरों से देखने लगे । मेरे पिताजी के निधन का वह पूरा प्रसंग अब सबकी नजरों के सामने आ गया । उस समय आज की तरह मीडिया की उपलब्धता सर्वत्र नही थी । इस संबंध में 'अभियान' के उस अंक ने उस सूचना की भी क्षतिपूर्ती का दूर दूर तक उपस्थित उनके शिष्यों और परिचितों को अवगत कर दिया । 'अभियान' की मेरी वह रचना माँ स्वंय तीन चार बार पढ चुकी थी और हर बार बिना रोये नहीं रह पाती । उस समय वह कही भी प्रकाशित होनेवाली मेरी पहली रचना थी" ।[36] मिथिलेश्वर जी की यह कहानी भले ही पहली रचना हो लेकिन वह कही भी संकलित नही कर पाये । वे बताते है - "चाहते हुए भी पहली रचना के नाम पर उस रचना को अपने किसी संकलन में सम्मिलित नही कर सका, क्योंकि प्रकाशन की दृष्टि से वह मेरी पहली रचना अवश्य थी, लेकिन रचना की बुनियादी शर्तो पर पहली रचना नही बन पायी थी" ।[37] स्पष्ट है कि इसके बाद मिथिलेश्वर उपन्यासों और कहानियों का सृजन करते रहे और आज भी कर रहे है । उनके लिखे हुए साहित्य का संक्षिप्त परिचय देना अनुचित नही होगा

कहानी साहित्य :

मिथिलेश्वर ग्रामीण परिवेश तथा शहरी परिवेश में रह रहें है । स्पष्ट है कि यह दोनों परिवेश उनके साहित्य सृजन में दिखाई देता है । मिथिलेश्वर का पहला कहानी संग्रह 1976 में प्रकाशित हुआ है ।

बाबूजी :-

यह कहानी संग्रह प्रस्तुत लेखक का पहला संग्रह है ।जिनमें निम्नलिखित कहानियाँ सम्मिलित की गई है अनुभवहीन, नपुंसक समझौते, एक और हत्या, बीच रास्ते में, विरासत में, शेष जिन्दगी, विग्रह बाबू संगीता बॅनर्जी, पहली घटना आदि ।

इस कहानी संग्रह में मुख्य रूपसे बेरोजगारी, ग्रामीणों की समस्या, ग्रामीण नारी, विधवा विवाह तथा उसकी समस्याएँ, आर्थिक दरिद्रता, नर नारी के संबंध, आधुनिकता की दरकार आदि समस्याओं को मिथिलेश्वर जीने उकेरने की कोशिश की है ।

बन्द रास्तों के बीच :-

यह कहानी संग्रह सन 1978 में प्रकाशित किया गया है । इन संग्रह में भी दस कहानियॉ संकलित की गई है नरेश बहू , सरे आम, पत्थर की लकीर, बंद रास्तों के बीच, न जानते हुए भी , शरीर से लाश तक, रात अभी बाकी है, पहली हॅसी , बीच का आदमी ।

'नरेश बहू' नारी व्यथा की कहानी है । 'सरे आम' कहानी देश के लोगों में असुरक्षितता की भावना को बढावा देती है । 'पत्थर की लकीर' में जीवन क्या है ? इसे समझाने का प्रयास है । 'बंद रास्तों के बीच' में गॉव और मजदूर को अभिव्यक्त किया गया है । 'न चाहते हुए भी' प्रस्तुत कहानी में भालू नचाकर जीवन व्यतीत करनेवाले लोगों का चित्रण हुआ है । 'शरीर से लाश तक' आर्थिकता के कारण नारी को कैसे शोषित किया जाता है । इसका विवरण दिया गया है । 'रात अभी बाकी है' मे गरीब किसान और उसका परिवार आर्थिकता के कारण बिखर जाता है इसका चित्रण मिलता है । 'पहली हॅसी' कहानी पढे लिखे युवक की बेरोजगारी की व्यथा कहती है 'बीच का आदमी' कहानी व्यक्तिवादी मनोवृत्ती का चित्रण करती है ।

दूसरा महाभारत :-

यह कहानी संग्रह 1979 में मिथिलेश्वर जी ने प्रकाशित किया है । इस संग्रह में निम्नलिखित कहानियाँ संकलित हैं - अभी भी, बीजारोपन, यह तो होना ही था, उम्र कैद , अपनी अपनी जगह, देर तक, मोल ली हुई मुसीबत, वे जब गॉव आये, दूसरा महाभारत ।

अंध विश्वास के कारण एक गरीब व्यक्ति का जीवन कैसे खत्म हो जाता है का चित्रण 'अभी भी' कहानी में वर्णित है । 'बीजारोपण' कहानी अंधविश्वास के कारण पत्नी के मरने के बाद लोग (समाज) धरीछन को घर से बेघर कर देने की व्यथा बयान करती है । 'यह तो होना ही था' कहानी में गुंडागर्दी का विरोध करने की समस्या चित्रित है । 'उम्रकैद' एक डकैत की कहानी है । लेकिन वह सोचता हैं कि, मैं तो बहुत छोटा चोर हूॅ । इस देश में बडे बडे चोर है पुलिस उन्हें क्यों नही पकडती । 'अपनी अपनी जगह' कहानी दो पीढियों के संघर्ष की कहानी है । 'देर तक' में मनुष्य गुलामी से मुक्ति चाहता है लेकिन चाहकर भी वह मुक्त न होने की कहानी है । 'मोल की हुई

मुसीबत' में गरीबी का पक्ष लेना भी कितना महंगा पडता है इसे प्रस्तुत कहानी बयान करती है । 'वे जब गाँव आये' में गाँवों की दुर्दशा पर विचार किया हैं । 'दूसरा महाभारत' प्रस्तुत कहानी किसान भाई और शहर में रहनेवाले भाई के जीवन का महाभारत दर्शाती हैं ।

मेघना का निर्णय :-

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 1980 में हुआ है । जिसमें निम्नाकिंत कहानियाँ संग्रहित की गई हैं - 'मेघना का निर्णय' जिन्दगी का एक दिन, छोटे शहर के लोग , कसूस , बहादूर, रात, सवाल आदि । 'मेघना का निर्णय' की कहानियो के बारें में लेखक कहते है- "माँ के व्दारा बचपन में सुनाई जानेवाली कहानियों को प्रेरणादायी माना है, लेकिन अपने रचना कर्म का उद्देश्य भी स्पष्ट किया है । शोषण , अन्याय, अपमान, असमानता, अंधविश्वास और सर्वग्रासी भ्रष्टाचार के खिलाफ जनमत तैयार करना ही वे कहानी लेखन का लक्ष्य मानते है" ।[38] 'मेघना का निर्णय' में मजदूरों के शोषण को रेखाकिंत किया गया है । 'जिन्दगी का एक दिन' कहानी में आम आदमी की दिनचर्या को चित्रित किया है । 'छोटे शहर के लोग' में ग्रामीण क्षेत्र की मानसिकता को वर्ण्य विषय बनाया है । 'कसूर' में बेरोजगारी की समस्या वर्णित है । 'रात' नारी शोषण की कहानी है ।

तिरिया जनम :

यह संग्रह 1993 में प्रकाशित है । इस संग्रह में निम्न कहानियाँ सम्मिलित की गई है - सावित्री दीदी, तिरिया जनम, पुल पर, रघुनाथ टोला, हत्यारों की वापसी, अपने लोग, एक गॉव सुखाग्रस्त तथा माधवी की बेहोशी ।

'सावित्री दीदी' कहानी में ग्रामीण लडकी की मृत्यु पर शोक न जताने की कहानी है । 'तिरिया जनम' में ग्रामीण महिला शादी के बाद पति पर कैसे निर्भर रहती है इसका चित्रण है । 'पुल घर' बेरोजगार युवक कैसे चोरों डकेंतों के साथ रहने के लिए कैसे मजबूर होता है का वर्णन है । हत्यारों की वापसी, रघुलाल टोला, अपने लोग इन तीनों कहानियों में दस्यु जीवन की त्रासदी वर्णित है । 'हत्यारों की वापसी' में लेखक देखना चाहते है कि सामान्य देहाती मनुष्य हत्यारा कैसे बन जाता है । 'माधव की

बेहोशी' कहानी बिके हुए कलाकार की व्यथा है । 'एक गाँव सुखाग्रस्त' कहानी के नामकरण से ही पता चलता है कि इसमें सुखाग्रस्त गांव का वर्णन हे ।

हरिहर काका-

संग्रह 1983 में प्रकाशित है । इस संग्रह में करीब ग्यारह कहानियॉ संकलित की गई है । जो इस प्रकार हैं जहाज का पंछी, एक सडक और तीन सौदेबाज , उसकी जिंदगी, घूस देने की कला, गबूदन, परिक्षा और विश्वविद्यालय , शिष्टाचार की समझ, जंगल होते शहर, हरिहर काका, तब तक चर्चाओं से परें आदि । डॉ. वर्षा मिश्र इस संग्रह के संदर्भ में लिखती है - "कुल मिलाकर हरिहर काका संग्रह की कहानियों में गाव और नगर दोनों के बदलते स्वरूप एवं वहॉ के जंगलीपन क्रुरता और अमानवीयता का चित्रण है । हर तरफ आदमी असहाय और लाचार है । अपराध , हिंसा और अनाचार का तांडव नृत्य हो रहा है । प्रतिशोध करने की शक्ति किसी में नहीं है । जिनके ह्रदय में दया, करूणा और विवेक हैं वे असहाय है और अन्ततः मानसिक संतुलन गवा देने के लिए अभिशिफ्त है ।

नवनिर्माण के नामपर भ्रष्टाचार की जो विधैली फसल बोई जा रही है , उसका परिणाम सभी को भुगतना पडेगा । विश्व विद्यालय परिसर में व्याप्त भ्रष्ट तरीकों एवं डिग्री पाने के हथकंडों का चित्रण भी लेखन ने सफलता पूर्वक किया है" ।[39] इसी कथासूत्र को पकडकर मिथिलेश्वर जी ने इस संग्रह की रचना की है ।

एक में अनेक :-

यह संग्रह 1987 में संग्रहीत है । इनमें जा कहानियाँ संकलित है वह निम्न है । कितने भृगृनाथ, जी का जंजाल, मतदाता केदार शर्मा , एक में अनेक , रिश्ते , हवा का असर, थोडी देर बाद, अधिकार संपन्न, श्री सीमेन्ट स्टोर, कितनी दुनिया आदि ।

'एक में अनेक' कहानी नौकर मालिक के क्रुर रिश्ते की कहानी है । 'हवा का असर' सांप्रदायिकता को प्रकट करती है । 'अधिकार संपन्न' कहानी वर्ण व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाती है । 'श्री सिमेन्ट स्टोर' मजदूरों का शाषण की कहानी है । 'कितने भृगृनाथ' ग्रामीण संस्कृति को दर्शाती है । 'जी का जंजाल' में माता पुत्रों के तनाव की कहानी है । 'मतदाता केदार शर्मा ' चुनावों की समस्याओं पर लिखी कहानी है ।

एक थे प्रो. बी. लाल

1993 में प्रकाशित रचना है । जिसमें इन कहानियों को स्थान दिया गया है । गांव का मधेसर, सीमाएँ , सरजू ब्रम्ह के गॉव में, अपने घर से लापता, मृत्यु संकट , और एक थे प्रो बी लाल ।

'गांव का मधेसर' कहानी गांवों के बदलते रूप की कहानी है । 'सीमाएँ' मध्यवर्ग की मर्यादाओं को दर्शाती है । 'अपने घर से' में परिक्षाओं में नकल करने की समस्या का चित्रण करती है । 'लापता' सैनिक की दशा का चित्रण करती है । 'मृत्यु संकट' कहानी मौत की व्यथा बयान करती है । और एक थे प्रो. बी लाल कहानी लेखक ने अपने ही पिता के स्वभाव गुणों का बखान है ।

भोर होने से पहले :-

यह कहानी संग्रह मिथिलेश्वर ने 1994 में प्रकाशित कराया था । इसमें करीब 15 कहानियॉ संग्रहित की है । वह कहानियॉ हैं - भोर होने से पहले, वैतरणी भौजी, अध्यापन , आनन्द मोहन शर्मा बेहोश है, रास्ते किर्तनिया बाबा, सो दुविधा पारस नहि जानत तीन यार, एक और मृत्युंजय , डॉ सेन का सपना, गंगिया फुआ, सिम्बोंगा की वापसी, नये दम्पति , एक गाव की अन्तकथा , तथा एक रात एकायक आदि ।

'भोर होने से पहले' में नारी की दुर्गति को दर्शाया गया है । 'वैतरणी भौजी' में पुरूषी मानसिकता की शिकार नारी का चित्रण है । 'अध्यापन' शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगानेवाली कहानी है । इस बारें में लेखक स्वयं कहते हैं - "एक कॉलेज शिक्षक के जिम्मे सप्ताह में सिर्फ चार या पाच क्लास ही तो होते है और प्रत्येक क्लास मात्र पचास मिनट का । लेकिन इस कार्य के प्रति भी जी चुराते हुए गैर जिम्मेदार हुआ जाये , यह उन्हे सरासर अनुचित और अनैतिक लगता है" ।[40] 'आनन्द मोहन शर्मा बेहोश' हैं कहानी संवेदनशील नागरिक की अपने समाज के प्रति आस्था का बयान करती है । 'रास्ते' में अनमेल विवाह को रेखाकिंत किया गया है । 'किर्तनिया बाबा' में गॉव का आदमी शहर में किस प्रकार बैचेन होता है का चित्रण है । 'सो दुविधा पारस नहिं जानत' में राजनीति में दृष्प्रवृत्तियों का प्रवेश होने से क्या दशा होती है इसी का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है ।

'तीन यार' की कहानी अभावग्रस्त मित्रों की कहानी है । 'एक और मृत्युजय' में मृत्यु की सत्यता पर जोर दिया गया है । डॉ सेन का सपना कहानी विनाशकारी बमों को क्षीण करने का सपना है । 'गंगिया फुआ' वैधव्य को झेलती नारी को चित्रित किया हे । 'सिम्बोंगा की वापसी' में वैज्ञानिक तरक्की पहाडी जीवन पर कैसे प्रभाव करती है । इसका वर्णन किया गया है । 'एक गाव की अन्तः कथा' में गांवों में असुविधा के कारण गांव का अंत होते जा रहा है का चित्रण है । 'एक रात यकायक' कहानी डकैती की कहानी है ।

जमुनी :-

यह कहानी संग्रह 2001 में प्रकाशित है । इस संग्रह में छूँछी, विषवृक्ष, सत की सोर पाताल तक, नदी की राह में, जमुनी, सुबह की प्रतिक्षा , भूकंप , प्लेग, दुर्घटना , गूँगा गंगू, बैराडीह की चंद्रावली आदि कहानियॉ संग्रहित है । इस संग्रह की सारी कहानियाँ ग्रामीण क्षेत्र तथा कृषी संम्बंधों पर लिखी है । 'जमुनी' संग्रह में किसानों की जीजीविषा को दर्शाती हैं तथा जीवन में आये संघर्षा के प्रति चेतना जगाने का कार्य करती है ।

चल खुसरों घर अपने :-

यह संग्रह मिथिलेश्वर ने 2000 में प्रकाशित किया है । इसमें ग्यारह कहानियाँ जोडी गई है वो है - चल खुसरों घर अपने, अन्तहीन, प्रेत की जट, सायास, गांव का घर, अजगर करै न चाकरी, नदी किनारे, बारीश की रात, शायद हॉ शायद नही , मनबोध मडआर तथा कन्या योग्य वर । इन कहानियों में आधुनिक संस्कृति और महानगरिय संस्कृति गावों को किस कदर बिगाड रही है इसको वर्णित किया गया है । शहरों में आदमी कैसे एक दूसरे से कटा कटा महसूस करता है । यही बैचेनी अब गांवों में भी महसूस होने लगी है । इस संग्रह की भूमिका में मिथिलेश्वर लिखते है - "चल खुसरों घर अपने की कहानियों में गंवई जीवन और मिट्टी की सुगंध के साथ ही वहॉ कि संघर्ष कामी चेतना और मानवीय जीजीविषा का जीवन्त उदघोष भी है" ।[41] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर की संपूर्ण कहानियॉ गांवों को केंद्रीत कर लिखी गई है । तथा यहॉ की वेदना प्रकट की है । गाव का आदमी शहर जाकर पूरी तरह एकरूप नही हो पाता उसका कैसे मोह भंग होता है । गांवों में रहनेवाली नारी की दशा भी अलग नही है । इनकी कहानियों के संदर्भ में डॉ विवेकीराय लिखते है - उनकी समग्र ग्राम कथाएँ सीधे

सीधे चलते बहुत दूर की संश्लिष्ट स्थितियों की गांठे खोल देती है । सहज माध्यमों से असहज की अभिव्यक्ति ग्राम स्तर पर इतने मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से पहली बार लक्षित हुई है" ।[42]

उपन्यास साहित्य :-

मिथिलेश्वर जीने अब तक छह उपन्यास लिखे है जो इस प्रकार है - झुनियॉ, युध्द स्थल, प्रेम न बाडी उपजे , सुरंग में सुबह, माटी कहे कुमार से आदि ।

झुनिया :-

प्रस्तुत उपन्यास के दो संस्करण 1980 तथा 1982 में प्रकाशित है । यह लघु रूप उपन्यास है । इस उपन्यास में झुनिया नायिका रूप में उभरती है जो हरिहर काका की बेटी है । उसे बचपन में मॉ और भाई त्यागकर चले गए है । जब झुनिया जवान होती है तो कई समस्याएँ भी पैदा होती है । क्योंकि गांव के धनिक उसको पाना चाहते हैं । जैसे हरिहर काका कहते है - "पर क्या करे हरिहर ? टूटी हूई मडई और फूटी हुई हंडिया में कुछ भी छिपाया नही जा सकता । गरीबों की हालत भी ऐसी ही होती है ।[43] स्पष्ट है कि गाव में ग्रामीण मजदूर तथा नारी का शोषण आज भी होता है । प्रस्तुत कथा में राणाबहादूर सिंह , हरनाम सिंह, सोमारू निखिल, जोगिन्दर आदि चरित्रों के माध्यम से ग्रामीण व्यवस्था का उद्‌घाटन हुआ है ।

युध्द स्थल :-

1981 में यह उपन्यास मिथिलेश्वरजी ने प्रकाशित किया है । यह रचना अपने माता पिता तथा गुरू को अर्पित की है । उपन्यास की भूमिका में इस रचना के उद्देश्य पर मिथिलेश्वर कहते है - जहॉ तक मै समझता हूँ, लेखक का मन किसी कुँए की तरह गहरा होता है । उसके अतीत के अनुभव उस गहराई में किसी महत्वपूर्ण निधि की तरह जज्ब होते है । लेकिन जज्ब होकर वे समाप्त नही होते । अवसर पाते ही दूध में छिपे मक्खन की भाँति निकल आते है । लेखक जब भी सृजन के लिए कलम उठाता है , वे अनुभव न सिर्फ उसे अनुप्रेरित और अनुप्राणित करते है, बल्कि उसकी रचना को विश्वसनीय , व्यापक और जीवंत बनाते है यहॉ अनुभव से मेरा अभिप्राय सिर्फ भोगे हुए यथार्थ से नही , लेखक की अनुभूतियों की सूक्ष्म पकड, उसकी बारीक संवेदनशीलता और उसके दृष्टिकोन की दूरदर्शिता से भी है" ।[44] इससे स्पष्ट होता है कि लेखक के साहित्य सृजन के मापदंड क्या है । और वे अपनी रचना को अंतरात्मा से जन्म देते है ।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रामशरण की विधवा बहू है । हमारे गांव आज भी अशिक्षा के कारण अंधविश्वास , भूत प्रेत ,ओझा के शिकार होते है । उसी प्रकार भूत और डायन के खौफ से नारियों पर अत्याचार किया जाता है । तथा ओझाओं व्दारा भी स्त्रियों का शोषण होता है । लेकिन समाज उसे जायज ठहराता है । इसी बिन्दू पर प्रस्तुत उपन्यास की कथा चित्रित की गई है ।

प्रेम न बाडी उपजे :-

यह उपन्यास तीन संस्करणों में अब तक प्रकाशित हो चुका है । प्रस्तुत रचना प्रेम जैसे सर्व परिचित विषय को लेकर लिखी गई है । लेकिन फिर इसमें गहरी मानवीय संवेदना को उद्घाटित किया गया है । लेखक स्वयं अपने अनुभव बयान करते है प्रेम न बाडी उपजे रचते हुए मैंने महसूस किया है कि व्यवहार के धरातल पर ये बातें सही नही है । यह बात हममें से किसी से छिपी नही है कि नौकर के साथ, दर्जी के साथ, बंजोर (नेटुये) के साथ, या टयूशन पढाने वाले मास्टर के साथ भागी पृथक वर्ग और पृथक संस्कार की लडकी, उसके साथ एडजस्ट नही कर पाती है । चन्द दिनों के बाद ही उनके संस्कार और वर्गीय चरित्र एक दूसरे से टकराने लगते है । प्रेम के आवेश में अपने मुहल्ले में बाहर से भाग कर आयी एक ऐसी लडकी को अपने प्रेमी पति से रोज पिटते देख , मैं आहत हो जाता हूँ । काश ? यह लडकी भागने से पूर्व प्रेम के यथार्थ से अवगत होती" ।[45] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर ने प्रेम को सच्चाई के साथ अपनाने का संदेश दिया है । और प्रेम दो आत्माओं का मिलन होना चाहिए को अभिव्यक्त किया है । मिथिलेश्वर अपने बारे में हमेशा कहते है कि मैंने कभी प्रेम नही किया ना प्रेम करने को वक्त मिला । वे कहते है - "मैंने कभी प्रेम किया नही या दूसरे शब्दों में यूँ कहूँ कि कभी किसी लडकी से मुझे प्रेम हुआ ही नही । इसके पीछे ग्रामीण समाज के तत्कालीन उसूलों के तहत छोटी उम्र में ही मेरी शाी का हो जाना रहा है । प्रेम करने या होनेवाली उम्र में अभी मैं पहुँचने ही वाला था कि अपने ग्रामीण समाज व्दारा दाम्पत्य सूत्र में बांध दिया गया । यहॉ बेझिझक मैं यह स्वीकार करना चाहूँगा कि रेणू ही मेरी पत्नी, प्रेमिका और सहायिका तीनों है" ।[46] निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि उपन्यास का नायक रूपेश उच्चवर्गीय और मोना मध्यवर्ग की लडकी का प्यार आखिरी मंजिल पर खरा नही उतरता और वे दोनों अलग अलग हो जाते है । यही प्रेम न बाडी उपजे का कथा सार है ।

सुरंग में सुबह :-

सुरंग में सुबह के अब तक दो संस्करण निकल चुके है । यह रचना राजनीति पर आधारित है । वर्तमान राजनीति की भ्रष्ट व्यवस्था और आम आदमी की अपेक्षाएँ तथा उसकी छटपटाहट को जीवंत दस्तावेज को रेखाकिंत किया है । राजनीति में ऊचे पदों को पाने के खातिर नारी का दुरूपयोग को मुख्य विषय बनाकर राजनेताओ की पाखंडी प्रवृत्ति और सामान्य वर्ग के साथ छलावा को अंकित किया हे । सुरंग में सुबह के प्लैप पृष्ठ पर प्रकाशक लिखते है - "वस्तुतः इस उपन्यास में मिथिलेश्वर जहॉ भारतीय राजनीति के तलघर की यात्रा करते है वही सामाजिक बदलाव के लिए छटपटाते सामान्य जनता की आकांक्षाओं, उम्मीदों और अन्तर्विरोधों को भी सफलता पूर्वक प्रस्तुत करते है" ।[47]

माटी कहे कुम्हार से :-

यह उपन्यास भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली व्दारा 2006 में प्रकाशित है । यह कृति झोपडपट्टी में रहनेवाले गरीब, निर्धन लोगों की जीवन गाथा है । इस रचना के प्लैप पृष्ठ पर लिखा गया है- "माटी कहे कुम्हार से झोपडपट्टियों में हाशिए के जीवन की तल्ख सच्चाई से प्रारंभ यह उपन्यास इक्कीसवी सदी के भारतीय गावों की बेबाक पडताल करते हुए शहर में पहुॅच शहरी जीवन एवं शहरी समाज की पर्ते उधेड उनकी प्रखर अन्तरकथा प्रस्तुत करता है । और फिर यहॉ के जीवन एवं समाज की जिम्मेदार भारतीय लोकतंत्र की राजनीति का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देता है । इस रूप में यह उपन्यास भारतीय जीवन समाज एवं राजनीति की महागाथा बन जाता है ।[48] प्रस्तुत उपन्यास की नायिका मुनिला का चरित्र काफी प्रभावशाली बन पडा है । क्योकि समय पर विजय पाती है । और नारी समाज के लिए एक सबक देती है । उपन्यास में लोक कथा और लोक जीवन को किस्सागोई के माध्यम से काफी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया गया है ।

अन्य साहित्य :-

मिथिलेश्वरजीने उपन्यास कहानी से हटकर 'साहित्य की सामाजिकता' नामक आलोचना ग्रंथ लिखा है । तथा 'मेरी पहली रचना' भोजपूरी लोककथाएँ आदि किताबों का प्रकाशन कराया है । उस रात की बात, गांव के लोग, एक था पंकज नाम किताबें

बाल साहित्य के लिए लिखी है । उसी प्रकार 'मित्र' साहित्य पत्रिका का समुचित संपादन भी करते रहे है ।

अपने साहित्य कर्म के लिए मिथिलेश्वरजी को अनेकों सम्मानों से पुरस्कृत किया गया है । जैसे अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार 1976 । यशपाल पुरस्कार 1981-82 में । अमृत पुरस्कार 1983 में । साहित्य मार्तड पुरस्कार सन 1994 में दिया गया है । अखिल भारतीय विरसिंह पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर ग्रामीण परिवेश में पैदा होकर गॉव में ही प्रारंकि शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा मगध विश्वविद्यालय से हासिल कर हिन्दी विभाग के प्रोफेसर बन । तथा नौकरी करते करते खेती बारी भी की और गांव से हमेशा जुडे रहें । मिथिलेश्वर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है । गरीब वर्ग से हमेशा आस्था रखनेवाले तथा उनकी मदद के लिए तत्पर रहनेवाले व्यक्ति है । साहित्य सृजन महाविद्यालयीन शिक्षा के दौरान शुरू हुआ जो अब तक अनवरत रूप से चल रहा है । अत: मिथिलेश्वर हिन्दी साहित्य जगत के मौल्यवान हीरा के रूप में ख्यातिप्राप्त कर चुके है ।

संदर्भ

1. अपनी बात-बन्द रास्तों की बीच - पृ -10-प्र.सं-1978
2. मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी - पृ 95
3. वही - पृ - 5
4. वही पृ - 96
5. नेपथ्य की बत - एक थे प्रो. बी. लाल- पृ 8
6. वही पृ 8
7. मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी - पृ - 38
8. डॉ वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ - पृ - 39
9. मिथिलेश्वर - एक थे प्रो. बी लाल - नेपथ्य की बात - पृ - 29
10. मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी - पृ 33-34
11. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 69-70
12. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 28
13. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 14
14. मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी - पृ -199

15. मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी - पृ -504
16. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 12
17. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 101
18. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 118
19. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 140
20. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 20
21. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 150
22. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 155
23. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 196
24. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 248
25. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 327
26. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 295
27. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 464
28. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 289
29. मिथिलेश्वर- पानी बीच मीन पियासी - पृ - 264
30. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 258
31. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 186
32. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ इ 317
33. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 150
34. मिथिलेश्वर-पानी बीच मीन पियासी - पृ - 137
35. वर्षा मिश्र- मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ - पृ - 39
36. मिथिलेश्वर पानी बीच मीन पियासी - पृ - 145
37. मिथिलेश्वर मेघना का निर्णय - भूमिका पृष्ठ से
38. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय - भूमिका से
39) डॉ. वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ - पृ 71-72
40) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले पृ 70
41) मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर अपने की-भूमिका से
42) डॉ विवेकी राय - माटी की महक धरती गांव की - भूमिका से
43) मिथिलेश्वर - झुनिया- पृ -10

44) मिथिलेश्वर - युध्दस्थल - पृ - 7

45) मिथिलेश्वर-प्रेम न बाडी उपजे- भूमिका से- पृ- 10

46) मिथिलेश्वर : प्रेम न बाडी उपजे पृ 8 (भूमिका से)

47) मिथिलेश्वर : सुरग में सुबह - प्लैप पृ से

48) मिथिलेश्वर - माटी कहे कुम्हार से - प्लैप पृ से ।

व्दितिय अध्याय

हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन एवं मिथिलेश्वर

भारत की 70 प्रतिशत जनता गॉवों में रहती है । गांवों में ही भारत की आत्मा बसती है । क्योंकि गांव ही समूचे भारतीय समाज को अनाज खिलाता है । किसान वर्ग अपने दुखों को भूलाकर दूसरों को सुख देता है लेकिन कृषक की पीडा कोई समझने के लिए तैयार नही हैं । आज पूरे देश में किसान कर्ज बाजारी के कारण आत्महत्याएँ कर रहा है । सरकार जो कोशिश कर रही है वह कारगर साबित नही हो रही है । किसान के सामने अनेक समस्याएँ है जैसे समय पर बरसात न होना , बीजों का नकली होना, अति बरसात होना, बिजली का समय पर न मिलना, सरकारी बॅकों व्दारा ऋण न देना, ऋण न चुकाने के करण जमीन पर कब्जा करना या जब्ती करना, परिवार का बोझ बढना, मंहगाई, भ्रष्टाचार, कृषि बाजारों में उचित मूल्य प्राप्त न होना, फसल पर किटो का आक्रमण आदि कई कारणों से किसान बर्बाद हो रहा है । यह आज की स्थिती नही है । वर्षो से किसान के साथ यही हो रहा है । इसके पूर्व भी हम देखेगें कि किसानों की हालत खस्ताहाल थी । अग्रेजों के जमाने मे भी यही हाल था । इस संदर्भ में वर्षा मिश्र लिखती है - "उनके आगमन के बाद यहॉ पूँजीवाद पनपा । ग्रामीण किसान इन दो व्यवस्थाओं के बीच पिसकर लहूलूहान हो गया । सन 1793 में स्थायी बंदोबस्त होने से भूमि व्यवस्था मे सुधार हुआ । लगान और भूमि का स्वामित्व निश्चित हो गया । किन्तु इससे शासकों को जितना लाभ हुआ उतना किसानों को नही । सरकार और किसानों के बीच लगान वसूल करनेवाला जमींदार मध्यस्थ बन गया । लगान का भुगतान करने और अपनी जरूरत की वस्तुए खरीदने के लिए मजबूर होना पडा । वह विपन्न और सर्वहारा बन गया । पूँजीवाद से वर्ग चेतना का उदय हुआ किन्तु यह आँधी गांवों तक पहुँचने नही पाई ।[1] स्पष्ट है कि किसान अंग्रेजों के काल में भी दुखी था और आज भी उसकी हालत में कोई जादा सुधार नही हुआ है । आजादी के बाद भी भारतीय समाज का मोहभंग हुआ क्यों-कि इन्होंने सरकार और आजादी को जिस दृष्टि से देखा था । वह आशाएँ पूरी तरही से खारिज हो गई । किसान भी इसमें जकड गया । पूँजीवादी व्यवस्था और सांमती प्रवृत्ती इस बीच जोर पकडने लगी । जिससे कृषक और पिसता गया । इस बारें में विवेकीराय लिखते है - "नयी साम्यवादी और समाजवादी हवाएँ भी पहुँची और जमीदार किसान संघर्ष के आयाम भी उभरे परंतु जातिवाद के लौह-गढ में

आरक्षित गांव , पंगु नैतिकता , मृत आध्यात्मिकता और अंधविश्वास की सदृढ वायवी श्रृंखलाओं में जकडे गांव , वर्ण, परिवार और समाज के अलिखित कानूनों से अधिक प्रभावित प्रतिष्ठा पर प्राण देनेवाले परम्परित गांव, रामायण, महाभारत, भक्तमाल , अर्जून , गीता , ब्रजविलास और हनुमान चालिसा की कथासुत्र भूमियों मे विचरण शील भोले - भावूक गांव नयी अंग्रेजी शिक्षा, नयी सभ्यता, विविध वाद, वैज्ञानिक उपलब्धियों , आंदोलन , विचार, नेतृत्व , संघर्ष और उथल पुथल में बहुत पिछड गया । मगर उनमें आमूल परिवर्तन इस कारण से नही दिख पडा कि उनकी मूल आजीविका कृषि के संदर्भ में, कृषि क्षेत्रों के संदर्भ में कोई बदलाव तब तक नही आया" ।[2] अत: ग्रामीण क्षेत्र की यह हालत आज भी वर्तमान है । गावों में आज भी जातियता, वर्ग व्यवस्था, मजदूरों का शोषण, नारी शोषण दलितों, पिछडों का शोषण हो रहा है । इसके बावजूद गांवों में आज भी जीन्दगी की बुनियाद बसती है । तथा यहॉ के विरोधाभासों के बीच भी यह लोग एक साथ विभिन्न त्यौहार , पर्व मेले, लोकसंगीत आदि में खुशियॉ मनाते है । इसी का चित्रण हिन्दी साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों व्दारा हुआ है । उन्होंने विभिन्न अंचलों, क्षेत्रों , पहाडें तथा जन-जाति का क्षेत्रीयता के आधार पर अपनी लेखनी व्दारा वर्णित कथा यात्रा की है ।

प्रारंभिक दौरे में मनुष्य कथा व्दारा अपना मनोरंजन करता होगा । क्योंकि कथा-गोष्ठियों व्दारा मनुष्य ने अपना जीवन रोचक बनाया उसी कथा गोष्ठीयों व्दारा मनुष्य ने जीवन की कहानियॉं गुंफित की है । मनुष्य ने इसी प्रवृत्ति के आधारपर अपना इतिहास रचा होगा ऐसा लगता है । लेकिन इसकी पहल किसने की यह जिज्ञासा का विषय है । इस बारें में सुदर्शन लिखते है - "संम्भवत: प्रथम मानव ने जब पहली बार बोलना शुरू किया अपनी ज्ञान की ऑखे खोली और सूरज के जगमगाते प्रकाश ने सृष्टि के विराट अदभूत दृश्य को लोभ से देखा और उसे अपने मनोमन्दिर की चित्रशाला में संजोकर रखा तभी आश्चर्यमय सृष्टि के उन प्रथम दिनों में ही हजारों, लाखों कहानियों का सृजन हो चुका होगा ।[3] स्पष्ट है कि कहानी की कहानी प्राचीन काल से चली आ रही है । जो उपनिषद तथा धर्मग्रंथों में भी पायी जाती है ।

हिन्दी कथा साहित्य की यात्रा भी काफी लंबी है । जिनमें विभिन्न कथा यात्रियों का योगदान है । हर व्यक्ति की अपनी सोच , बुध्दि और तर्कशक्ती अलग अलग होती है । उदाहरण के रूप में हम प्रेमचंद और अज्ञेय को ले सकते है । उन्होंने अपने तजुरबे और ज्ञान संस्कार के आधार पर अपनी कलम चलाई है । इस बारें में- "डॉ सुनिता

पाटील लिखती है हमारे कहानीकारो व उपन्यासकारों ने अपने कथा साहित्य में अपनी अपनी रूचि और दृष्टि के अनुसार इद्र धनुषी चित्र अंकित किए है । किसी ने कल्पना में उडान भरी है , तो किसी ने यथार्थ घरातल पर उतरकर मानव की विभिन्न समस्याओं से रूबरू करवाया है । कई कथाकारों ने नगरों की चकाचौध , उनकी गलियों और सडकों पर लिखा है, तो कुछ ऐसे कथाकार भी हुए है, जिन्होंने ग्राम्यांचल के खेत, खलिहान, नदी, तालाब, पर्वत, जंगल और परिवेश से जुडे हुए प्राणियों के साथ अपनी संवेदना जताई है ।[4] याने हर साहित्यकार की अपनी अपनी धाराएँ है । जिन्हें पकडकर हर व्यक्ति आगे बढा है । इससे पूर्व भी हमने लिखा है कि ग्रामीण जीवन को हमने इस कार्य का विषय बनाया है इसलिए हम केवल ग्रामीण जीवन चल को आधार बनाकर लिखे गए कथा साहित्य को हमारे परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा करेंगे ।

हिन्दी कथा यात्रा को संपूर्ण ग्रामीण परिवेश में समेटना है तो हमें प्रेमचंद की ही याद आती है । किन्तु प्रेमचंद के पूर्व में भी यह परम्परा रही है । मूल रूपसे हिन्दी कथा साहित्य का उदभव 19 वी शती के रूप में माना जाता है । इस समय के साहित्य का उद्देश्य था मनोरंजन उपदेश धर्म प्रचार , शिक्षा, साहित्य के प्रति रूचि बढाना आदि । इस समय परीक्षागुरू लाला श्रीनिवासदास , रहस्य प कथा- बालकृष्ण भट्ट , देवकीनंदन खत्री चंद्रकांता आदि मुख्य रूपसे उपन्यास लिख गए । लेकिन यह सारे ऐतिहासिक तिलस्मी, जासूसी तथा रोमानी उपन्यास थे । यह उपन्यास सामाजिक तथा प्रेम को आधार बनाकर लिखे गए है । स्पष्ट है कि उक्त काल में कोई यथार्थवादी साहित्य का सृजन नही हो सका है । इस संदर्भ में डॉ नगीना जैन लिखती है - "मनोरंजन के लिए सौंदर्य प्रेम प्रेम आख्यान , भावूकता आदि का ग्रहण तथा उपदेश के लिए समाज सुधार के आदर्श , प्राचीनता के प्रेम, अप्राकृतिक तथा अभौतिक तत्वों का समावेश और यथार्थ से काफी दूरी ये सारी चीजें जिस स्वरूप का निर्माण करती है , वह आंचलिकता के समीप नही ।[5] लेकिन छूटपूट मात्रा मे ग्रामीण जीवन का कुछ कथा साहित्य इस दौर में लिखा गया है । जिनमें जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का 'बसंती मालती' तथा हरि औंध व्दारा रचित 'अर्धखिला फूल' है । इन दोनों उपन्यासों में ग्रामीण अंचल तथा ग्रामीण नारी जीवन की कथा चित्रित है । उसी प्रकार रामजीसिंह ने 'वन विहंगीनी' उपन्यास में संथाल परगना के आदिवासी जनसंस्कृति का आधार लिया है । ब्रजनन्दन सहाय-जीने

आरण्यबाला में पहाडी परिवेश का चित्रण मिलता है । पं. बालकृष्ण भट्ट ने भी अपने उपन्यासो मे ग्रामीण क्षेत्र की कथा को चुना है ।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उक्त काल में ग्रामीण परिवेश पर इतना ध्यान नही दिया गया जितना प्रेमचंद काल में । लेकिन इस समय मैं मक्कन द्विवेदी को भूलाना भी असंभव है क्योंकि इनके 'रामलाल' उपन्यास में पूर्ण रूपेण ग्रामीण जीवन उभरकर आया है । इसलिए इन्हें ही ग्रामीण प्रवर्तक के रूप में माना जाय । इस बारें में डॉ कैलास अपना मत इस तरह प्रकट करते है प्रस्तुत उपन्यास में प्रथम बार सामायिक परिस्थितियों के अंतराल में ग्रामीण जीवन पर उदार एवं सहृदयतापूर्वक दृष्टिपात किया गया है । यही विशेषता आगे चलकर प्रेमचंद के ग्रामीण उपन्यासों की प्राण बनी । इसमें भाषा वैविध्य को महत्व नही दिया गया परंतु पुलिस और अदालत, पटवारी और पोस्टमन भगत और साहकारों का व्यग्यपूर्ण चित्रण मक्कन द्विवेदी की लेखनी से खरा उतरा है ।[6]

इसी समय कुछ छुटपूट कहानियॉ लिखी गई है । जैसे रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', जयशंकर प्रसाद की ग्राम चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'बुध्दू का कांटा' आदि । इन कहानियों में ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है । अत: प्रेमचंद पूर्व ग्रामीण परिवेश की बुनियाद तो खडी की गई लेकिन सही मायने में प्रेमचंदजीने ही इसे सजाया संवारा और यथार्थवादी रूपसे चित्रण किया है ।

यथार्थवादी साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद जी का आगमन हिन्दी ग्रामीण कथा के लिए देवदूत के समान हुआ और 1918 में पहला 'सेवासदन' नामक उपन्यास लिखा । जो पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से लिखा गया था । हम सब जानते है प्रेमचंद पहले धन-पतराय के नाम से लिखते रहे लेकिन उर्दू उन्हें बहुत ज्यादा रास न आयी । इस बारें में अपने मित्र मुंशीनारायण निगम से पत्राचार मिलता है उसमें उर्दू के बारे में प्रेमचंदजी लिखते है - उर्दू में अब गुजर नही है । उर्दूनवीसी में किस हिन्दू को फैज हुआ जो मुझे हो जायगा ।[7] स्पष्ट रूपसे प्रेमचंद हिन्दी में आये और कई उपन्यास लिखे जैसे गोदान , प्रेमाश्रम, रंगभूमि , कर्मभूमि कायाकल्प जैसी अनुपम रचनाएँ हिन्दी साहित्य को दी । जिनमें ग्रामीण जीवन को आधार बनाया । उसी प्रकार कहानी साहित्य में भी ग्राम्य जीवन की कई कहानियॉ लिखी जिनमें प्रमुख है -

पूस की रात , समरयात्रा, खून सफेद , दो बैलों की कथा, पंच परमेश्वर , लागडाट , अग्नि समाधि, मुक्तिमार्ग, कफन, मुक्तिधर्म, अलग्योझा, सवा शेर गेहूँ, पछतावा, उपदेश, तावान, सुहाग की साडी, आहूति, प्रतिशोध होली का उपहार, जुलूस, आदर्श विरोध, बाबाजी का भोग, चोरी, प्रेरणा हिंसा परिशोधक ,दंण्ड, पशु से मनुष्य , सदगति , सभ्यता का रहस्य, जेल, विध्वस, बलिदान आदि । प्रेमचंदजीने इन तमाम कहानियों में ग्रामीण जन जीवन का विस्तार से वर्णन किया है । जिसकी झलक में गाव में किसानी व्यवस्था, खेती में काम करते किसान नारी खेती का कम करती हुयी मजदूरों का चित्रण आदि कई कथायात्राएँ इनकी कहानियों का सूत्र बनी है । प्रेमचंदजीने ग्रामीण किसान की खस्ताहाल जिन्दगी और पैसे पैसे के लिए तंगहाल जीवन त्रासदी को 'कफन' में जोखू के जीवन के माध्यम से हमारे सम्मुख रखी है । जैसे स्त्री के समीप या गया और खुशामद करके बोला ला दे दे गला तो छुटे । कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा ।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और ऑखे तरेरती हुई बोली-कर चुके दूसरा उपाय जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे दे-गा कंबल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नही आती । मैं कहती हूँ तुम क्यों नही खेती छोड देते ? मर मर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो चलो छुटी हुई । बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है । पेट के लिए मजूरी करो । ऐसी खेती से बाज आये । मै रूपये न दूँगी न दूँगी" ।[8] स्पष्ट है के प्रेमचंद जी के साहित्य में ग्रामीण यथार्थ झलकता है । प्रेमचद ग्रामीण कथाकार के रूपमें सरताज थे ऐसा कहा जाय तो गलत नही होगा । उन्होनें हर चीज का सूक्ष्मता से चित्रण किया प्रकृति भी अछूती नही रही । इसलिए शान्तिप्रिय द्विवेदी उनके बारें में अपने विचार व्यक्त करते हैं - प्रेमचंद आज तक की देहाती पगडण्डियों के बटोही हैं । अतएंव यह ठीक है कि भविष्य में शायद भारतीय ग्रामों का इतिहास उनके उपन्यासों और कहानियों में पढा जाए ।[9] इसी प्रकार प्रेमचंदजीने अपने उपन्यासों में भी ग्रामीण परिवेश को उभारा है । गोदान इसका अप्रतिम उदाहरण है । होरी महानायक के संपूर्ण जीवन का चित्रण कर ग्रामीण किसान को ऐसा नायक बना दिया जिसका कोई सानी नही है । ग्रामीण जीवन का चित्रण गोदान में प्रेमचंद ने किया है प्रस्तुत है एक उदाहरण - "जेठ के दिन है, अभी तक खलिहानों में अनाज मौजूद है, मगर किसी के चेहरे पर खुशी नही है । बहुत कुछ तो खलिहान में ही तुलकर महाजनों और कारिन्दों को भेंट हो चुका है और जो कुछ बचा है वह भी दूसरों

का है । भविष्य अंधकार की भॉति उनके सामने है । उनके बैल चूनी चोकर के बगैर नॉद में मुॅह नही डालते मगर उन्हें केवल पेट में कुछ डालने को चाहिए । स्वाद स उन्हें कोई प्रयोजन नही । उनकी रसना मर चुकी है । उनके जीवन में स्वाद का लोप हो गया है" ।[10] स्पष्ट है कि प्रेमचंद जीने अपने कथा उपन्यासों में ग्रामीण जीवन को बडी सजगता से प्रस्तुत किया है ।

प्रेमचंद के समय ही जयशंकर प्रसाद ख्याति प्राप्त कर चुके थे । वैसे वे इतिहास में अधिक आस्था रखते थे । लेकिन उन्होंने 'तितली' और 'कंकाल' जैसे सामाजिक उपन्यास लिखकर सामाजिक समस्याओं के प्रति अपनी चेतना को स्थान दिया है । प्रस्तुत है तितली का एक उदाहरण - "जमींदारों के कर्मचारियों की कूटनीति एवं धाधली, ग्रामीण जनता की सरल तथा घोर स्वार्थवृत्ति गांव की राजनीति, गाव के त्यौहार, उत्सव , सम्मिलित परिवारों की दुर्बलता आदि की झलक दिखाने का प्रयत्न किया है" ।[11] स्पष्ट है कि जयशंकर प्रसाद का समाज की समस्याओं को देखने और परखने का अंदाज अलग था ।

वृन्दावनलाल वर्मा भी ऐतिहासिक धरोहर की रक्षा करने वाले साहित्यकार है । लेकिन उनके कुछ उपन्यासों मे ग्रामीण परिवेश का चित्रण मिलता है । डॉ पद्मसिह इस बारें में कहते है- "वर्माजी के बुन्देल खंड से सम्बधित ऐतिहासिक उपन्यासों में तो यह आंचलिकता दूध पानी की तरह धुली मिली है , उनके सामाजिक उपन्यासों में भी उनका निखरा हुआ रूप मिलता है" ।[12] 'लगन' उपन्यास मे दहेज की प्रथा का विरोध करते है तथा सगमें मे बुर्देलखड के ग्रामीण जीवन के परिवेश को उकेरने की कोशिश की गई है । ग्रामीण कथाकारों में निरालाजी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । क्योंकि उन्होंने आप्सरा, अलका, चतुरी चमार, बिल्लेसुर बकरिहा और कुल्ले भाट जैसे उपन्यास लिखे । 'अप्सरा' में निरालाजी ने जमीदारों के राजेशाही ठाट तथा ग्रामीण समाज की समस्याओं का चित्रण किया है । 'अलका' में किसान आदोंलनों पर प्रकाश डाला गया है । निराला के उपन्यास साहित्य पर टिपणी करते हुए नरपतचंद्र सिंघवी लिखते है- "प्रेमचंद को ग्रामीण चित्र खिचने में ग्रामीणों के साधारण चित्रों को असाधारण स्वाभाविकता के साथ खेलने और मनुष्य मन की छान बीन में जो सफलता दृष्टिगत हुई , इससे निराला भी आकर्षित हुए और अलका और निरूपमा में उन्होंने ग्रामीण चित्र प्रस्तुत किये तथा बाद की कृतियों बिल्लेसुर बकरिहा, कुल्लीभाट तथा

अधूरे । उपन्यास चमेली में तो ग्रामीण चित्र अपनी पूर्ण सज्जा के साथ अंकित है ।[13] स्पष्ट है कि निरालाजीने पूर्ण कविता में प्रवृत्ति को स्थान दिया लेकिन उपन्यासों में यथार्थवादी भूमिका अदा की है । सियाराम शरण गुप्त ने ग्रामीण उपन्यासों की रचना की है । उनके उपन्यास है-गोद, अंतिम आकांक्षा और नारी् । 'नारी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन को वैचारिक संघर्ष के कारण दुर्बलताएँ बढती है । उसी प्रकार अंतिम आकांक्षा के बारे में डॉ ज्ञान अस्थाना अपने विचार रखते है- "अंतिम आकांक्षा में ग्रामीण जीवन की अंध परम्परा जाति भेद एवं धनी लोगों व्दारा गरीब ग्रामीणों पर होनेवाले अत्याचारों के विरूध्द ग्रामीण पात्रों के विरोध की कहानी है, तो नारी में ग्रामीण जीवन में हिन्दू नारी (पत्नी) के अदम्य स्नेह और त्याग की है" ।[14] ग्रामीण परिवेश को अपने उपन्यासों का कथ्य विषय बनानेवाले उपन्यासकार शिवपूजन सहाय है जिन्होंने देहाती 'दुनिया उपन्यास' लिखा है । वे अपनी रचना के बारे में लिखते हैं - मैं ठेठ देहात का रहनेाला हू जहॉ इस युग की नयी सभ्यता का बहुत ही धुंधला प्रकाश पहुचा है । वहॉ केवल दो ही चीजें प्रत्यक्ष देखने में आती हैं । अज्ञानता का घोर अंधकार और दरीद्रता का ताण्डव नृत्य । वही पर मैने स्वयं जो कुछ देखा सुना है उसे यथाशक्ति ज्यों का त्यों इसमें अंकित कर दिया है ।[15] स्पष्ट है शिवपूजन सहाय ने 'देहाती दुनिया' में भोजपूर अंचल की कथा को संप्रेषित किया है ।

प्रेमचंदोत्तर कथासाहित्य में ग्राम जीवन

सही अर्थ में ग्रामीण परिवेश का साहित्य प्रेमचंद के काल में ही माना जाना चाहिए क्योंकि प्रेमचंद ने सही मायने में गाव तथा ग्रामीण की मानसिकता का चित्रण किया है । प्रेमचंद के बाद हिन्दी कथा साहित्य में कई धाराओ ने रूप धारण किया है जैसे मनोविश्लेषणवादी धारा और मार्क्स के विचारों से प्रेरित होकर प्रगतिवादी साहित्य का सृजन भी हुआ । साथ ही साथ प्रगतिवाद की भी धूम मची क्योंकि इसमें सामान्य वर्ग की पीडा को उकेरने की कोशिश की गई है । आजादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता की लहर उठी जिसमें फ.रेणू , नागार्जून, रांगेय राधव, मार्कडेय, आदि कथाकारों की सुदृढ परपंरा को आगे बढाया तथा मनोविश्लेषणवादी वर्ग में जैनेद्र, अज्ञेय , इलाचंद जोशी जैसे साहित्यकारों ने अपने आपको अजमाया ।

मार्क्सवादी सिध्दान्तों से प्रभावित होकर यशपाल ने कई उपन्यास लिखे । जिसमें दिव्या ,अमिता , दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड, देशद्रोही, झूठा सच , बारह घटें आदि ।

लेकिन उनका ग्रामीण परिवेश का उपन्यास है 'मनुष्य के रूप' । जिसमें कांगडा कुल्लु आंचल का चित्रण हुआ है । मुख्य रूप से यशपाल नारी दशा पर बहुत चिंतीत दिखाई देते है । इस बारे में यशपाल स्वंय 'मनुष्य के रूप' में नारी दशा चित्रित करते है- "मझ ोरा से भाग जाने के बाद पुलिस की हाथ में पडकर और बादमें कागडा और धर्मशाला के समाज में अपनी अवस्था शहर के कुले से घिरी कातर बकरी सी अनुभव की थी । इस घर में आकर उसने वह देखा और अनुभव किया, जिसकी आशा वह स्वप्न में भी नही कर सकती थी । वह अपने आपको घृणा और दु:ख के योग्य ही समझने लगी थी । यहॉ उसे सब ओर सहानूभूति और दया ही दिखाई देती । उसका दुर्भाग्य वहॉ अपराध और घृणा की बात न थी ।[16] अत: यशपाल ने गामीण भावभूमि पैदा तो की लेकिन वह मिट्टी से इतनी मात्रा में जुड नही पाये जितना प्रेमचंद जुडे है । डॉ झान अस्थाना भी यही सवाल उठाते है । मनुष्य के रूप उपन्यास में लेखक की दृष्टि कांगडे के पहाडी गावों की ओर गयी है । इसमें लेखक ने विधवा सीमा को लेकर निम्नश्रेणी के परिवार और समाज में नारी की करूण एवं दयनीय दशा का चित्रण किया है , लेकिन यशपाल ग्रामीण सौदर्य को भूलकर रोमांस बहाव में बह जाते है ।[17]

महादेवी वर्मा ने भी अपने साहित्य यात्रा के दौरान ग्रामीण नारी पर प्रकाश डाला है । और ग्रामीण चरित्र भी गढे है । लेकिन वह गहराई नही पा सकी है इस बारे में डॉ वासुदेव लिखते है प्रेमचंद के बाद महादेवी वर्मा ने ही अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की कुछ प्रमुख समस्याओं के प्रति अपनी सचेतना का परिचय दिया है , लेकिन यह सच है कि प्रेमचद की अपेक्षा महादेवी ने केवल ग्रामीण नारी की दयनीय स्थितिपर ही दृष्टि निक्षेप किया है ।[18]

आजादी के बाद लिखा गया उपन्यास अमर बेल वृन्दावनलाल वर्मा की एक और ग्रामीण कृति है । जिसमें भारतीय ग्रामीण दर्शन मिलता है । शिवनारायण प्रस्तुत उपन्यास के संदर्भ में लिखते है - इस उपन्यास मे बुन्देल खंड का ग्रामीण जीवन अपनी संपूर्ण विविधता में सजीव हो उठा है । प्रेमचंद के उपरान्त ग्राम्य जीवन का यथार्थ एवं विश्वसनीय चित्र देने वाला यह उपन्यास पर्याप्त महत्वपूर्ण है ।[19]

1950 के बाद सही अर्थ में ग्रामीण परिवेश को रूप और आकार देनेवाले आंचलिक उपन्यासकार आये जिनमें मुख्य रूपसे फणीश्वरनाथ रेणु है । रेणु ने 1954 में मैंला आंचल लिखकर इसकी नींव रखी । प्रस्तुत रचना के बारें में स्वयं रेणुजी लिखते है

- इसमें फूल भी, शुल भी, धूल भी है, गुलाब भी , किचड भी है, चन्दन भी है, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी , मै किसी से भी दामन बचाकर निकल नही पाया ।[20] स्पष्ट है कि रेणु ने बिहार के पूर्णिमा जिले का बहुत अधिक पिछडा गाव मेरी गंज को चुना जिसमें आर्थिक कंगाली, भूखमरी, बिमारी, जाति व्यवस्था जैसे कई बिमारियाँ पनप रही है । इसके बारें में गोपालराय लिखते है - अंचल के निवासियों की निर्धनता उनका मानसिक पिछडापन , जमींदार और तहसीलदार का शोषण जातिगत आधार पर आपस की फूट और कमीनगी । उपन्यासकार ने इस नग्न यथार्थ को बडी निर्ममता से प्रस्तुत किया है । उपन्यास में चित्रित ग्रामांचल की दूसरी पहचान है उसकी अन्धविश्वासग्रस्तता जो अशिक्षा और मानसिक पिछडेपन की उपज है । अशिक्षा और अधंविश्वास से ग्रस्त समाज की निर्धनता स्वयसिध्द तथ्य है । ग्रामीण अंचलों की निर्धनता कारण सदियों से विदेशी और भारतीय सामन्तों व्दारा आम आदमी का शोषण है" ।[21] जिससे रेणु यह संदेश देना चाहते है कि ग्रामीणें को अपनी राह चुननी होगी । क्योंकि कोई सरकार या कोई व्यवस्था इसे बदल नही सकती है । अपने उध्दार अपने ही हाथों करना होगा । 'परती परिकथा' रचना 'मैंला आंचल' की अगली कडी है । धरती परिकथा के बारे में गोपालराय लिखते है - अपढ ग्रामीणों , अक्षर कट्टू युवकों, स्कूलों और कॉलेजों में पढनेवाले छात्रों , जातिगत संस्कारों से ग्रस्त नर नारियों , घुमन्तू और नारदी प्रवृत्ती की स्त्रियों, सभी राजनीतिक दलों की शाखाओं के अधकचरे नेताओं शातिर मुकदेमबाजों और इसके साथ साथ लोककथा गीतों के गायन लोकनाट्यों के मंचन आदि के यथार्थ चित्र उपलब्ध होते है" ।[22] अत: यही कहा जा सकता है कि रेणू ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की सही झाँकी प्रस्तुत की है । तथा अपनी ठुमरी, अगिनखोर, तीसरी कसम जैसी कहानियों में भी आंचलिकता का भरपूर परिपोषण किया है । वैसे नागार्जून आंचलिक परंपरा में पहले स्थापित हो चुके थे क्योंकि 'रतिनाथ की चाची' 1948 में प्रकाशित हो चुका था । प्रस्तुत उपन्यास की कथा मिथिला आंचल को आधार बनाकर लिखी है । इस उपन्यास में विधवा गौरी के दुखों की कष्टप्रद दास्तान है जो भारतीय ग्रामीण नारी की कहानी है । तरकुलवा के आंचलिक वातावरण में मैथिल समाज की जतियॉ , बिकौआ प्रभा, धार्मिक अंधविश्वास आदि का सजीव और सुन्दर चित्रांकन हुआ है । कथाकार अन्य में समाजवादी चेतना का संचार करता है । रतिनाथ का चरित्र बहुत कुछ अंशों में लेखक के स्वानुभव का प्रतिनिधत्व करता है । उपन्यास का उदेश्य

समाजगत वैषम्य , स्वार्थपरता की वृत्ति एवं अज्ञानता का यथार्थपरक अंकन करना है" ।[23] 'बलचनमा' श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है । इसमें भी बिहार के दरभंगा तथा उसके समीपवर्ती आंचल को आधार बनाया गया है । 'बलचनमा' ग्रामीण ईमानदार किसान है । लेकिन उसका भी शोषण किया जाता है । 'बलचनमा' में श्रेष्ठतम आंचलिक वातावरण को चित्रित किया गया है । डॉ बेचन बलचनमा के संदर्भ में कहते हैं- "यदि नागार्जून ने बलचनमा लिखकर और कुछ न लिखा होता तो विश्व के कथाकारों की पंक्ति में आ ही जाते" ।[24] 'नई पौंध' उपन्यास में मिथिला आंचल की नौागछिया बस्ती में रहनेवाले लोगों की पुरानी औ नयी संघर्ष की गाथा है । यह रचना अनमेल विवाह पर भी प्रकाश डालती है । 'बाबाबटेसर नाथ' एक वटवृक्ष को आधार बनाकर उसके मुख से मिथिला प्रदेश के रूपहली गांव की कथा को उत्थान और पतन की कहानी उदघोषित की गई है । इस दौर में डॉ भगवत स्वरूप लिखते हैं- "रूपहली बस्ती के सौ वर्ष के अंचल की बाढ महामारी , भूचाल आदि प्राकृतिक और दैविक प्रकोप, देवी देवताओं में अधश्रध्दा, पशु बलि आदि का सूक्ष्म निरिक्षण प्रस्तुत किया गया हे"।[25] 'वरूण के बेटे' उपन्यास में मछुआरे जीवन की त्रासदी प्रकट की है । तथा 'दुख मोचन' और 'उग्र तारा' आदि उपन्यासों में ग्रामीण जन जीवन का चित्रण हुआ है । स्पष्ट है कि नागार्जून भारतीय ग्रामजीवन की सही दिशा दिखाने में समर्थ साबित हुए है । गांवों में शोषण और अत्याचार अब नई बात नही रही है । जमींदार एवं साहूकारों व्दारा यह नित्य रूपसे होता रहा है । जमींदारी एवं साहूकारी अब टूट चुकी है इसका संकेत शिवप्रसाद सिंह के उपन्योस में 'अलग अलग वैतरणी' में मिलता है । जैसे आसामियों ने खानदानी लाज, शर्म छोडकर जमींदार की छावनी से अपना रिश्ता तोड लिया । अब कभी दशहरे के मौके पर आसामियों की भीड जुहार करने नही आती" ।[26] लेकिन जमींदारी तथा साहूकारी ने नया रूप ले लिया है । वे तब भी मालिक थे और अब भी मालिक है । उन्होंने शोषण के नये मार्ग तलाश कर लिये है । मार्केडेंय की उत्तराधिकार कहानी में उसका चित्रण मिलता है । "धूर धूर जमीन पट्टे करके उन्होंने बँक में रूपया जमा कर दिया और बडे बडे भागों को काटकर फार्मिग शुरू कर दी थी । उनका दबदबा अब भी बना हुआ था । आने जिले की कॉग्रेस कमिटी को हर तरह की मदद दे उन्होंने नेताओं को खरीद कर अपना दरबारी बना लिया था" ।[27] स्पष्ट है कि ग्रामीण जन जीवन छोटे

मोटे बदलावों के साथ ही वही स्थिति बनी हुयी है, जो पहले थी । केवल शोषण के मार्ग बदल गये है । इसी संदर्भ में भैरवप्रसाद गुप्त ने 'गंगा मैया' में उत्तर प्रदेश के बलिया का ग्रामीण जन जीवन प्रस्तुत कर वहॉ की समस्याओं को उदघाटित करने की कोशिश की है । 'सती मैया' का चौरा में भी इसका दर्शन होता है । अजयगढ की तीन पीढियों के जीवन के विस्तृत चित्रपट पर सामन्ती मुल्यों के विघटन, नई चेतना के आलोक में नये जीवन के संघर्ष और नये मूल्यों के जन्म की रेखाएँ उभारी गई है" ।[28] उदयशंकर भट्ट ने 'सागर लहरें और मनुष्य' में बम्बई के तटिय क्षेत्रों के गांव की कहानी चित्रित है । श्रीलाल शुक्ल भी ग्रामीण कथाकार के रूप में विख्यात है । जिन्होंने 'राग दरबारी' की रचना की है जिसमें आजादी के बाद भी कई प्रदेशों की खस्ता हाल का चित्रण करता है । और छोटे मोटे नेता जैसे समय बदलता है वे भी अपना रंग बदल लेते है । राज दरबारी के वैद्यजी इसके प्रतिक है - अंग्रेजो के जमाने में अंग्रेजा के लिए श्रध्दा दिखाते थे । देसी हुकूमत में वे देसी हाकिमों के प्रति श्रध्दा दिखाने लगे । वे देश के पुराने सेवक थे । पिछले महायुध्द के दिनों में जब देश को जापान से खतरा पैदा हो गया था उन्होंने सुदरपूर्व मे लडने के लिए बहुत से सिपाही भर्ती कराये । अब जरूरत पडने पर वे राजनीतिक गुट में सैकडों सदस्य भरती करा देते थे । पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दिवानी के मुकदमों मे जायदारो के सिपुर्ददार होकर और गांव के जमींदारों के लम्बरदार के रूप में करते थे । अब वे को ऑपरेटिव युनियन के मैनेजिंग जिला डारेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे" ।[29] इसी तर्ज पर मजहर चौहान व्दारा 'हिरना सांबरी' लिखित रचना है । जो आदिवासी बहुल प्रदेशों में आदिवासी लोगों के शोषण की कहानी अभिव्यक्त करता है । अनिरूध्द पाण्डेय ने 'मन की आखे' उपन्यास में नारी जाति पर किये जानेवाले अन्यायों, अत्याचारों को मुखर वाणी देने की कोशिश की है । राजेद्र अवस्थी भी आंचलिक धारा के प्रतिक माने जाते है । उन्होंने 'उतरते ज्वार की सीपियाँ', 'जाने कितनी ऑखे', 'बहता हुआ पानी', बीमार शहर, अकेली आवाज , सूरज किरण की छॉव, तृषित आदि उपन्यासों की रचना कर आंचलिक धारा को प्रवाहित किया है । सुरज किरण की छांव मे बस्तर के अंचल में बसे आदिवासी गौंड जाति की समस्याओं को उजागर किया है । उसी प्रकार 'जंगल के फूल' में मध्य प्रदेश में बसे आदिवासी संस्कृति को वर्णित किया गया है । जिसमें आदिवासियों में भी परिवर्तन की स्थिति नजर आ रही है । का चित्रण

है । राजेद्र अवस्थी ने अपनी रचनाओं में आदिवासी परम्पराओं का अंकन किया हैं - "आदिवासी जीवन में ' घोटुल' की अहम भूमिका होती है जिसमें युवक युवतियों के सम्मिलित नृत्य गीत आदि अनेक सांस्कृतिक पक्ष समाहित होते है" ।[30] 'जाने कितनी ऑखे्' मे भी बुन्देलखंड के ग्रामीण जीवन का वर्णन मिलता है । साथ ही अवस्थीजी ने कई कहानियां में भी ग्रामीण स्थिति का चित्रण किया है । शिवप्रसाद सिंह की पहली कहानी दादी मॉ के बाद प्रायश्चित वशीकरण , माटी की औलाद रेती, कर्मनाशा की हार, बीच की दीवार मुर्दासराय, आदि कहानियों में गांव की मिट्टी की महक आती है । उन्होंने गांव की मिट्टी से बने ऐसे चरित्रों को चुना है, जिन्हें पता है कि उनके घर में क्या होता है , सम्बधों का अर्थ और धर्म क्या है ? गांव की जडता और मुक्त होती हुई जडता दोनो भंगिमाऍ उनकी कहानियों में आ जाती है ।[31]

ग्रामीण कहानीकारों में मार्केडेंय का नाम अग्रणी रहा है । उन्होंने पान फूल, महूए का पेड, हंसा जाई अकेला, भूदान, माही , सहज और शुभ , बीच के लोग आदि कहानी संग्रह लिखे । मार्केडेंय अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन की गरीबी , कंगाली, भुखमरी अभाव, महाजनी व्यवस्था के शिकार लोग, ढोंगी बाबाओं के शिकार ग्रामीण नर नारी आदि का अपनी कहानियो कथ्य बनाया है । इनकी कहानी के बारें में श्रीपतराय लिखते है - प्रस्तुत संग्रह की शीर्षक कहानी मुझे बहुत प्रिय है । बात उसमें कुछ नही है पर उसके कहने का ढंग इतना सुंदर है कि वह ह्रदय को छू लेती है, ह्रदय को हिला देती है । दुखना के चरित्र के अन्दर से जैसे हमारी समस्त त्रस्त एव पदलित नारी जाति का स्वर मुखरित हो उठा है । उसकी याद बडी देर तक इन पर छायी रहती है । जैसे पावस की वायुहीन घुटन , दुखना की व्यथा, उसकी विवशता जैसे सभी को परवश बना देती है" ।[32] डॉ रांगेय राघव के कथा साहित्य की सृजन सूची लंबी है । जैसे उन्होंने चालीस के आसपास उपन्यास लिखे है । लेकिन उबाल, राई और पर्वत, पथ और पाप , आग की प्यास, आखिरी आवाज, धरती मेरा घर, काका कब तक पुकारूं आदि उपन्यासों में ग्रामीण जन जीवन का चित्रण है । 'उबाल' में ग्रामीण तथा शहरी 'परिवेश को चित्रित किया गया है । 'राई और पर्वत' में नये युग की कथा गांव के संदर्भ मे व्यक्त की गई है । 'पथ का पाप' आगरा के बरोठा आंचल की कहानी है । 'आग की प्यास' में भी ग्राम जीवन है । 'विषाद मठ' को बंगाल के अकाल का कथ्य

बनाया है । 'आखिरी आवाज' में आजादी के बाद बदलते ग्राम जीवन की यथार्थ कहानी है ।

'कब तक पुकारू' उपन्यास में करनटो के जन जीवन की त्रासदी बयान हुयी है । उनके रीति रिवाजों , अंध विश्वासों तथा उनकी नारियों का स्वच्छद जीवनयापन को जगह दी गई है । जैसे करनटो के समाज में पुरूष या नारी के लिए नैतिकता के कोई बंधन नही है । पुरूष किसी भी अन्य नारी से शरीर सम्बंध स्थापित कर सकता है, वैसे नारी भी किसी अन्य पुरूष से शरीर सम्बंध स्थापित कर सकती है । 'प्यारी' और 'कजरी' ऐसी ही नारियों का प्रतिनिधित्व करती है । इस समाज की स्त्रियॉ स्वच्छंद विचरण करती है तथा उनके लिए किसी भी पुरूष से यौन सम्बंध स्थापित करना अनैतिक नही कहा जाता" ।[33] शेखर जोशी ने 'कोसी का घटवार' और 'बदलू' जैसी कहानियॉ लिखकर आंचलिकता को प्रश्रय दिया है । इनके बारें में डॉ प्रेमचंद सिन्हा लिखते है- "जिस प्रकार कमलेश्वरने ग्रामाश्रित परिवेशों को कस्बों के ढालों तक फैला दिया उसी प्रकर शेखर जोशी ने ग्रामाश्रित परिवेशों को नदी तट और औद्योगिकता के निरस विस्तार तक पहुॅचा दिया" ।[34]

इसी परम्परा को अग्रणी भूमिका देनेवाले कथाकार के रूप में विख्यात मिथिलेश्वर है । जिन्होंने पूरी सच्चाई और लगन तथा ईमानदारी से ग्राम जीवन का चित्रण अपने साहित्य में किया है । मिथिलेश्वर के अंग अंग में लोकजीवन उनका रहन, सहन, खान पान, पर्व, त्यौहार बसे हुए है । वे भी मूल रूपसे गांव से जुडे है । यह उनके जीवन को और व्यक्तित्व को जानने से पता चलता है । मिथिलेश्वर शहर में तो बसे लेकिन शहर में अधिक नही रमे है । वे बार बार गॉव की ओर भाग आते थे । और उन्होंने जीवन भर जो भी लिखा गांव को समर्पित किया है । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर ग्रामीण जनजीवन के सरताज है ।

मिथिलेश्वर के जीवन का अभिन्न अंग - ग्रामीण जीवन

भारतीय ग्रामीण जीवन आज भी शहरी परिवेश से बेहतर कहा जाता है । क्योंकि गांव में आज भी शांति है सकुन है । गांव की प्रकृति आज भी हमें प्रेरित करती है । शहरी परिवेश की जो चकाचौध है वह नकली है । लेकिन गांव में आज भी हर आदमी अपनी अपनी सच्चाई के साथ अपना जीवन यापन करता है । भारत किसानों का देश है । लेकिन भारतीय किसान भाग्यवादी है । वह पापभीरू भी है । जिससे चालाक लोग

उसका फायदा उठाते आये है । जमींदारों, साहूकारों व्दारा पीढियों से यही होता आया है । जैसे खेती पर जीवन यापन करनेवाला किसान वर्ग अंधविश्वासों को विशेष रूप से स्वीकार करता है । भविष्य , मनौतियॉ भूत प्रेत में विश्वास, जादू टोना के प्रति विश्वास, अनेक देवी देवताओं की पूजा में मग्न किसान वर्ग नारी को गौणत्व प्रदान करता है । जातिवाद के बल पर अलग अलग दलों में विभाजित किसान वर्ग राजनीतिक षडयंत्र का शिकार बन रहा है । मनोरंजन, स्वास्थ शिक्षा सुविधाओं अभावों में जीवनयापन करने वाला किसान देश का प्रमुख वर्ग है । किसानों की प्रगति के बिना देश की प्रगति असंभव है" ।[35] इन सबका चित्रण कहानीकारों एवं उपन्यासकारों ने अपने कथासाहित्य में किया है । प्रेमचद से लेकर यह परम्परा मिथिलेश्वर तक देखी जा सकती है । इस बारें मे डॉ संगीता पाटील लिखती है - मिथिलेश्वर प्रेमचंद वर्ति परम्परा के प्रगतिशिल और ग्राम चेतना के कथाकार है । एक और वे प्रेमचंद के संघर्ष पूरक मूल्योंसे जुडे हैं, तो दूसरी ओर आंचलिक आंदोलनों से । इसलिए वे दोनों के संगम क्षेत्र के कथाकार है । मिथिलेश्वर प्रेमचदोत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार है । वे अप्रतिम श्रमशक्ति के प्रतीक है । उनकी रचनाएँ उनके असाधारण पुरूषार्थ दृढ मनोबल एवं अनुशासित कार्यप्रणाली का परिणाम है" ।[36] स्पष्ट है कि प्रेमचंद व्दारा शुरू ग्रामीण परिवेश चित्रण को आगे विशाल रूप धारण करता है ।

आजादी के बाद भी हिन्दी कथासाहित्य में ग्रामीण जन जीवन का बोलबाला रहा । जिनमे फ.रेणू की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । फ.रेणु गांव का सर्वात्रिक रूप से चित्रण करते है । उनकी ऑखे गांव का कोई भी रूप छूट नही पाया है । जैसे वे गांव के प्राकृतिक सौदर्य और परम्परागत सांस्कृतिक समृध्दि की भी उपेक्षा नही करते । ग्रामीण जीवन का एक यथार्थ यह भी है कि ग्रामीणों के सारे संस्कार , उनके काम का एक एक क्षण पर्व उत्सव त्यौहार, रीति रिवाज, गीत नृत्य से जुडे हुए है" ।[37] याने ग्रामीण किसान में कितनी भी ग्रस्तता हो वह अपनी जीजिविषा नही छोडता । आजादी के पूर्व भारतीय समाज ने सुनहरा सपना देखा था कि अब सुशासन तथा गांव मे सुनहरे दिन आयेगे । उस समय देश की आजादी बहुत मायने रखती थी । भारतीय समाज के हर वर्ग को काम मिलेगा लेकिन ऐसा कुछ भी न हो सका । युवक पढ लिखकर गांव से शहर की ओर भागे । पर वहाँ भी वे रस बस नही पाये । शहरों की भीड बढती गई । मजबूरन लोगों को फुटपाथों तथा झुग्गी झेपडियों का सहारा लेना पडा । लेकिन वे गांव में नही आ सकें । वे जैसे गांव से कट ही गए थे उनके जीवन में अर्थ (पैसा) ही

महत्वपूर्ण बनता गया । इस बहुरंगी आजादी के सपने कैसे लोगों केा भ्रमनिराश करते है । इसका एक उदाहरण जल टूटता हुआ में डॉ रामदरश मिश्रजी चित्रित करते है "इतने साल हो गये आजादी मिले हुए । यह अभागी जिन्दगी टस से मस नहीं हुई । आजादी ने प्रायमरी स्कूल के हेड मास्टर सगुन तिवारी को कभी दो कुरते और तीन धोतियॉ नही दी । समय पर वेतन नहीं मिलता खेत में कुछ पैदा नही होता बनिया तक उधार सामान नही देना चाहता और देश के नैनिहालों की आत्मा का यह शिल्पी मन में सपने और पेट में कुलबुलाती ऑते लिए स्वाधिनता दिवस का समारोह मनाने स्कूल जाता है । लडके घर से साफ कपडे और टोपी के लिए अपनी माताओं के धप्पड खाकर, कागज की टोपियॉ लगाकर गीली ऑखे और हॅसी पहने हुए चेहरे लेकर स्कूल पहुचते है । मास्टर जी ने उनसे कहा था कि 'हॅसी खुशी के साध आना' पर वे साफ देखते है कि हर हॅसी के पीछे एक उपवास है - एक बेबसी है" ।[38]

नारी और दलितों की स्थिति आज भी ग्रामीण समाज में बडी सोचनीय है । जॉति प्रथा विभिन्न वर्गो में कायम है । नारी केवल भोग वस्तु के सिवा कोई नही है । उसे हर युग में छल के सिवा कुछ नही मिला है । उसे बाल विवाह , दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, अनमेल विवाह जैसे सामाजिक समस्याओं से गुजरकर नरक यातना दी जाती है । दलितों के प्रति भी हमेशा व्देष और घृणा की भावना रही है । आजादी के बाद कुछ अधिकार जरूर मिले है लेकिन उसका फायदा बहुत लेाग उठा नहीं सकें है । गांवों में सरकार व्दारा कई योजनाएँ लायी गई । लेकिन वह सारी योजनाऍ मुठ्ठी भर लोगों के हाथ में सिमट गई है । पंचायत राज भी आया लेकिन सवर्ण जाति के लोग छोटी जातियों पर हमेशा दबाव बनाकर रखना चाहते है । भ्रष्टाचार सरकारी यंत्रणा में एक बहुत बडा दाग है । जिसके कारण गांवों का विकास जिस गति से होना चाहिए वह नही हो रहा है । अगर गांव और किसान की ओर ध्यान दिया होता तो लोग नगर की ओर नही भागते । लेकिन यह कदम ईमानदारी से आज भी नही उठाया जा रहा है । आज भी ग्रामीण समाज का मताधिकार का प्रयोग स्वार्थ के लिए राजनीतिक लोग उठा रहे हैं । सभी पार्टिया बहलाती है लेकिन उन्हें उनके अधिकार देने से कतराते है । 'अल्मा कबूतरी' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है - "अबके चुनाव में खडे होना है । बिरादरी दबाव डाल रही है । कुर्मी लोग श्रीराम शास्त्री का मुकुट बांधे फिरते है, हमारे यादव पीछे क्यों रहें ? समाजवादी पार्टी से प्रस्ताव आ चुका है । बी जे पी के लोग चंदा मांग रहे है ।

कॉग्रेस का गुपचुप निमत्रण है । हौसलेमंद सामर्थ्यवाद , और पैसे को मिट्टी समझनेवाला आदमी उन्हे कहा मिलेगा ? सभी पर्टियों केा ऐसे लोगो की तलाश है" ।[39] स्पष्ट है कि हिन्दी कथा संसार मे बडे बेबा की से ग्रामीण जनता के दुखों को उनके शोषण को जाग्रत करने की कोशिश हुयी है ।

मिथिलेश्वर केवल कहानीकार ही नही उनकी लेखनी से गावों की हकीगत लिखी गई है । वे गांव मे रहे और शहरों में भी । लेकिन गांव के प्रति उनकी जो श्रध्दा थी । वही भावना उनके कलम से निकली है प्रतिमान में उनके बारें में जो टिपणी छपी है वह द्रष्टन्य है- "मिथिलेश्वर का रचना संसार गांव से बाहर की और संक्रमणशील समाज की विसंगतियों और अन्तर्विरोधो का संसार है जिस पर उनकी गहरी पकड है । उनकी कहानियॉ बढती हुई मॅहगाई, बेरोजगारी, शोषण , अन्याय, अंधविश्वास और सर्वग्रासी भ्रष्टाचार के प्रतिसंवेदनशील युवा मन की तीखी प्रतिक्रियाएँ है, जिनके माध्यम से वह इन सामाजिक बुराईयों के विरूध्द एक प्रतिकूल वातावरण तैयार करने की चेतना जागृत करते है" ।[40] मिथिलेश्वर अपनी कहानियों को कही से उधार नही लेते वे तो उनके अर्न्तद्वन्द से पैदा होती है । ग्रामीण जीवन की त्रासदी उन्होनें स्वंय भोगी और देखी हुयी है । स्पष्ट है कि उनका साहित्य उन्ही की अर्न्तवेदना का सच है । गांव का आदमी हेमशा अपमानित होता रहा है । उसे हमेशा किसी न किसी के पास गिडगिडाना पडता ही है क्योंकि वह दूसरों पर हमेशा निर्भर रहता है । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर जी के साथ भी यही होता रहा है ।

जिसे वे अपनी उपन्यासों , कहानियों में उतारते रहें है वे स्वंय भी कहते है - "मेरी नंगी छोटी बच्ची जब मुझसे जांघिये की मांग करती है और मैं अपनी जेब खाली पाता हूॅ, मेरी कहानियॉ तभी जन्म लेती है । निर्भिक होकर सही बोलने के आरोप में जब कोई साहब अपने चपराशी से गर्दनिया हिलवाकर मुझे ऑफिस से बाहर खदेड देते हैं तब मैं अपमानित होकर अपने घर लौटता हूॅ । अपमानबोद से ग्रसित मैं रात भर सो नही पाता हूॅ । मेरी कहानियॉ उसी रात जन्म लेती है । पत्नी के मॉगों को नजर अन्दाज करते, बच्चों की आवश्यक इच्छाओं का हनन करके, रोज दप्तर से लौटते छोटे भाईयों के चेहरों की निराशा को पढने मैं सुबह को शाम में बदल देता हूॅ । फिर रात में ऊबड खाबड चौकी पर बिछी हुई पतली सी चादर मुझे बुरी तरह गडने लगती है । मैं सो नही पाता हूॅ । उठ उठकर बैठ जाता हूॅ । फिर बाबजी की मृत्यु से लेकर अपनी छोटी बच्ची

की मृत्यु तक के यातनादायी सिलसिले मेरी ऑखो के सामने से गुजरने लगते है । बस, तभी मेरी कलम दनादन कहानियॉ उगलने लगती है" ।[41]

मिथीलेश्वर नौकरी के लिए शहर में जाकर बसे लेकिन उनकी आत्मा हमेशा गावों की दौडना चाहती थी । अपना परिवार बडी मुश्किल से शहर में बसाते है । सही जीवन उन्हें गावों में ही नजर आता है । वे शहर में जो सुख सुविधाएँ मिलती है उन्हे अगर गाव में लाया जाए तो भारतीय समाज की बहुत सारी समस्याएँ हल हो जायेगी ऐसा उनका मानना है । गांवों की अगर तरक्की होगी तो किसी को हाथ पसारने की जरूरत नही पडेगी । मिथिलेश्वर जानते है कि गांवों की क्या समस्याए हैं । वहॉ के लोगों को जीवन जीने के लिए कितना संघर्ष करना पडता है । गांवों में वर्ग संघर्ष है । नारी की समस्याएँ अलग है । उसी प्रकार पुरानी और नई पीढि का संघर्ष है । हर वर्ग के अलग अलग संस्कार है । और इन्ही जातिगत संस्कारों के कारण पुरूष तथा नारी दोनों भी छटपटाते रहते जीते जाते है ।

मिथिलेश्वर का कथा साहित्य अपने आस पास के वर्ग चरित्रों से भरा पडा है । क्योंकि वे ग्रामीण वर्ग की संवदेनशिलता से खुद पीडित है- "वे कहते हैं मैं आपको बता दूँ मेरा जन्म भोजपूर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है जो चोरी डकैती , लूटपाट, मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहूर है । उस इलाके में काई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी, अब बन्दुक की नोंक पर तय की जाती है । पता नही, क्यों बचपन से ही अपने इलाके के अत्याचार अनाचार , जुल्म सितम, शोषण अन्याय को मैं सह नही पाता था लेकिन शरीर से मैं उतना तगडा भी नही या कि इसका विरोध कर सकूँ । एक बार कमर कसकर विरोध भी किया था । जिसके परिणाम स्वरूप उल्टे मुँह की खानी पडी थी । मेरे बाये घुटने में जख्म का एक लंबा निशान है जो उस विरोध की याद को ताजा करता है । उस विरोध के बाद मैं काफी बैचेन रहने लगा था । शरीर से मैं लड नही पा रहा था और मन से हार नही मान रहा था , ऐसी स्थिति थी मेरी । मुझे भलि भॉति याद है इन्ही बैचेन स्थितियों के बीच एक दिन मैंने लिखना शुरू किया था" ।[42] उनके अपने जीवन के बारें में वे फिर कहते है गाँव के जीवन को दुखद , भयावह, कटु और विषाक्त करनेवाली समस्याओं ने मुझे बहुत सताया है , इसलिए लंबे समय तक मैं उनसे मुक्त नही हो सका । मेरी अधिकांश कहानियों में गांव का वही परिवर्तीत यथार्थ (विद्रुप यथार्थ्) विभिन्न रूपों में सामने आता रहा । गांव से शहर आने के बाद गांव का एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष मुझे

नजर आया, जिसके समक्ष शहर की सारी प्रगती बौनी जान पडी । अपने उस एक अविस्मरणीय पक्ष की वजह से गांव मेरी नजर में महान बन गया" ।[43]

स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर प्रगतिवादी कथाकार है । उन्होंने ग्रामीण जन जीवन की छटपटाहट को रेखाकिंत किया है । मिथिलेश्वर के अपने आत्मानुभव को साक्षात्कार के रूपमें विकसित किया है । ग्राम्य जीवन की त्रासदी को उदधाटित करना ही उनके साहित्य का उद्देश्य रहा है । आगे उनके संपूर्ण कथासाहित्य को विभिन्न अध्यायों में विभाजित कर विवेचना की जायेगी । क्योंकि मिथिलेश्वर ने ग्राम्य जीवन को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक धार्मिक दृष्टि से चिंतन किया है ।

संदर्भ

1. डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ - पृ 02
2) विवेकी राय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन पृ 65
3) सुदर्शन कहानी की कहानी पृ 03
4) डॉ संगिता पाटील अप्रकाश्प साहित्य
5) डॉ नगीना जैन - आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास पृ 104
6) डॉ. कैलास प्रकाश - प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास पृ 188
7) गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ 126
8) प्रेमचंद - मानसरोवर - पुस की रात पृ 126
9) शान्तिप्रिय द्विवेदी - युग और साहित्य पृ 283
10) प्रेमचंद - गोदान पृ- 396
11) डॉ नगीना जैन - आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास पृ -116
12) डॉ पदमसिंह शर्मा - वृदावनलाल वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व पृ 225
13) नरपतचन्द सिंघवी - महाकवि निराला का कथा साहित्य पृ 50
14) डॉ ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ पृ 168
15) शिवपूजन सहाय रचनावली पृ 415
16) यशपाल मनुष्य के रूप पृ 84
17) डॉ ज्ञान अस्थाना , हिन्दी उपन्यासों मे ग्राम समस्याएँ पृ 173
18) डॉ वासुदेव हिन्दी कहानी और कहानीकार पृ 240
19) शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास पृ 138

20) फणीश्वर नाथ रेणू - मैला आंचल- की पृष्ठ भूमि से

21) गोपाल राय -हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ 243

22) गोपाल राय- हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ 251

23) डॉ. भगवत- स्वरूप नागार्जून के उपन्यासो में आचंलिकतत्व- पृ -102

24) डॉ बेचन- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य- पृ- 47

25) डॉ भगवत स्वरूप - नागार्जून के उपन्यासों में आंचलिक तत्व- पृ- 102

26) शिवप्रसाद सिंह - अलग अलग वैतरणी- पृ- 98

27) मार्कडेय - उत्तराधिकार - पृ- 17

28) डॉ इद्रनाथ मदान - आज की हिन्दी उपन्यास- पृ- 56

29) गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ 260

30) गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ- 270

31) शिवप्रसाद सिंह - मुरदासराय पृ 225

32) श्रीपतराय, आकाशवाणी इलाहाबाद से दिए गए भाषण- 26/12/1955

33) डॉ रागेय राघव - कब तक पुकारू से संसदर्भ

34) डॉ प्रेमचंद सिन्हा - आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में समसापायिक जीवन की अभिव्यक्ति पृ 327

35) डॉ रघुनाथ देसाई - हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में समाज जीवन पृ 48

36) डॉ संगिता पाटील - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति - अप्रकाशित

37) गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ 244

38) गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास- पृ- 273

39) मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबुतरी -पृ- 193

40) मिथिलेश्वर - बाबूजी कहानी संग्रह के प्लैप से

41) मिथिलेश्वर - बाबूजी कहानी संग्रह के प्लैप से

42) मिथिलेश्वर - बन्द रास्तों के बीच अपनी बात पृ- 10-11

43) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले नेपथ्य से -पृ- 10

तृतीय अध्याय

मिथिलेश्वर के कथासाहित्य में ग्रामीण सामाजिक जीवन

ग्रामीण जीवन रूढि - परम्पराओं , अंधश्रध्दाओं में बिखरा पडा है । उनके जीवन में जो जडता, जीवन मूल्यों के प्रति अनास्था , अनाचार ,शोषण तथा पुरानी ओर आधुनिक पीढियों. का संघर्ष ग्रामीण समाज में अनाचार की भावना को प्रश्रय दिया जा रहा है । भौतिक भोगी वर्ग भी गांव में किसी न किसी मात्रा में पाया जाने लगा है आपसी रिश्तों में खटास देखी जा सकती है । रिश्ते नाते खोखले होते जा रहें है । अतिथि देवो भव की भावना निरर्थक होती जा रही है । अविश्वास की स्थिति पनपने लगी है । स्वार्थ लोलुपता का प्रादुर्भाव बढता जा रहा है । सच्चाई और ईमानदारी की बुनियाद खोखली हो रही है । गांव में परिवारों में विखंडन की स्थिति देखी जा सकती है । आपसी व्यवहार में कृषिमता नजर आती है । कही कही गांव भी आर्थिक सुबत्ता की ओर अग्रसर हुए है लेकिन सामाजिक स्तर पर उतने हम विकसित नही हो पाये है । गांवों में बौध्दिकता भी बढने लगी है गांव का युवक शिक्षा प्राप्त कर गावों को जब लौटकर देखता है तो उसे निराशा ही हाथ लगती है क्योंकि ग्राम्य समाज आज भी वही पुराने मूल्यों को त्यागना नही चाहता जो जर्जर हो चुके है । आधुनिक दौर के कारण परिवार में एक दूसरे के प्रति आशकांऍ बढने लगी जिससे परिवारों में टूटन की स्थिति निर्माण हा रही है । गाव की शिक्षित पीडि शहर में बसने लगी है जो गांवों में लौटना नही चाहती । वह शहरी चकाचौंध में खो गया है । गावों में आज भी वर्ग संघर्ष तथा उनके बीच राजनीति चलती रहती है । जिससे बेईमानी , झुठापन , धोखेबाजी पनप रही है । जिनके कारण ग्राम्य संस्कृति बडे ही संक्रमण काल से गुजर रही है ।

ग्राम्य जीवन के सामाजक जीवन में ढॉचागत परिवर्तन स्पष्ट रूपसे देखे जा सकते है । जिनके कई कारण हो सकते है । आर्थिक सुदृढता भी एक कारण है । स्पष्ट है कि गावों में परिवर्तन देखे जा सकते है । इस बारें मे रामदरश मिश्रजी अपनी टिप्पणी करते है - "गावों का स्वरूप भी बहुत कुछ बदल गया है । वहॉ के भी जीवनमानों में, शहरी जीवन मानां का संक्रमण हो रहा हे । परम्परा और प्रगति, अंधविश्वास और विज्ञान स्वार्थ लिप्सा और सरलता का संघर्ष गावों की जीवन स्थिति को नई भंगिता प्रदान कर रहा है" ।[1]

ऐसा माना जाता है कि जिस देश के लोग सबसे जादा शहरों में बसते है उस देश का आर्थिक और सामाजिक विकास अधिक होता है । हमारे देश का ठिक इसके अलग है । क्योंकि 70 प्रतिशत से भी ज्यादा भारतीय लोग गावों में बसते है । इस संदर्भ में डॉ वर्षा मिश्र लिखती है - "अर्थ शास्त्रियों की निगाह में ग्रामीण जीवन में गरीबी का दुष्चक्र है आय का स्तर निम्न होने से बचत का स्तर निम्न है । फलतः पूँजी विनियोजन का स्तर भी निम्न है । पूँजी निर्माण की दर निम्न होने से वृध्दि दर स्थिर है । अतएंव आय बहुत कम है । शिक्षा का स्तर निम्न होने से व्यवस्थापन का स्तर भी निम्न है, फलतः विकास की दर भी निम्न है" ।[2] इन सबके कारण सामाजिक जीवन में जकडी व्यवस्था, अंधविश्वासो के कारण परिवारों में टूटन, शोषण, अन्याय, अत्याचार और घुसखोरी के कारण गावों का विकास असंभव है । आजादी के बाद सरकार की ओर से कई योजनाएँ शुरू की गई । लेकिन वह योजनाएँ गाव के अंतिम मनुष्य तक नही जा पाई । चंद मुठ्ठीभर लोगों ने उसका फायदा उठाया । जिसका मूल कारण शिक्षा का अभाव है । गांव का व्यक्ति अपनी तरक्की चाहता है लेकिन यह व्यवस्था उसके विकास मे रोडे अटकाती है । डॉ वर्षा मिश्र लिखती है- "ग्रामजीवन पूर्णतः त्रिशकु की तरह अधर में है । पुरातन से वह मानसिक रूप से कट नही पाया है और विज्ञानाश्रित आधुनिक सभ्यता के प्रति उसके मन में आकर्षण है" ।[3] इन सारी समस्याओं को काफी करीब से मिथिलेश्वजी ने देखा भी है और स्वयं भोगा भी है । क्योंकि उनका जन्म ही एक कायस्थ परिवार में हुआ है । भोजपूर के बैसाडिह गाव उनका पैत्रिक गांव रहा है । जिसके ग्रामीण आज भी इन सारी विपदाओ को वहन कर रहें है । और जो व्यक्ति इन पीडाओं से गुजरा हो तथा जिसे इस अर्न्तवेदना ने झझोंडा हो वही अपनी कलम से इसे मूर्त रूप दे सकता है । मिथिलेश्वर जी ने वही साहित्य में रेखांकित किया है । इस संदर्भ यही कहा जा रहा है कि- "जमीन से जुडा कोई संघर्षशिल व्यक्ति विभिन्न समस्याओं से जूझते हुए कैसे रचनात्मकता ग्रहण करता है तथा संवेदना के धरातल पर अपनी रचना प्रक्रिया में असंगतियों के खिलाफ आलोचनात्मक विवेक जाग्रत करने की कोशिश करता है ।

एकलेखक के जीवन संघर्षो के तहत आजादी के बाद के गांवों की बेबाक अन्तः कथा प्रस्तुत करनेवाली इस कृति में जातिगत व्देष , खेती के कठिन और जटिल संघर्ष, लिंग भेद आदि निरन्तर विस्तार पाती अराजक स्थितियॉ मन को आहत करती है ।

बावजूद इसके अभावों से जूझते हुए ग्रामीणों का अस्तित्व रक्षा के लिए प्रखर संघर्ष और फिर गांव से टूटने और जुदा होने की पीडा तो दर्ज है ही, साथ ही शहरी समाज में मध्यवर्गीय जीवन की तल्ख सच्चाइयों का खाका भी इस कृति को अहम बनाता है" ।[4]

स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी ने ग्रामीण सामाजिक जीवन के अनेकों तथ्यों को उघाडने की कोशिश की है । जिसमें गरीबी, शहरी ग्रामीण जीवन का बदलाव , आधुनिक पीढि की विचारधारा, ग्रामीण जीवन के नीति मूल्य, मजदूर तथा अन्य कर्म करनेवाले लोग ग्रामीण नारी जीवन, सवर्णा व्दारा छोटी जातियों का शोषण कृषकों की त्रासदी लुटेरों के साथ संघर्ष, गांव का परिवर्तन आदि कई विपदाओं का लेखा जोखा को अपनी कहानियों में स्थान दिया है । जिसका विवेचन आगे के अध्यायों में किया जायेगा ।

मिथिलेश्वर जी ने अब तक बाबूजी, बंद रास्तों के बीच दूसरा महाभारत, मेघना का निर्णय, तिरियाजनम, हरिहर काका, एक में अनेक, एक थे प्रो. बी लाल भोर, होने से पहले, उस रात की बात आदि कहानी संग्रहों का सृजन किया है तथा झुनिया, युध्दस्थल, प्रेम न बाडी उपजै, माटी कहे कुम्हार, से सुरंग में सुबह, पानी बीच मीन पीयासी आदि उपन्यासों को रेखाकिंत किया है । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । तथा आंचलिकता की अधिकता या उन्होंनें अपनी रचनाओं में आंचलिकता का खीचतान करके लाने की कोशिश नही की है । क्योकि उनका साहित्य सुधी पाठक तथा विद्वानों व्दारा सराही गई है । मिथिलेश्वरजी ने सर्व प्रथम ग्रामीण वातावरण की तथा बाद में शहरी परिवेश की कहानियॉ लिखी लेकिन उनका संघर्षशील चरित्र कभी परदे से हटा नही । स्वयं लेखक भी अपने लिखने के कारणों की चर्चा इस प्रकार करते है- "मेरी नंगी छोटी बच्ची जब मुझसे जांघिये की मांग करती है और मैं अपनी जेब खाली पाता हूॅ । मेरी कहानियॉ तभी जन्म लेती है । निर्भिक होकर सही बोलने के आरोप में जब कोई साहब अपने चपराशी से गर्दनिया हिलाकर मुझे ऑफिस से बाहर खदेड देते है तब मैं अपमानित होकर अपने घर लौटता हूॅ । अपमान बोध से ग्रस्तित मै रात रात भर सो नही पाता हूॅ । मेरी कहानियॉ उसी रात जन्म लेती है । पत्नी की मॉगो को नजर अन्दाज करते बच्चों की आवश्यक इच्छाओं का हनन करते, रोजगार दप्तर से लौटते छोटे भाइयों के चेहरो की निराशा को पढते मैं सुबह को शाम में बदल देता हूॅ । फिर रात में ऊबड खाबड चौकी पर बिछी हुई पतली सी चादर मुझे बरी तरह गडने लगती है । मैं सो नही पाता हूॅ ।

उठ उठकर बैठ जाता हूँ । फिर बाबूजी की मृत्यु से लेकर अपनी छोटी बच्ची की मृत्यु तक के यातनादायी सिलसिले मेरी अॅखों के सामने से गुजरने लगते है । बस तभी मेरी कलम दनादन कहानियॉ उगलने लगती है" ।[5]

भारतीय ग्रामीण समाज जीवन आज भी गरीबी की विपदा भोग रही है । ग्रामीण क्षेत्र में अमीरों की हवेलियों में काम करनेवाले लोगों का बहुत ही शोषण होता है उन्हे निश्चित तौर पर वेतन नही दिया जाता है । निर्धनता के कारण वे भी गालीगलौच तक सह लेते है । 'एक और हत्या' कहानी मे अमीर हरपालसिंह के यहॉ जगेसर काम करता है उसे इस प्रकार की गॉलियॉ सुननी पडती है - "साले तुम्हे पच्चीस रूपया महिना , लत्ता कपडा और खाना क्या इसलिए देता हूँ ? यह तुम्हारी आज की आदत नही, बल्कि रोज की है । एक तो तुम लेट बाजार जाते हो , दुसरे आते भी है , लेट इस पर भी एक न एक सामान छोड ही देते है । इधर भैंस छटपटा रही है । एक नांद भी सानी नहीं दिया गया है उसे । तुम्हारी सब हे-कडी अब जल्ही खत्म करूँगा । कहीं से खोजकर मेरा सब रूपया लौटा जाओ । देखेंगे, तुम कहॉ जाकर बाबू बनते हो ? कौन रखेगा तुम जैसे देह चोर को ? मुझे तो खेती गृहस्थी करनी नहीं है । सब बदोबस्त कर देता हूँ । दूध के लिए एक भैंस रखी है तो उसके लिए हजारों चर-वाहें है । देखूगॉ कौन देता है एक भैंस पर तुम्हें पच्चीस रूपया" ।[6] इतनी सारी भर्त्सना पूर्ण बाते ं सुननेपर भी जगेसरा के सामने कोई और दूसरा रास्ता नही है । उसे गुस्सा आता है लेकिन थोडी ही देर में वह शांत हो जाता हैं । जगेसरा की यही यातनाएँ लेखक प्रकट करते है ऐसे समय उसका सारा व्यक्तित्व चिनगारियों की तरह सुलगने लगता और उनके जबडे तोड देने के लिए उसकी मुट्ठियॉ अनायास ही भिंच जाती । लेकिन कहीं और किसी बिन्दु पर उसके आंतक के जाल से वह अपने को बरी नहीं पाता । शायद इसी कारण अपने अंदर के तूफानी झंझावत को भी वह घोटकर पी जाता" ।[7] जगेसरा बाजार जाते वक्त उसे कुत्ते ने काट लिया । तब उसकी दवादारू करने के बजाय मालिक उसे डाटकार लगाता हैं । जिससे वह बिमार पड जाता है । जगसेरा गरीब है लेकिन स्वाभिमानी है । वह कहता हैं नही वह झुनिया की हसुली बेचकर अस्पताल नही जायेगा, आखिर वह जी कर क्या करेगा ? उसके नही रहने पर कौनसी आफत घर में आ जायेगी और कौनसी आफत आज नहीं है" ?[8] स्पष्ट है कि मजदूरी करने वाले लोगो

की कोई अहमियत नहीं है । उसे नौकर तथा गुलाम ही समझा जाता है । यही मिथिलेश्वर अपनी इस कहानी से प्रकट करना चाहते है ।

मिथिलेश्वर जी ने अपने कथासाहित्य में ग्रामीण और शहरी जीवन की तुलना की है । वैसे सच्चाई यह है कि गांवों आज भी कहीं न कहीं इन्सानियत बची हुयी है । नगरों में ऐसा नही देखा जाता । वे तो अपने काम से काम रखते हे । शहरों में पैसा कमाने की होड लगी है । और इस दौड में आदमी अपनी पहचान खोता जा रहा है । शेष जिन्दगी ऐसी ही एक कहानी है । जिसकी नायिका विधवा है । प्रस्तुत कहानी में ग्रामीण और शहरी वातावरण की तुलना की गई है । मिथिलेश्वर भी इस बात से सहमत होते है कि शहरों से अच्छा गावों का माहौल होता है । इस विधवा का बचपन से लेकर जवानी, शादी और वैधव्य यह सारा उसने शहर में रहते ही देखा है । लेकिन उसके पति जो पटना के सचिवालय में क्लर्क की नौकरी करते थे । उन्हें गांव से बग लगाव था । उनकी भोजपुर जिले में ही तीन बीघा जमीन भी थी । दूसरी और नायिका के पिता जमशेदपुर के एक कारखाने में क्लर्क थे । और एक सरकारी क्वार्टर में अपने परिवार समेत रहते थे । उनके तीन बेटे और एक पुत्री थी जिसे उन्होंने बडे लाड प्यार से पाला था । बाबूजी शहरी जिंदगी से उब चुके थे । क्योंकि आये दिन मारकाट होती है । जिन्दगी का यहॉ कोई भरोसा नही है । पडोसियों को एक दूसरे से कोई दयाभाव नही है । लेकिन गावों में पडोसी के यहॉ कोई दुखद प्रसंग आता है तो सारा गांव उसके लिए दौड पडता है । नायिका के पति हमेशा यही बात कहते रहें है - "गावों में कितनी शांति होती है । नायिका ने यह बात पत्र-पत्रिकाओं में भी पढी है । अब वह सारा वैधव्य जीवन गांव में ही बिताना चाहती है । इस बारे में नायिका के पति उसे समझाते हुए कहता है- तुम जानती नही गावों का जीवन कितना सुखमय है । यहॉ तो किसी से किसी को कोई मतलब नहीं । सबकुछ पैसा ही है यहॉ मनुष्यत्व नाम की कोई चीज नही, हर जगह सिर्फ मक्कारी है - फरेब" ।[9] वह आगे भी गांवों के जीवन की प्रशंसा करते है - लेकिन गांवों में देखो थोडे में ही लोग कितने संतुष्ट और सुखी है । एक दूसरे के दुख: दर्द में कितना साथ देते है । बडे बुजुर्गो की कितनी इज्जत है । किसी के घर चोरी होती है तो हल्ला सुनते ही लाठी भाला लेकर लोग जुट जाते है । कोई किसी के साथ मनमानी नही कर सकता । विधवा औरतो को लोग देवी की तरह समझते है" ।[10] लेकिन जो पतिव्दारा वर्णित गावों की जो स्थितियॉ है उनमें अब काफी परिवर्तन हो गया है । तब विधवा सोचती है और जो उसे बताया गया था । उसके बारें में तब वह

कहती है - गॉव के सम्बन्ध में अपने पतिव्दारा कही जानेवाली तमाम बातें । और फिर पत्र पत्रिकाओं में पढी जानेवाली ग्रामीण कहानियॉ उन्हें बिलकूल बेमानी और झूठी लगने लगी है । वह नहीं समझ पा रही है कि पति की बातें और पत्र पत्रिकाओं की कहानियॉ वाले गॉव कहॉ है" ?[11] इससे स्पष्ट हो जाता है कि पुराने जमाने के गांव अब नही बच गये है । उनमें काफी परिवर्तन देखा जा सकता है ।

मिथिलेश्वरजीने अपने साहित्य में जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना की है । 'बाबूजी' कहानी में इसे देखा जा सकता हे । बाबूजी मूल रूपसे ललनासिंह है । ललनासिंह बडे ही स्वाभिमानी ढंग के आदमी है । वैचारिक आजादी पर वे हमेशा बल देते है । वह पुरूष नारी की समानता पर जोर देता है । उसे संगीत, नृत्य, नौंटकी आदि के शौकिन है उसी क्षेत्र के धनी व्यक्ति की लडकी से ललनासिंह की शादी होती है । लेकिन उनकी पत्नी को कुऑरेपन में ही लांछन लगा हुआ था । उसकी ललनासिंह ने कोई पर्वा नही की । लेकिन समाज में उनकी बदनामी हुयी । तबसे ललनासिंह शराबी हो गये है । पत्नी ने बहुत समझाया लेकिन वह माने नही । तब उनकी पत्नी मायके चली गई । पत्नी के जाने के बाद नशा, गीत, नृत्य के इनके शौक बढते गए । नौंटकी कम्पनी खोली । अब शायद समाज पर से उनका विश्वास टूट चुका था । जब उनकी बेटी की शादी हुयी तब नौंटकी की कम्पनी बुलाई गई और खूद वे तबला बजा रहे थे । उनकी कम्पनी की नर्तकी का जब अपमान हुआ तो उन्होंने लोगो को बुरा भला कहा । तब किराये के लठै तों ने उनकी जमकर पिटाई की । ललनासिंह उस समय औरते के संदर्भ में कडी टिप्पणी करते है - "आपके घर की औरतें पराश्रीत है । वे कोई भी काम छिपाकर करती है । रोटी से लेकर अन्य चीजों तक के लिए आप पर आश्रित हैं । लेकिन यह औरतें पूरी तरह आजाद है । खुद कमाती है और मजे से खाती है । अपनी किसी भी इच्छा के लिए किसी पर आश्रीत नही रहती" ।[12] स्पष्ट है कि बाबूजी दुनिया की परवाह नही करता । उसे जो सही लगता है । वह बडे ही बेबाकी से कह देता है । क्योंकि कलाकार का जीवन संवेदनशील और भावूक होता है । उनकी वजह से दुनिया उसका व्देष करती है । वह अच्छे बुरे की बात करता है । साथ ही साथ हरेक को आत्मनिर्भर बनाने की सोचता है । नारी परतंत्रता पर भी वे अपनी बात कहते है । उसे स्वयं गुलामी से मुक्त होना चाहिए तथा समान अधिकार पाना चाहिए नारी के बारें में वह कहता है मैं मर्द हूॅ और इसलिए कभी कभी किसी औरत के साथ रह लेता हूॅ । और जिस औरत के साथ रह लेता हूॅ, उसके साथ कभी जोर जबरदस्ती नहीं करता हूॅ । वह औरत जबरन मेरे

पास नही रहती है । मुझे उसके शरीर की आवश्यकता रहती है, तो उसे भी मेरे मर्द शरीर की चाह रहती है" ।[13] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी ने इस कालजयी कृति के साथ यह साबित किया है कि नर नारी को समान रूपसे अधिकार मिले । और कोई किसी पर आश्रीत ना रहे ।

मिथिलेश्वरजी ने ग्रामीण नयी पीढि का भविष्य क्या होगा इस पर 'पत्थर की लकीर' कहानी पर चर्चा की है । कहानी के बाबा हरदयाल उनके ही गाव की एक अछूत कन्या से विवाह कर गांव में क्रांति की पहल करते है क्योंकि आज तक गांव में कभी किसी ने ऐसा काम नही किया है । जिसके कारण घरवाले उसकी हिस्से की जायदाद देकर उसे घर से बाहर कर देते है और गॉव के लोग भी । बाबा अपनी अछूत कन्या को लेकर खेत में कुटिया बनाकर रहते है । कुछ दिनों बाद उसे पुत्रप्राप्ति होती है । उसी समय तीव्र बाढ आती है । सब नष्ट हो जाता है । तब उसे कोई सहारा नही देते । फलस्वरूप पत्नी और बच्चे की मृत्यु हो जाती है । सारे गांव के लोग बाबा से नफरत करते थे । जब पत्नी और बच्चा चल बसा तो बाबा का जीवन ही बदल गया । बाबा फिर से अपनी खेती बाडी के कार्य में जुट गया । भैंस के दोनों समय का दूध अकेले पी जाते थे ।

वह अब काफी शक्तिशाली बन गये है । गांव के लोग उनके बारें में बहुत कुछ बुरा सोचते थे ।यहॉ तक की भूत प्रेतों की भी चर्चा करते थे । उनके ही गांव में फुलिया जेमिन थी जिसका पति चपराशी की नौकरी कही और करता था । जिसके कारण वह अपने गांव कभी कभी आता था । तब फुलिया पर गांव का ही एक आदमी सखीचन्द पाण्डे आकर्षित होता है जिससे वह गर्भवती हो जाती है । अपने पति के आने से पहले उस गर्भ को वह गिरा देना चाहती थी । जब फुलिया का पति घर आता है तो उसे मार पिटकर उसे घरसे बाहर कर देता है । फुलिया बाबा के पास आकर सारी हकिगत बयान करती है और सारा सच सच बता देती है । इस बात से गुस्सा होकर बाबा गंडासा लिये सखीचंद के घर पहुचता है और उसे धमकाता है कि फुलिया को अगर तुमने सहारा नही दिया तो मैं तुम्हारा वध कर डालूगा । अपनी इज्जत बचाने के खातिर सखीचंद उसे अलग कोठी और खाने पीने व्यवस्था कर देता हैं । इस घटना के बाद गांव के लोगों ने बुरा कर्म करना छोड दिया है । लेकिन जब बाबा की मृत्यु होती है तो सारा गांव उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होता है लेखक भी उनमें से एक है और बाबा के जीवन की परिभाषा व्यक्त करते है - "किसी के अनुसार जिन्दगी अनबूझ पहेली है ।

किसी ने इसे झरना और नदी के रूप में देखा है । किसी के अनुसार वह चढती हुई धुप है, तो किसी के अनुसार यह ढलती हुयी शाम है । किसी ने इसकी तुलना नाटक के पात्रों की भूमिका से की है, तो किसी ने इसे मेला समझने की कोशिश की है और पानी के बुन्दे के मानिद इसके अस्तित्व को क्षणभंगुर बताया है । बाबा से आंतकिंत होकर लोगों ने गलत काम करना छोड दिया गरीब और निम्न जाति के लोग उन्हें भगवान मानने लगे थे । बाबा के अनुसार जिन्दगी कुछ और नहीं अपने अपने बूते और तजुर्बे से निर्माण की गयी एक याददाश्त होती है ।[14] इससे स्पष्ट होता है कि मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण नयी पीढियों में सुधार और क्रांति लाने हेतू 'पत्थर की लकीर' बनायी है ।

मिथिलेश्वर जीने ग्रामीण नारी जीवन की अनेकों त्रासदियों से हमे रूबरू कराया है । नारी प्राचीन समय से शोषित ही रही है । हमें हमारे धर्मग्रंथ अलग कहानी कहते हैं । लेकिन हम देखते है कि नारी हर समय पराश्रीत रही है । सदियों से नारी अपनी आजादी के लिए संघर्षरत है । प्रथा खेतान की टिप्पणी इस संदर्भ में आवश्यक है वेद , पुराण, संहिताएँ, सामाजिक ग्रंथ हर जगह इसी पुरूष संतान की प्रशस्ति है । हमारे जातीय सामाजिक अचेतन में पुरूषों की श्रेष्ठता की यह धारणा इतनी अधिक रची बसी है कि हम इससे भिन्न सोच के आनन्द से वंचित रहती है ।[15] नारी समस्याएँ सदियों पहले भी थी । और आज भी बनी हुयी है । जैसे विधवा समस्या, विवाह समस्या अनमेल विवाह, वैश्या समस्या सती विवाह , बालविवाह आदि । मिथिलेश्वर जी ने इन सारी समस्याओं का समाधान ढूढने की कोशिश की है । 'संगीता बॅनजी' कहानी में पुरूषव्दारा नारी को देखने और समझने की कोशिश है । प्रोफेसर मल्होत्रा संगीता बॅनजी से विवाह करते है । लेकिन उनकी मृत्यु के बाद संगीता विषम स्थितियों से गुजरते हुए अपने पैरों पर खडी होती है । और नारी निकेतन की संस्था खोलती है । समाज उसके विचारों से सहमत नही होता है । फिर भी वह निडरता से संस्था को आगे बढाती है- "अपनी इस पच्चीस साल की अवधि में इस संस्था ने पांच हजार ऐसी असहाय लहकियों की शादी की है जो दहेज , जाति-पांति तथा सामाजिक रूढियों के चलते जिन्दगी भर अविवाहित रहनेवाली पीडादायक स्थितियों से गुजरने लगी थी । इस संस्था ने इसी अवधि में दो हजार विधवा विवाह भी किये है । इस संस्था ने लगभग तेरह साल ऐसी महिलाओं को आश्रय दिया है जा लावारिस , सामाजिक रूपसे बहिष्कृत तथा अपने पति और परिवार

व्दारा परित्यक्त थी" ।[16] जो समाज नारी को संकुचित दृष्टिसे देखता है तथा नारी को केवल भोग की वस्तु मानता हे लेकिन जब वही नारी अपने पैरों पर खडी होकर कुछ कर दिखती है । तब समाज उसकी इज्जत करना सीख जाता है । लेकिन समाज की मानसिकता के बारें में यही कहा जा सकता है- वे नारी को पुरूष की भोग्या मानते है । नारी स्वतंत्र होकर अपनी आजीविका और अपने व्यक्तित्व को संभाल सकती है यह बात उनके गले के अन्दर नहीं उतरती है । उसे पुरूष आश्रीता होकर ही जीना है" ।[17] लेकिन संगीता बॅनजी समाज को दिखा देती है कि नारी अब अबला नही वह सबला हो गई है ।

'पहली घटना' नामक कहानी में मिथिलेश्वरजी ने बाल विधवा लडकी का ब्याह कराया है । उसी के गांव में नया पीढि का युवक विपिन से उसका विवाह किया जाता है । जो शहर मे किसी कॉलेज में अध्यापक है । मीना का बहुत कम उम्र में विवाह हो गया था । लेकिन कुछ दिनां में ही उसके पति की मृत्यु हो जाती है । ओर वह विधवा हो जाती है । उसने गांव में रहते मॅट्रिक की शिक्षा पाई थी । तब उसने ट्रेनिग कोर्स पूरा कर स्कूल में वह नौकरी करने लग जाती है । और अपने पैरों । पर खडी होती है । वह विपिन से शादी करन के लिए जब तैयार हाती है तो परिवार और समाज उसके खिलाफ हो जाते है । मीना का भाई रजामदी का नाटक करता है । उसके घरवाले भी मीना को मार डालने की योजना बनाते है । लेकिन किराये के हत्यारे ही विपिन के साथ मीना को भगाने में मदद करते है । स्पष्ट रूपसे मिथिलेश्वर चाहते है कि गांवों में मीना जैसी बाल विधवा और विपिन जैसे नवयुवक है तो समाज की परम्पराओं को बदला जा सकता है । मिथिलेश्वर इस के बारें में कहते है - पिछछडे और गरीब वर्गो को यह स्वंतत्रता इसलिए है कि किसी भी परिवार का कोई सदस्य परावलंबी नही होता है । कल की आयी ब्याहता कन्या भी खेत में रोपनी करने चली जाती है" ।[18] याने स्त्री को अपना सम्मान पाना है तो उसे आत्मनिर्भर बनना होगा ।

नारी त्रासदी की अगली कहानी है 'नरेश बहू' । जो नारी होने का दुख भोग रही है । उसका परिवार ही उसका शोषण करता है । तब वह भागने के लिए मजबूर होती है । तो बीरू उसकी रक्षा के लिए उसके सामने खडा होता है । बीरू का जीवन भी अनेकों अनेक त्रासदियों से गुजरा है । उसके पिता ने सारी कमाई शौक में खत्म कर दी है । और पत्नी की मृत्यु के बाद उसने किसी बदचलन औरत को अपने घरमें रखा

है । बीरू उसी औरत का पुत्र है । बीरू को अपने परिवार से कोई सुख नही मिला लेकिन बीरूने अपने पिता की खुब सेवा की । बीरू हमेशा नरेश बहू की रक्षा करता है लेकिन उसके दुश्मनों ने उसे खत्म कर दिया । बहू उसकी प्रतीक्षा करती है । क्योंकि बीरू जैसा गांव में कोई नौजवान नही है जो असहाय नारी की रक्षा कर सकें । गावों की मानसिकता के सदर्भ में लेखक प्रो. बी लाल कहानी में लिखते है - गांव जीवन के एक लम्बें अनुभव के बाद एक बार उन्होंने मुझसे कहा था- "बेटा , अपने गांव के लोगों के ऊपर बातों और विचारों का उतना असर नहीं होता है जितना घटनाओं का । इसीलिए गांव के लोगों को कोई भी बात घटनाओं के माध्यम से ही समझानी चाहिए" ।[19]

'शरीर से लाश तक' एक गरीब निर्धन हलवाई लडकी की कहानी है । अपने माता पिता वृध्दावस्था के कारण काम करने में असमर्थ है । इसीलिए वह गांव गांव जाकर जलेबियॉ बेचती है लेकिन उसकी मजबूरी का फायदा समाज उठाता है । उसका भाई भी किसी दुर्घटना का शिकार हो जाता है । उसके पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी पर हैं । लेकिन समाज उसे इज्जत और मान सम्मान से जीने नही देता । पढे लिखे नौजवान भी उसको वासना की नजर से देखते है । तबे उसे अपने अपाहिज भैय्या की बातें याद आती है उसे भैया की बात याद आती है । सचमूच स्कूल और कॉलेज की पढाई एकदम बेकार है । पढने लिखने से समझ और ज्ञान नही होता । मोटी मोटी किताबें सिर्फ डिग्री के लिए ही पढी जाती है । अन्त में वह भी पुरूष व्दारा छली जाती है । 'न चाहते हुए भी' कहानी की नारी अपना पेट पालने के लिए वैश्या वृत्ती को स्वीकार करती है । भालू नचाकर मदारी का खेल दिखानेवाली यह औरते अनिच्छा से यह सब करने के लिए मजबूर है । आज इस प्रकार के लोगों का जीवन जीना दूभर हो गया है क्योंकि एक पैसे दो पैसे फेंककर देते है । जिसमें पेट की आग नही बुझाई जा सकती है । 'शांता नाम की एक लडकी' कहानी अनाथ बच्ची को एक बुढिया व्दारा पालने की कहानी है । बुढिया को भी कोई दूसरा सहारा नही है । बुढिया उसे ही अपना सबकुछ मानकर जीती है । सब्जी बेच बेचकर बुढिया उस बच्ची को बडा करती है लेकिन एक दिन बुढिया की मृत्यु होती है, तो समाज के राक्षस उस बच्ची का शिकार कर लेते है । उसके बारें में लेखक कहते है - "कस्बे के इस छोर से उस छोर तक शांता की बदनामी फेल गई थी । बच्चे बच्चे की जुबान पर उसकी जवानी की कहानी

मचल रही थी । मैने उसे देखा मेरी अनुभवी ऑखो ने साफ जान लिया , शांता की जवानी सहज रूप से आयी हुई जवानी नही , बल्कि बलात बुलायी गई है" ।[21]

'सावित्री दीदी' कहानी में नारी नारी की दुश्मन बनने की शोक कथा है । परिवार में लडकी पैदा होना आज भी बोझ माना जाता है । क्योंकि उसकी शादी और दहेज की चिंता सताती है । इसलिए स्वयं मॉ भी अपनी ही बेटी को जीने नही देती है । सावित्री की मॉ भी अपनी बेटी को आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर देती है । मॉ कहती है दस हजार लेगी ----- दस हजार लेने के लिए ही आई है ------ इसे सौरी में ही नमक चटाकर मार देना चाहिए था । अब हमें कंगाल बनाकर ही यहॉ से जाएगी । निवेदक की टिप्पणी है- "मैं सोचता हूँ क्या मॉ सावित्री को बेरहमी से इसीलिए डॉटती और खटाती थी कि उनकी शादी में जो दस हजार खर्च होनेवाले थे, उनमें से कुछ भी वसुल कर सके" ?[22]

'जी का जंजाल' कहानी की विधवा चार बेटों और दो बेटियों की मॉ होकर भी दर दर की ठोंकरे खाने के लिए मजबूर है । इनके चार पुत्र दो अलग अलग शहरों में रहते है । चारों ने मिलकर मॉ को तीन तीन महिनों के लिए मॉ को अपने पास रखने का निर्णय लिया है । लेकिन जिसकी भी बारी आती है । उनकी पत्नियॉ ठिक से खाना तक नही देती - " जिसके यहॉ उसकी पारी शुरू होती है, उसके यहॉ वह बोझ बन जाती है । बहुऍ उन्हें ताना देती है तथा उपेक्षा पूर्वक बासी और अरूचिकर भोजन देते हुए चाहती है कि जल्द ही जल्द उनकी पारी खत्म हो जाय" ।[23] मॉ कभी कभी अपनी बेटियों के पास भी जाती है तो उनके पतिओं व्दारा भी उसे कोसा जाता है । बेटों को भी चिंता सताने लग जाती है कि कही मॉं अपनी बहनों को संपत्ती ना दे दे । पर मॉ-बाप अपने पुत्रों के लिए जीवन भर संघर्ष करते है । खुद भुखे रहकर अपने बच्चों को खिलाते है । अपने पेट काटकर बच्चों की परवरिश करते है । और वही बच्चे बडे हाकर अपने माता पिता की अवहेलना करते है । लेकिन अब समय बदल गया है । लेकिन हर मॉ बाप को अपने बुढापे की चिता स्वयं करनी होगी । मॉ बाप यह भूल जाते है इन बच्चो की मॉ भी यही सोचती है अगर शुरू में ही इस सत्य का ज्ञान उन्हें हो गया होता कि बडे होने पर उनके बच्चे इस तरह उनसे मुँह मोड लेंगे तो उन्हें इतना कष्ट नही होता । इस विपत्ति को सहने के लिए वह तैयार रहती । लेकिन वह धोखा खा गई" ।[24]

नारी शोषण की दो महत्वपूर्ण कहानियॉ मिथिलेश्वर जी ने लिखी है वह है 'रात' और 'भोर होने पहले' । 'रात' कहानी की नायिका श्रमिक है । वह जोगींदर की शिकार होती है । और झुनिया के भाई थुरूपा के सम्बध जोगिंदर के नीरू के साथ । यह गावों की अजीब स्थितियॉ है । अपनी कामवासना मिटाने के लिए किसी से भी सम्बध बनाये जाते है और बिगाडे भी जाते है । जोगिंदर झुनिया को रात में भी काम के लिए बुलाता है और अपनी कामना पूरी करना चाहता है लेकिन झुनिया उसका विरोध करती है । और कहती है- "कमाती है तो खाती है । सो इस तरह कहीं भी कमा खा लेगी । रही शादी ब्याह की बात । सो कौन बडों की औरतों की तरह दुलहन बनकर घरमें बैठाता है उसे । जहॉ कही भी जायेगी , खुद कमाकर खायेगी । तो फिर कर लेगी किसी से शादी । रह लेगी किसी के साथ" ।[25]

उसी प्रकार 'भोर होने से पहले' कहानी में बुधनी की मॉ आदिवासी नारी है । जमींदारों के परिवारों में अब भी सामन्ती व्यवस्था बनी हुयी है । रविकान्त जमींदार के घर पर नेपाली बहादुर काम करता है । उसकी बुधनी नामक लडकी है । बुधनी को बुरे कर्म करने के लिए मजबूर किया जाता है ।तो वह गर्भवती हो जाती है । अपनी इज्जत बचाने के लिए बुधनी की शादी उनके ही नौकर बैजू से करवा दी जाती है । बैजू तय नही कर पाता कि इसे स्वीकार करे या नही । क्योंकि कुऑरी गर्भवती को स्वीकार करना आसान काम नही है । गांव के लोग जीना मुश्किल कर देते है । बैजू अपना गॉव छोडने के लिए मजबूर हो जाता है । गांवो मे आज भी ऐसे कुकर्म करनेवाली औरतों को क्रुर तरिके से मारा जाता है । जब कि दुष्कर्म करनेवाले पुरूष होते है उन्हें कोई सजा नही मिलती । केवल औरतों को ही इसका शिकार होना पडता है । जैसे घटियाने वाली औरत मुॅह बंद कर उसकी गर्दन के नीचे एक लाठी रखी जाती है और एक लाठी गर्दन के उपर । फिर दोनो लाठियों को कसकर दबाया जाता । इसके बाद जल्ह ही उस औरत के प्राण निकल जाते है । शरीर पर मारने पिटने और जलाने का कोई दाग नही दिखता । नाजायज पेट के मामले में पहले लोग यही करते थे" ।[26]

'गंगिया फुआ' कहानी की फुलमती देवी वैधव्य के कारण वह अपने मायके लौटना ही मुनासिब समझती है । गांवों में नारी का कोई दोष न होते हुए भी उस पर सारे दोष मढे जाते है । उसके भाग्य को ही कोसा जाता है - "जैसे गंगिया दीदी की किस्मत ही ओछी है । न जाने पूर्व जन्म से उसने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि

इस तरह दण्ड भुगत रही है" ।[27] फुआ अपने मायके आकर सारे काम करने लगी । उससे किसी को कोई शिकायत का मौका नही देती थी । इसी तरह उसकी सारी उम्र बीतती गई । लेकिन बुढापे में उसके शरीर ने उसका साथ देना छोड दिया । जब वह शिकार हुयी तो शुरू शुरू में सब लोग उसकी ओर ध्यान देने लगे । लेकिन बाद में उन्होने मुँह मोड लिया क्योंकि उनको पता था कि अब यह बचनेवाली नही । तब फुआ ने सभी रिश्तेदारों से कहा की उसके पास बहुत सारा पैसा है और मरने के बाद वह सबको बॉट देगी । फिर से लोग उसकी सेवाशुश्रषा मे लग गये । लेकिन सचमूच एक दिन फूआ मरी तो उन्होंने तलाशी के बाद कुछ भी नही पाया । तो उसे कोसने लगे - "यह शुरू की ही पातकी थी । झूठी ---। फरेबी । अपनी करनी से ही पति को खा गयी बॉझ रही ।[28]

'वैतरणी भौजी' में गर्भवती नारी को पति व्दारा त्याग देने की कहानी को व्यंजित किया गया है । वह अपने मायके भी नही जाना चाहती । वह किसी पर बोझ बनना नही चाहती मोल मजदूरी करके अपना पेट पालना चाहती है ।किन्तु यह ग्रामीण समाज जीवन में योग्य नही होगा । क्योंकि ग्रामीण समाज के लोग तो उसे किसी की शरण में जाने की बात कहेंगे । या किसी की रखैल बनाकर रहना पसंद करेगें । क्योंकि नारी को आजाद देखना नही चाहतें - "जैसे कोई औरत स्वतंत्र होकर जी ही नही सकती । बचपन उसे पिता के अधीन , जवानी में पति के अधीन तथा बुढापे में पुत्र के अधीन जीना होता है । यही सनातन परम्परा है । वह औरत इस परम्परा के विरूध्द जीना चाहती थी , इसीलिए समस्या यह खडी हो गई थी कि गांव में वह रहेगी किसके यहॉ ।[29] उसने कई बार इस गांव से भागने की कोशिश की लेकिन उसमें वह सफल नही हो सकी । क्योंकि नर भक्षी उसका बार बार शिकार करते रहे । और अतः उसकी यौन सक्रंमणों की बीमारी से उसकी मृत्यु हुयी । स्पष्ट है कि नारी को बेसहारा पाकर नर उसपर टूट पडता है और अपनी वासना का शिकार होता है । वैतरणी भौजी यह सम्मान तभी पाती है जब सारा गॉव उसका भक्षण करता है ।

स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजीने नारी त्रासदी की ग्रामीण कई कहानियॉ कई रूपों में लिखी है लेकिन उनमें सबसे मुख्य बात यही है कि नारी की समस्यायें अनेक है और वह आज भी बनी हुयी है । नारी सुधार के लिए हमें ग्रामीण मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है । अंधश्रध्दा और अंध परम्पराओं को त्यागकर नयी राह पर हमें चलना

होगा । विधवा विवाह को जोर शोर से उठाकर उसका पक्ष लेना चाहिए । बाल विधवा के भी विवाह होने चाहिए लडकी का जन्म भी लडके के जन्म के समान मानना चाहिए । ओर उसका भरण पोषण भी उसी प्रकार करना चाहिए । नारी ही नारी की दुश्मन होती है । यह धारणा भी बदलनी चाहिए । क्योंकि अपने खानदान के लिए लडका वारिस चाहिए इस भावना को बदलना पडेगा तब ही एक स्वस्थ भारतीय निर्माण होगा और पुरूष और नारी का भेद मिटेगा ।

उसी प्रकार नारी को अब शिक्षा प्राप्त कर अपने पैरों पर खडा होना होगा । आर्थिक उन्नति के आधार पर नारी का उध्दार होगा । मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में नव समाज की कल्पना कर नये युग की शुरूवात करने की कोशिश है । उनकी कहानियों को लेकर कथाकार भीष्म साहनी लिखते है- "उनकी कहानियॉ पढते हुए आज का ग्रामीण जीवन अपने पूरे यथार्थ के साथ हमारी ऑखो के सामने उभरता है , अपने सभी अंतर्विरोधों और विसंगतियों के साथ कही कोई त्याग लपेट नही, किसी पहलू को ढकने की कोशिश नही न ही उसे आंचलिक बनाने की कोशीश है । एक संतुलित वस्तुनिष्ठ दृष्टि हमारे सामने आज के ग्रामीण जीवन के पट खोलती चली जाती है । उस जीवन का त्रास उसके परंपरागत पूर्वाग्रह, जिनकी जकड उतनी ही भयानक है, जितनी समकालीन जीवन की विषमताऍ ।[30] उसी प्रकार मिथिलेश्वर ग्रामीण जीवन की जमीनी हकिकत जानते है । उनकी मानसिकता को पहचानते है । ग्रामीण चरित्रों पर मिथिलेश्वर की गहरी पकड है । इस कारण उनके चरित्र जीवंत प्रतीत होते है । भीष्म साहनी उनके चरित्र के बारे में कहते है- "मिथिलेश्वर की कहानियों के पात्र अक्सर हमें किसी संकट की स्थिति में मिलते है । उस संकट में जो केवल बाहरी संकट नही, भीतरी संकट भी है, विश्वास मान्यताओं और नैतिक मर्यादाओं का संकट और उनमें संघर्ष करता हुआ प्राणी मिथिलेश्वर की कहानियों का पात्र होता है" ।[31] वैसे ही मिथिलेश्वर की कहानियॉ प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में भीष्म साहनी मानते है । इस तरह कहानी पहले ही तनाव की स्थिति में आरंभ होती है । और धीरे धीरे उसका तनाव बढता जाता है । कही कही कहानियॉ भयावह भी हो उठती है लेकिन ऐसी स्थितियों में भी उनकी प्रामाणिकता ज्यो की त्यों बनी रहती है । यही कारण है कि इन कहानियों मे हम मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्तियों को अपने नग्न रूप में देखते है और चूँकि उनके पीछे

गहरी मानवीय सद्भावना पायी जाती है जिससे अनेक कहानियॉ मानवीय संवेदना का दस्तावेज बन जाती है ।[32]

शोषण दमन से पीडित बहुसंख्यक जन समुदाय की मुक्ति का आदोंलन का स्वर मिथिलीश्वर की कहानियों में मिलता है । 'मेघना का निर्णय' इसे 'कहानी संग्रह में' इस प्रकार की कई कहानियॉ मिलती है । 'यशपाल पुरस्कार' प्राप्त यह संग्रह की स्तुति करते हुए लिखा गया है- "सामाजिक सडी गली रूढियों को तोडकर अन्याय और शोषण के विरूध्द एक तेजस्विता लेकर खडे होने का संदेश 'मेघना का निर्णय' नामक इस संग्रह की कहानियों में मिलता है । मिथिलेश्वर शोषण और दमण से आक्रांत बहसंख्यक जन समुदाय की मुक्ति का आंदोलन उन्हीं के भीतर से छेडना चाहते है । उनके प्राय सभी कहानियों में निम्न वर्ग और मध्यवर्ग के जीवन की विषमताओं के साथ उस वर्ग की चारित्रीक दुर्बलता और उसके बीच क्रांति का उगता हुआ अंकुर दिखाई देता है" ।[33] अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना ही लेखक का कहानी साहित्य सृजन का उद्देश्य रहा है- "वे कहते है शोषण, अन्याय, अपमान, असमानता, अंधविश्वास और सर्वग्रासी भ्रष्टाचार के खिलाफ जनमत तैयार करने और लडने का काम करती है" ।[34]

'मेघना का निर्णय' कहानी श्रमिकों पर किये गये अत्याचारों के खिलाफ चेतना जगाने की कहानी है । ग्रामीण युवक मेघना शहर में मजदूरी करते समय ठेकेदार उसका शोषण करता है ।तो वह उन ठेकेदारों के खिलाफ मोर्चा बुलंद करता है- "हेड मिस्तरी मजदूरों का हमदर्द नही बल्कि दुश्मन है । वह मजदूरों का खुन चुसनेवाला है । मकान मालिक , मजदूर और बिस्तरी भेजने तथा अपनी निगरानी मे मकान बनाने के ऐवज में हेड मिस्तरी को काफी पैसे देते है । पूरे शहर में मिला जुलाकर हेड मिस्तरी को तीन हजार रूपये माहवारी पड जाते है । लेकिन हेड मिस्तरी का इससे भी पेट नही भरता । जिन मजदूरों के चलते उसे इतने रूपये मिलते है, उन मजदूरों में से भी वह एक रूपया काट लेता है । मालिक के प्रति मजदूर पांच रूपये रोज के हिसाब से हेड मिस्तरी लेता है । लेकिन मजदूरों को चार रूपये रोज के हिसाब से बॉटता है" ।[35] मेघना अपने साथी मजदूरों को एक साथ करके हेड मिस्तरी के हाथ के नीचे काम करने से मना करता है और स्वंतत्र रूपसे मजदूरी करते है । वह अपने हक के लिए

संघर्ष करने पर उतारू हो जाता है । एक दिन रेल बाबू से मुँह मोल लेता है । जैसे- "अब गांव के बाबूओं से भी टकराना होगा । बात सिर्फ शहर की हो तो कोई बात नही थी । लेकिन मालिक के साथ गांव के बाबू लोग भी मिल गये है । हम गांव के बाबुओं के बनिहार चरवाह तो नही कि वे अपना रौब हमें दिखायेंगे । हम उनकी जमीन पर नही बसे है । उनसे हमारा कुछ लेना देना भी नही है वे लाख मनमानी करते है तब भी हम उनके बीच नहीं जाते है । फिर वे हमारे बीच क्यों आते है ? हमें जान की बाजी लगाकर भी उनका जबाब देना होगा, नही तो वे हर बार इसी तरह शहर के मालिकों से मिलकर हमे दबाते रहेंगे" ।[36] स्पष्ट है कि शोषक और शोषित इन दोनों वर्ग में संघर्ष देखा जा सकता है ।

'कुचलती हुई लाश' कहानी मनुष्य कितना संकुचित हो गया है का चित्रण करती है । ऑफिस से निकलकर एक आदमी ट्रेन पकडना चाहता है । टिकट खरीदने के लिए काफी भीड है । ट्रेन का समय भी हो गया है । लेकिन कोई भी उसकी मदद नही करना चाहते हे । उसकी पत्नी बीमार है उसे इजाज की तुरन्त आवश्यकता है लेकिन उसके साथ इस प्रकार का अमानवीय व्यवहार हो रहा है । वह ट्रेन पर चढने की ना-काम कोशिश करता है । ट्रेन निकल पडती है और वह सोचते रह जाता है वह गिर जाता लेकिन गिरने से पहले ही वह प्लेटफार्म पर बैठ गया । न चाहते हुए भी उसकी निगाहे आगे की ओर भागती हुई गाडी पर जा टिकी । एका एक उसे महसूस हुआ कि तेजी से भागती हुई गाडी के नीचे उसी पत्नी की लाश गिर पडी है और गाडी उसे बेरहमी से कुचलते हुए आगे बढी जा रही है" ।[37]

'जिन्दगी का एक दिन' में मध्यवर्गीय मनुष्य के एक रस होते जीवन का चित्रण है । रघुवीर लाल एक सामान्य कर्मचारी है । जिसके कारण उसके जीवन में खाने पीने तक का अभाव है । इसलिए सस्ती सब्जियॉ बाजार से खरीदकर लाता है । अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा नही दे पाये । याहॅ तक की दप्तर जाने के लिए इक्के्वाले से काम चलाते है । अपनी जिन्दगी इसी आर्थिक अभाव में बीतने के कारण अपने परिवार के लिए एक छोटासा घर नही बनवा पाता । वह अपने जीवन के बारें में सोचता है- "वे सोचते हैं कि वे इतना संघर्ष करते है, इतनी चालाकी बरतते हैं इतनी मितव्ययिता से काम चलाते हैं तब उनके परिवार की हालत इतनी कमजोर रहती है । अगर उसकी नौकरी छुट जायें तब उनका परिवार कैसे रहेगा" ।[38] रघुवीर लाल उसी समय स्टेशन

पर भीख मॉगने वाले लोगों को देखते है तो सोचते ही रह जाते है । उनकी जिन्दगी क्या इसी तरह बीत जायेगी । ईमानदारी की यह कैसी सजा होती है । यह प्रश्न हर ईमानदार आदमी के लिए सोचने की बात होती है ।मध्यवर्ग के बारें मे इस प्रकार कहा जा सकता है- "समाज के अन्यवर्गो की अपेक्षा मध्यवर्गीय व्यक्ति की स्थिति आज अधिक दयनीय है । उसने हर कदम पर जीवन से समझोता करके ही आगे बढना पडता है । क्योंकि सडीगली परम्पराओं और रूढियों की आड में अपनी तथाकथित इज्जत ढॉपने की उसे आदम सी हो गई है । जिन्दगी से टकराना अब उसके बस की बात नहीं रही, लेकिन चाहकर भी वह उससे भाग नही सकता, इसीलिए मजबूरन उसे नपुंसकता का वरण करना पडता है । वह दुनिया को धोखे में रखता है, वैसे अपने आपको भी । इसी कारण वह बडी आसानी से खरीदा जा सकता है । ऐसी बात नही की उसकी आत्मा मर गई है । वह अपनी नपुंसकता त्यागना चाहता है । उसकी अन्तरात्मा सदैव छटपटाती रहती है । सभ्यता का झूठा लबादा उतारकर फेंक देना चाहता है वह । परन्तु उसे ओढे रहने की निरर्थक गरिमा को त्यागने का साहस उसमें नहीं है" ।[39]

'बहादुर' में आदमी से जादा कुत्ते की किमत हो गई है । यही कहानी साबित करती है । बहादुर नेपाल से नौकरी करने एवं पैसा कमाने के लिए आया है । वह अविवाहित है । पैसा कमाकर अपने देश में शादी करना चाहता है । वह जिस इजिनियर के घर में काम करता है । उसकी पत्नी बडी ही कठोर है । और उसे सभी प्रकार के काम करवाती है कहानी लेखक भी उसी के पडोस में रहते है । अपने काम निपटाकर वह लेखक के पास आकर बैठता है । और जीवन की कई कहाणियॉ सुनाता है ।एक दिन तो मालकिन अपने कपडे धोने के लिए दिए तो वह मना करता है । इस संदर्भ में लेखक कहते है- "बाबू हमकू अब और चोली (ब्रेसियर) हमारा सामने फिंचने के लिए फेंक गया है । हम जनाना कपडा नही फिचेगा बाबू । हम हिजडा नही । हम मेम को जबाब दे देगा ।[40] लेकिन इसे भी बडी आफत तब आती है जब मालिक एक कुत्ते को लेकर आते है । तो उसकी सेवा बहादूर को ही करनी पडती है । सबको खिलाकर कुत्ते को खिलाना पडता फिर बाद में उसे खाना मिलता । इस गुस्से के कारण एक दिन बहादुर उसका पैर तोड देता है तो मालिक उसकी हंटर से बहुत पिटाई करता है । और नौकरी छोडने लिए मजबूर होता है । वह अपने मालिक से कहता है- "साहब आपके घर कुत्ता रहेगा तो हम नही रहेगा ।या तो आप कुत्ता को रखो या हमको" ।[41]

तत्पश्चात वह अपनी नौकरी त्यागकर निकल जाता है । और उसे कोई ग्लानि महसूस नही होती है ।

'छोटे शहर के लोग' कहानी में ग्रामीण मनोवृत्ति के दर्शन होते है । गांव से आयी हुई एक लडकी मॉ और भौजाई से बिछुड जाती है । तब उस लडकी को सभी लोग अपनी वासना से उसे देखते है । लेकिन एक दिन पुलिस थाने में गुजारने के बाद सबेरे उसकी मॉ और भौजाई मिल जाती है । यह कहानी भी बहुत कुछ अपने आप कह जाती है । इन सब कहानियों से स्पष्ट होता है कि आज भी नारी के प्रति देखने का नजरिया पुरूषों का बदला नही है । वह उसे शिकार की तरह ही मानते है । याने गरीब चाहे मजूदर हो चाहे नारी उसका शोषण होता ही है ।

बनिहार और चरवाह की समस्याओं को भी मिथिलेश्वर जीने अपने कहानी साहित्य मे स्थान दिया है । मिथिलेश्वर जी का बहुतायत जीवन भोजपूर के बैसाडीह गांव में बीता । और उन्होंने ग्रामजीवन की सारी समस्याओं को देखा परखा है । गांव का जीवन कितना अभावजन्य होता है । जैसे बिजली पानी यातायत अशिक्षा , स्वास्थ तथा भटकी हुयी नयी पीढि आदि समस्याओं को उन्होंने काफी निकटता से देखा है । गांवों में गरीब और लाचार बनिहार और चरवाह लोगों की स्थिति देखने लायक होती है । संपन्न कुलों के लोग इनको सालभर के काम के लिए पैसा देते है । एक वर्ष पूरा होने के बाद उसका मालिक से रिश्ता खत्म हो जाता है । उसे दूसरा कार्य ढूढना पडता है । कभी कभी तो इनके लिए केवल रोटी ही दी जाती है । उसी प्रकार चरवाह भी होते है । जानवरों को जंगलों में चराने की इनकी जिम्मेदारी होती है । इनका कोई भविष्य नही होता वे मानो अमीरों के गुलाब होते है । चरवाहों के अलावा उन्हें अन्य काम भी करने पडते है । जैसे वे जब चाहे और जिस रूप में चाहे, इनका इस्तेमाल कर सकते है । शुरू-शुरू में हर बनिहार , चरवाह इसका विरोध करता है । लेकिन समयानुसार मालिक बनिहार और चरवाह की जिन्दगी की यातनाएँ बढाकर या उनकी जिंदगी को सुविधाएँ देकर उन्हें अपने वश में कर लेते है । फिर वे सिर्फ बनिहार , चरवाह के ही नहीं बल्कि उनके पूरे परिवार के स्वामी हो जाते है । बनिहार , चरवाह मालिक के वश में नही आ सके इसके लिए कोई विकल्प भी तो नही होता है उनके पास । आखिर मरता क्या नही करता" ।[42] इसी तरह इनकी आने वाली पीढियॉ भी बंधुआ मजदूरी करने पर मजबूर होती है ।

डाकुओं के जीवन को भी मिथिलेश्वर जी ने बडी ही सहजता से अपने साहित्य में चित्रित किया है । शिक्षा का अभाव के कारण भी ग्रामीण लोग चोरी तथा डकैती में लग जाते है । मिथिलेश्वर 'रघुलाल टोला' 'अपने लोग' और 'हत्यारो की वापसी' आदि कहानियॉ इस दस्यु जीवन पर लिखी है । रघुलाल लोहार परिवार का होकर भी उसने नौटकी पार्टी खोली है । वह पार्टी बडी मशहूर हुयी है । चमनपूर नामक गांव में रघुलाल का एक लडकी से प्रेम हो जाता है । इस कारण उस गांव के लोग उसे मार मार कर अधमरा कर देते है । और उस लडकी लतिका को जहर देकर मार दिया जाता है । अपने संगठन को बनाकर पूरे गांव को वह अपमानित करता है । और अपने गांव में लौट आता है । रघुलाल से संगठन के कारण सभी गाव के लोग डरने लगे । वह गरीबों की मदद करता था लेकिन अमीर लोग उसे पैसा देकर मनचाहा काम करवाने लगे । इस संघर्ष में उस गांव में दो गुट बन गये । अत:शहर के लोगों ने शराब में जहर देकर उस मार डाला । उनका टोला उसकी सुरक्षा नही कर सके । और इस तरह गांव का आंतक खत्म हुआ 'अपने लोग' कहानी डाकुआ के गिरोह की है । जिसके मुखिया किसन चौबे । और दूसरे नंबर पर बजरंगी है करीब करीब पंद्रह लोगों की उनकी टोली है । किसुन चौबे की जमीन पडोसी रामपूजन सिंह व्दारा हथिया लेने के कारण वह डकैत बन जाता है । शराब और औरत चौबे की कमजोरी रही है । बजरंगी छोटी जाति का है । उनका दल रात में शराब पीकर चमार टोली की ओर जा रहा है क्योंकि चौबे की नजर राम औतार की बेटी तेतरी और उनकी भौजाई पर । वह उसे पाना चाहता है । लेकिन तेतरी बजरंगी को भैय्या कहती है और प्रश्न करती है कि क्या हम लोगों की कोई इज्जत नही होती । तो उसी समय बजरंगी की वर्गीय चेतना जागती है । और चौबे का विरोध कर अपना टोला दो धडों में बॉट लेता है ।

'हत्यारों की वापसी' कहानी में गणपत तेगा और सिगु पैसे लेकर हत्याएँ करने का काम करते है । हाजी सेठ ज्यादा रक्कम देकर उनसे कोई भी काम करवाता है । सेठ स्कूल की जमीन हडपना चाहता है लेकिन वह जमीन म्युनिसिपैलिटी की है । गठजोड के तहत वह जमीन अपने नाम करवाना चाहते है । गणपत अपने साथियों के साथ भैया के घर जाकर हत्या करना चाहते थे । लेकिन भैया अपनी बात इस तरह रखता है । मैं उस जमीन में अपना घर बनाने के लिए हाजी सेठ से नही लड रहा । उस जमीन में आपके मेरे बच्चे पढेगें । आप जानते है, वह मुहल्ला इस मुहल्ले से भी गया गुजरा है । उस मुहल्ले में शहर की कोई सुविधा नहीं । यदि वह जमीन हाजी सेठ

दखल कर लेगें तो उस मुहल्ले में बच्चों को पढने की कोई जगह नहीं रहेंगी । शहर के दूर पडनेवाले और महँगे स्कूलों में उस मुहल्ले के बच्चे कैसे पढने जायेंगे ? मैं जानता हूँ । आप लोग वैसे ही मुहल्ले के वासी है । हाजी सेठ के मुहल्ले में आप लोगों के घर नही । हाजी सेठ आपके अपने हाथों आपके घर को उजडवाना चाहता है । सोचिए , उस मुहल्ले के बच्चे आखिर कहॉ पढेंगे" ।[43] हाजी सेठ हत्या करनेवालों को दुगुनी रक्कम देना चाहता है फिर भी वे उस रकम को वापिस कर देते है क्योंकि भैया को मारना जो समाज की भलाई के लिए काम कर रहा है । बहुत बडा पाप होगा । और सामाजिक एकता के कारण हाजी सेठ उस जमीन का नाम लेना छोड देता है । इस दस्यु जीवन को लेकर मिथिलेश्वर जी की टिप्पणी सही है ऐसा मुझे लगता है - वे कहते हैं - "मुझे लगता है कि समाज की अपेक्षा जीवन को किसी कचोट और संशिष्ट माहौल की जकडन ने उन्हें् भटकन में डाल दिया है । इस अन्तहिन भटकन में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वे रूक्ष कठोर और अभेद बनते चले गए हैं । लेकिन जहॉ कभी किसी विचार और घटना ने उनके मर्म को स्पर्श किया है वहॉ उनके भीतर का इन्सान जाग गया है" ।[44] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर जीने हालात के कारण डकैत बननेवाले लोगों के प्रति भी अपनी आस्था रखी है और उन्हें भी इन्सानियत के पाठ पढाये है ।

ग्रामीण जीवन अभावों से ग्रस्त है । गावों में सुख सुविधाएँ नही है । स्कूलों और अस्पतालों की व्यवस्था नही है । तथा अंध विश्वास, जातिप्रथा आज भी बरकरार है । ग्रामीण नारी में चाहे वो दलित हो या सवर्ण उसकी स्थिति शोचनीय है । उसे किसी न किसी प्रकार अन्याय और अत्याचार सहने पडते है । इसी को मैथिलिश्वर अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करते है । उनकी कहानियॉ मानवता की पोषक है । डॉ विवेकी राय मिथिलेश्वर के कथा साहित्य पर टिप्पणी करते है- "ग्राम कथाएँ सीधे सीधे चलते हुए बहुत दूर तक संश्लिष्ट स्थितियों की गाँठे खोल देता है । सहज माध्यमों से असहज की अभिव्यक्ति ग्रामस्तर पर इतने मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से पहली बार लक्षित हुई है" ।[45]

'हरिहर काका' केा लेखक बहुत करीब से जानते है क्योंकि वे एक दूसरे के पडोसी है । तथा एक दूसरे के प्रति काफी विश्वास है । हरिहर काका अपनी दिल की सभी बातें लेखक से कहते है । लेकिन हरिहर काका गूँगे हो गये हे । क्योंकि अपने

रिश्तेदार तथा ठाकुरबारी के महंत तथा साधु हरिहर काका की जमीन हडपना चाहते है । हरिहर काका अपने बारें में लेखक से कहते है- "मेरा गांव शहर से चालीस किलोमिटर की दूरी पर है । गाव में सभी प्रकार की जातियों के लोग रहते है । गांव के पश्चिम में एक तालाब है । तथा एक बडा सा बरगद का वृक्ष भी है और ठाकूरजी का विशाल मंदिर है । उसे ही ग्रामीण लोग ठाकूरबारी भी कहते है । हरिहर काका की दो पत्नियॉ होकर भी कोई औलाद नही हुई तो अपने भाइयों के परिवार में ही रहने लगे । पहले पहले तो परिवारवालों ने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया लेकिन थोडे ही दिनों मे उनके प्रति अनास्था बढने लगी । ठाकूर बारी के महन्त की भी नजर उनकी जायदाद पर भी । एक दिन महन्त जी कहते है - "पंद्रह बीघे की फसल भाईयों के परिवार को देते है तब तो कोई पूछता नही , अगर कुछ न दे तब क्या हालत होगी ? उनके जीवन में तो यह स्थिति है मरने के बाद उन्हें कौन याद करेगा ? सीधे सीधे उनके खेत हडप जायेंगे । ठाकूरजी के नामपर लिख देगे तो पुश्तों तक लोग उन्हें याद करेंगे । अब तक के जीवन में तो ईश्वर के लिए उन्होंने कुछ नही किया । अंतिम समय तो बडा पुण्य कमा ले" ।[46] किन्तु हरिहर काका मन ही मन यह विचार करते हैं - "भाई का परिवार तो अपना ही होता है । उनको न देकर ठाकुरबारी में दे देना उनके साथ धोखा और विश्वासघात होगा" ।[47] ठाकूरबारी में महन्त व्दारा उनके रहने खाने का इन्तजाम किया जाता है तो परिवारवाले मंदिर पर धावा बोल देते है । दोनों ओर से स्वार्थ की लडाई शुरू होती है । पुलिसव्दारा कारवाई कर महन्त तथा साधु संतों की करतूत दुनिया के सामने आती है । तथा अपने ही भाई जायदाद के लिए जुर्म जबरदस्ती करते हे । इसी लिए अब हरिहर काका गूगें का जीवन व्यतीत कर रहे है । और जीते जी अपनी संपत्ति दूसरे के नाम कर देने से मनुष्य का क्या हश्र होता है । जो लोग कहते है - "जिन्होंने अपनी जिन्दगी में ही अपनी जायदाद अपने उत्तराधिकारियों या किसी अन्य को लिख दी थी, लेकिन इसके बाद उनका जीवन कुत्ते का जीवन हो गया । कोई उन्हें पुछनेवाला नहीं । हरिहर काका बिल्कुल अनपढ व्यक्ति है , फिर भी इस बदलाव को उन्होंने समझ लिया और यह निश्चय किया कि जीते जी किसी को जमीन नहीं लिखेंगे । अपने भाईयों को समझा दिया मर जाउॅगा तो अपने आप मेरी जमीन तुम्हें मिल जायेगी । जमीन लेकर तो जाऊॅगा नही । इसलिए लिखवाने की क्या जरूरत । 'जहाज का पंछी' कहानी जाति व्यवस्था की पोल खोलती है । ग्रामीण जीवन में अपने पैतृक पेशा छोड कर अन्य

कार्य कर अपनी तरक्की करना चाहता है । लेकिन यह बदलाव उनके जीवन में संभव नही होता । केदार एक नाई का लडका है । वह भी अपने कार्य को छोडना चाहता है लेकिन बार बार वही सैलुन में उसे काम करना पडता है । 'उनकी जिंदगी' कहानी में अमीर आदमी के शौक का वर्णन है । 'शिष्टाचार की समझ' एक प्रेम कहानी है 'जंगल होते शहर' में शहरों की संस्कृति आ रहे बदलावों की ओर संकेत है । कॉलेज में एक प्रोफेसर की हत्या हो जाती है तो सिन्हा बाबू को भी अपने जीवन के बारें में डर लगता है । अन्य लोगों को यह घटना सामान्य सी लगती है । वे सोचते है- "क्या शहर की यही संस्कृती होती हैं ? यह तो जंगल की संस्कृति है कि जब सिंह किसी जानवर पर हमला बोलता है तो शेष जानवर वहॉ से भाग जाते है" ।[49] 'जब तक' कहानी में अस्पतालों की स्थिती तथा डॉक्टरों की कूपमंडूप वृत्ती पर प्रकाश डाला गया है । 'दण्ड' कहानी शहरी संस्कृति को दर्शाती है । भीड जेब कतरे को बुरी तरह पीट रहे और खडे लोग तमाशबीन होकर मजा ले रहे है । 'जी का जंजाल' - कहानी स्वार्थ से प्रेरित है । पिता की मृत्यु पश्चात बेटी अपनी मॉ की रक्षा ठीक से नही कर पाते 'एक में अनेक' कहानी में मनुष्य कितना पाशवी होता है का चित्रण है । माधुर साहब अपने नौकर को चौबिसों घटों काम करवाता है । लेकिन उसके खान पीने तथा सोने की कोई व्यवस्था नही है । तात्पर्य गुलामी का जीवन मनुष्य ही मनुष्य के साथ करता है ।

'रिश्ते' कहानी परिवारों में विघटन की स्थिति दर्शाती है । सुधाकर पाण्डेय पैसठ वर्ष की उम्र में एक विधवा से शादी करने के लिए मजबूर है क्योंकि उनके बेटे तथा बहुऍ उनकी रखवाली करने के लिए तैयार नही । अत: वे विधवा विवाह कर अपने पुत्रों से संम्बंध तोड लेते है । 'थोडी देर बाद' में गरीबी का फायदा उठाकर एक भोली भाली लडकी को अमीर लडका शिकार बनाता है । उसके शरीर से खेलता है और झूठे वादे कर निकल जाता है । 'श्री सिमेन्ट स्टोर' से ही कहानी का अर्ध बोध होता है । मजदूरों के शोषण, विद्रोह और एकता की कहानी है । स्वामी रामजीत हर प्रकार का मजदूरों से काम करवाता है । बिमारी के समय मजदूर के बेटे के इलाज के लिए एक हजार रूपये देने से कतराता है मजदूर के विद्रोह के बाद उसे मार दिया जाता है । जब खतरा बढने लगता है तो अन्य नेता को खडा किया जाता है । जिससे मजदूरों को गुमराह किया जा सके । लेकिन मजदूर भी सही समय का इन्तजार करते है । 'कितनी दुनिया' का

रामरतन पैसे कमाने के खातिर अपना परिवार गांव को छोड शहर जाता है । लेकिन जब वह यह जानता है कि उसकी पत्नी के अपने छोटे भाई से संम्बंध है । तो दोनों को मारने हेतु गांव की ओर लौटता है । किन्तु स्टेशन पर उसे पता चलता है कि गांव में बाढ आयी है और सारा गांव बह गया है । तो उसका क्रोध शांत हो जाता है । इस प्रकर नारी जीवन की त्रासदी भी प्रस्तुत कहानी बयान करती है । 'मृत्यु संकट' कहानी दूसरों पर आदमी जब दया दिखाता है जब वह दया का पात्र हो । नानकचंद बडा ही कठोर सेठ है । वह मजदूरों पर अन्याय करता है । लेकिन कैंसर की बिमारी का पता चलते ही दयावान हो जाता है । लेखक ने अपने पिता पर आधारित कहानी एक थे प्रो. बी लाल लिखी है । जिनमें अपने पिता का सर्वागिण चरित्र का वर्णन किया है । 'लापता' एक भागे हुए सैनिक की कथा है । वह घायल है गांव के लोग वैद्यव्दारा उसका इलाज करवाते है । और पुलिस के हवाले गॉववाले कर देने की बात करते है । लेकिन उसी रात रामेश्वर की पत्नी उसे गांव से भगा देती है । क्योंकि उसका पति भी इसी प्रकार गायब हुआ है । वह सैनिकों की दशा समझती है ।

'सरजु ब्रम्ह के गॉव में' विफल प्रेमगाथा है । जो शहर और ग्रामीण सम्बधों का विवेचन करती है । 'गांव का मधेसर' में मधेसर ब्राम्हण होते हुए भी बनिहारी करता है । डोम की लडकी राधिया से विवाह भी करता है । तथा लोगों की हमेशा मदद भी करता है । लोग भी उससे चाह रखते है । जब लटरू रधिया को अपमानित करता है तो उसको जान से मार देता है । मधेसर के चले जाने पर भी गांव के किसी आदमी की रधिया को छेडने की हिम्मत नही हुयी । कुछ दिनों बाद मधेसर गांव लौट आता है तो उसे कोई कुछ भी नही कहते । 'सीमाएँ' कहानी जाति प्रथा को चिन्हित करती है । कहार ददूआ निम्न जाति का है । लेकिन उसकी पत्नी खुब सुरत है उसे चद्र मोहन बाबू बहूत चाहते है । जब ददूआ की पत्नी को उसके घर से बाहर कर दिया जाता है तो चंद्रमोहन अपनी इज्जत और खानदान के नामपर चुप बैठता है । ददूआ के परिवार वाले ददूआ तथा उसकी पत्नी को उनके गाव में नही रहने देना चाहते है । वे कहते है- "गॉव में इस रंडी पाना के लिए छोड दे । लोगों के मजा मारने के लिए । माथा तो हमारा गडवा चुकी है । अब रही सही इज्जत भी मिट्टी में मिला देगी । दूसरे गाव में जाकर दस भतार कर ले हमें कोई परवाह नही । ददूआ की शादी फिर कर देगें हम । जिसकी छाती बहुत फट रही हो वह इसे ले जाकर अपने घर रख ले" ।[50] लेकिन

चंद्रमोहन बाबू ददूआ की पत्नी को चाहते हुए भी नही अपना सकते क्यों कि वह अपने मान और सम्मान के खातिर चुप बैठ जाते है ।

मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण कृषि व्यवस्था को बडे करीब से देखा है । या वे स्वयं भी खेती बाडी संभॉलते थे । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर गांव और जमीन से जुडे हुए है । ग्रामीण जन जीवन उनकी कहानियों में बिखरा पडा है 'जमुनी' ऐसी ही एक ग्रामीण कहानी है । जमुनी जिऊत नामक पति पत्नी की एक भैस है । वो अपनी जान से भी ज्यादा उसे अधिक प्यार करते है ।

क्योंकि वह पुरे परिवार का पालन पोषण करती है । इसके बारें में लेखक लिखते है- "जमुनी उसकी गृहलक्ष्मी है । आश्रयदाता, जीवनदाता" ।[51] लेकिन जब जमुनी बिमार होती है । तो पूरा परिवार अधिर हो जाता है । आगे लिखते है - "जमुनी के बीमार पडते ही घर के सारे उत्साह और खुशियों के जैसे पाला मार गया है । जमुनी के इस रूप में रहते हुए उससे चूल्हा नही जलेगा । जमुनी को किसी ने माहूर तो नही दे दिया । टोना टोटका तो नही कर दिया । दरवाजे पर हाथी की तरह मस्त जमुनी को देखकर कितने मुदइयो का कलेजा फट रहा था । जरूर उसी में से किसी ने कुछ किया है । वह सुरज बाबा को गोहराती है कि जमुनी को ठिक कर दे" ।[52] जब से जमुनी इनके घर में आयी है तब से जिऊत का परिवार खुशहाल हो गया है । पहले वह दूसरों के यहॉ मजदूरी करते थे । लेकिन अब कर्ज मुक्त होकर खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे है । इस कारण गॉव के कुछ लोगों को यह बात सुहाती नही । जमुनी के कारण ही और तीन भैसे घर मे आयी है । इसिलिए जमुनी केवल भैस नही है । वह उस परिवार का जीवन है । वे कहते है- "भैंस नही है जमुनी कामधेनू है, कामधेनू पहले जिऊत जानता था कि कामधेनू देवताओं के पास रहने वाली कोई ऐसी चत्मकारिक धेनू होती है, जो सारी मनोकामनाएँ पूर्ण कर देती है । पर अब उसे लग गया है कि जमुनी जैसे धेनु का ही ना लोगों ने कामधेनु रख दिया होगा ।[53] जिडत के परिवार की सभी शादियॉ भी जमुनी के कारण ही हेा पाई है जमुनी को कृषक जीवन की महायात्रा कहा जा सकता है । इस संदर्भ में डॉ राकेश गुप्त एव डॉ ऋषि कुमार चतुर्वेदी लिखते है- "मिथिलेश्वर ग्रामीण परिवेश के एक सशक्त कथाकार है । उनकी लंबी कहानी जमुनी को कृषक जीवन की महायात्रा कहा जा सकता है । जिसमें एक सामान्य भारतीय कृषक जीवन के प्रेम घृणा । आस्था विश्वास , आशा निराशा हर्ष विषाद सम्पत्ति विपत्ति और

उत्थान पतन का मार्मिक एवं सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है । शिल्प का रचाव निश्चय ही कहानी को महत्वपूर्ण बना देता है, किन्तु कहीं कहीं अनायास सादगी ही शिल्प का शृंगार बन जाती है । प्रेमचंद का कथा शिल्प ऐसा ही था । वर्तमान कथाकारों में मिथिलेश्वर का कथा शिल्प भी इसी प्रकार का हे"।[54] उसी प्रकार जमुनी के लिए यह भी कहा जाता है- "शीर्षक कथा जमुनी एक लम्बी कहानी है । जिसमें एक कृषक परिवार का संघर्ष जीवन्त हो उठता है और जहॉ अपनी भूख प्यास और नींद आराम को दर किनार करते हुए हर एक की चिंता बीमार भैस को मृत्यु के मुख मे जाने से बचाने की है क्योंकि वह भैस ही उनकी सुख समृध्दि का केंद्र है" ।[55]

मिथिलेश्वर अपनी कथायात्रा में जीवन की सच्चाई को समझने हेतू कई कहानियाँ लिखते है । जिनमें 'छूँछी' नामक कहानी है । जिसमें गरीब स्त्री दंतुली के दाह संस्कार करते समय उसके नाक का गहना चोरी कर लिया जाता है । जब कि दाहसंस्कार के बाद वही गहना बेचकर लकडी और डोम के पैसे देने थे । स्पष्ट है कि ऐसे भी असंवेदनशील लोग हमारे समाज में वर्तमान है । 'विषवृक्ष' में जैसा बीज बोओगे वैसा फल पाओगे की उक्ति सार्थक हुयी दिखाई देती है । क्योंकि ब्रम्हदेव ने चोरो डकैतो से बचने के लिए अपने ही पुत्र को डकैत बना डाला लेकिन वही बेटा अपने पिता का ही शोषण करने लगा । वह कहता है- "घर में रूपए रहने चाहिए - पंद्रह दिन के अन्दर मे फिर आऊॅगा इस बार कोई बहाना सुनना नही चाहूँगा" ।[56] स्पष्ट है कि बुराई को बुराई से खत्म नही किया जा सकता । 'सत की सोर पाताल तक' कहानी एक सच्चे अध्यापक की है । जो रात में डकैतों के यहा बस छुटने के कारण रूक जाता है । जिनमें उनके दो विद्यार्थी भी है । लेकिन डकैतों में भी मानवीयता होती है । और सत्य की हमेश विजय होती है ।

'दुर्धटना' कहानी भूकंप और प्लेग की अफवाहों के परिणाम स्वरूप भय तथा आंतक का वातावरण चित्रण है । समाचारों के व्दारा भी उसकी भयावहता फैलायी जा रही है । कहानी के रामसेवक बाबू दुर्घटना ग्रस्त होने के कारण उन्हें देखनेवालों की भीड जमा होती है तब वह सुचना लगा देते है कि मुझे कोई देखने न आए । घर के लोग बाबू को सठियानापन कहते है । 'वैराडीह की चंद्रावती' एक प्रेम कहानी है । लेकिन इसे विफल प्रेम कहानी ही कहना चाहिए । क्योंकि चंद्रावती अपने प्रेमी प्रभुनाथ से शादी न कर किसी अन्य पुरूष से शादी कर लेती है । और चंद्रावती भी जीवन की

सच्चाईयों को प्रभुनाथ के सामने रखती है- "मै कैसे समझाऊँ कि बे मौसम की बारिश प्रकृति की स्वाभाविकता नही, संयोग मात्र होती है। मौसमी फल साल भर नही मिलते। एक मौसम विशेष में ही उपलब्ध होते है। उनकी कामना सदैव के लिए करना अज्ञान में रहना नही तो और क्या है ? जीवन में हम अनेक जगहों पर ठहरते और अनेक होटलो में खाते पीते है तो क्या वह सब हमारा घर दार बन जाता है ? हमारे पास जो वर्तमान है, वही हमारे जीवन का सच है अतीत को खींचकर भविष्य को जोडना हमारी भावूकता और खयाली पुलाव के सिवा और कुछ भी नही"।[57] याने हर व्यक्ति को जीवन की सच्चाईयों को जानकर समझकर और सोचकर आगे बढना चाहिए। जिसे खुद का और दूसरों का जीवन हितकर होगा।

'नदी की राह' कहानी में पढे लिखे आलोकनाथ की कथा चित्रित है। उसकी मालती प्रेमिका है। वह बबई जाकर मिल में काम करता है। लेकिन बम विस्फौट के कारण कंपनी बंद कर दी जाती है। तब पैसा कमाने के खातिर सउदी अरब चला जाता है। उसके परिवार तथा गांववाले समझते है कि उसकी विस्फोट में मृत्यु हो गई है। अन्तः उसका पूरा परिवार बिखर जाता हे। पत्नी मालती भी कई सालों के इन्तजार के बाद गांव के ही विधुर ब्रजनंदन से शादी कर लेती है। मॉ दुखद प्रसगों को याद करके बताती है- "क्या बताए बचवा वह तेरे बिछोह में सूखकर कॉटा हो गई थी। जब से आकर अजयपाल ने बताया कि दंगे में तुम मारे गए तब से तो वह कभी न भरपेट खा सकी और न सो सकी। तीन चार बरिस के बाद बहुत समझाने बुझाने पर अब तनिक रास्ते पर आई थी। लेकिन ब्रजनंदन की पत्नी क्या मरी रोज आने लगा वह तीन बच्चों को छोडकर उसकी पत्नी मरी थी। मालती से शादी करने के लिए एकदम उजुरू हो गया मालती के मॉ बाप और गाव घर को भी राजी कर लिया। सबने कहा कि अभी उसकी उम्र ही क्या है ? कैसे बिताएगी पूरा जीवन ब्रजनंदन के अनाथ बच्चों को भी मॉ मिल जाएगी और उसे भी सहारा मिल जाएगा। अभी पिछले साल ही तो शादी करके ले गया ब्रजनन्दन बेटी की तरह विदा किया मैंने तुम्हारे लिए उसका दिन रात रोना बिलखना अब मुझसे भी देखा नही जाता था"।[58] स्पष्ट है कि जीवन की यही सच्चाई है। एक बार जिस पुरूष का हाथ पकड लेती है तो उससे बॉहे मोडना ठिक नही है।

'गॉव का घर' हर शहरी बाबू की तमन्ना होती है कि उसका गांव में एक घर हो को कहानी चित्रित करती है। गाव से पच्चीस साल पहले सचनलाल शहर गया था।

लेकिन शहरी जीवन से उबने के बाद वह अपने पुश्तैनी गांव आना चाहता है । गांव की यादे ताजा करता है । लेकिन पच्चीस सालों के बाद वह देखता है कि धीरे धीरे गांवों ने भी शहरों का रूप धारण करना शुरू कर दिया है । सचनलाल देखता है कि शहरों जैसा यहा विस्फोट और हत्याएँ होती है । गांव भी जंगल के समान होते जा रहे है तो गांव का सपना चकनाचुर हो जाता है । वह कहता है- "हर महिने यहॉ हत्याएँ होती है । मारपीट, लूट, बलात्कार और चौरी, डकैती तो यहा की आम घटनाएँ हो गयी है । शहरों की तरह यहॉ भी अब कोई किसी के बीच पडना नही चाहता । किसी के साथ होती ज्यादती को तटस्थ दर्शक की भॉति देखते रहना अब यहॉ के लोगों ने भी सीख लिया है" ।[59] विस्फोट में मारे जाने की खबर से सचन लाल का घर तथा खेती गांव के गुंडों ने हथिया ली थी और उनसे वह संपत्ति फिर से वापिस पाना टेढी खीर थी । सचनलाल समझ नही पाता कि गांवों को यह क्या हो गया । और वह बंबई को गांव से जोडने की कल्पना करने लगा- "जन्मभूमि के अपने इस गांव घर को बम्बई की भीड शोर और ह्रदयहीनता से वह पृथक और अछूता समझ रहा था । लेकिन यहॉ पैदा हेा गयी ह्रदयहीनता और क्रुरता के समक्ष तो बंबई की वह अजनबीयत कुछ नही" ।[60] स्पष्ट है कि गांवों की संस्कृति और नगरों की संस्कृति में बहुत ज्यादा अंतर नही रह गया है ।

'चल खुसरों घर अपने' घर से बदखल होने की कहानी है । मॉ विधवा होने के बाद बेटे शहर में रहने के कारण मॉ को भी अपना पुश्तै्नी घर छोडकर शहर जाना पडता है उनके बेटे भी मॉ को मजबूरी में उसे शहर ले जा रहे है क्योंकि रविरंजन की पत्नी मॉ बननेवाली है । लेकिन अपनी जरूरत खत्म होने पर दोनों बेटों और उनकी पत्नियों को मॉ बोझ लगने लगी मॉ भी बुढापे की ओर जा रही थी तो तरह तरह की बिमारियों ने उसे घेर रखा था । उपर से बासी खाना उसे दिया जाता था । मॉ बच्चों से उबकर बेटी नीता के पास जाती तो वहॉ भी दामाद के ताने सुनने में आये- "सब कुछ तो इस बुढिया ने अपने सपुतों को दे रखा है । इसके मरने के बाद भी इसकी जायदाद वही हडपेंगे । इसके बावजूद बुढापे में हमें पेंटनें आ गयी" ।[61] यह सब ताने सुनने बाद मॉ अपने बेटों के पास आयी तो बेटों ने मॉ के लिए तीन तीन महिने मॉ को संभालने की व्यवस्था की । इस पीडा का बखान वह मुनरी से करती है । मॉ को पेंशन मिलती है ।इसिलिए वह अपने बेटों का त्यागकर गॉव लौटकर मुनरी के परिवार के साथ रहने

लगती है । जो उसे बहुत प्यार करते है मॉ अपने पति के साथ गुजारे पुराने दिन याद करती है । वह मन ही मन सोचती है - "यहॉ की उनकी दुनिया अपनी थी । कितनी प्यारी । कितनी स्वंतत्रता कोई रोक टोक नही । कोई बन्दिश नही । यह उनके पूर्व जन्म के किसी पाप का ही फल था । कि अपने चहेती दुनिया को छोडकर बेटों की 'काल कोठरी' में उन्हें जाना पडा था" ।[62] और मॉ जीवन के अंतिम समय यही मुनरी और अपने घर में रही और वही अमरता को प्राप्त हुयी ।

अत: मिथिलेश्वर का कहानी साहित्य ग्रामीण सामाजिक जीवन संगत-विसगतियों को प्रस्तुत करती है । उनकी ग्रामीण कहानियों आर्थिक निर्धनता के कारण, अशिक्षा के कारण, शोषण के कारण कई समस्याऍ पनपती है । जिनका समाधान ढूंढने की मिथीलेश्वर की कोशिश है । मिथिलेश्वर भी अपने आपको ग्रामीण जीवन से अभिन्न मानते है । वे कहते है- "मैं मध्यवर्ग से आता हूॅ । मध्यवर्गीय जीवन के खोखले पन और आडम्बर से भलीभॉति परिचित हूॅ । घर से सत्तु खाकर आने, लेकिन मलाई खाने की बात कहने वाले मध्यवर्ग को मैं अच्छी तरह पहचानता हूॅ । उसके लिए सामाजिक मर्यादा और प्रतिष्ठा, चाहे वह झूठी ही क्यों न हो, से बढकर और कुछ नही । भूखे पेट सो रहने और जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के बावजूद इज्जतदार बने रहने का स्वॉग सिर्फ मध्यवर्ग ही कर सकता है । अब तो स्थिति यह है कि रीढविहिन यह वर्ग गुस्से का काम, दया का पात्र ज्यादा होता जा रहा है । आचरण में सांमतीपन और व्यवहार में भीरूता इस वर्ग की खास पहचान है" ।[62] इसी को समझ ाते बुझते मिथिलेश्वर जीने अपनी कहानियों में इसे अंकित किया है । बिहार के गॉवों में श्रमिक तथा नारी आज भी गुलामी का जीवन जी रही है । नारी अपना पेट पालने के लिए अपनी इज्जत तक बेंच देती है या अवैध संम्बंधों से अपने परिवार का पोषण करती है । 'शरीर से लाश तक' कहानी यही दर्शाती है । गावों में आंतरजातीय विवाह भी पनपने लगे है । इसका भी चित्रण कहानीकार करते है । 'मेघना का निर्णय' कहानी ठेकेदारों के खिलाफ श्रमिकों का विद्रोह है । 'कुचलती हुयी लाश' कहानी मनुष्य के अमानवीय होते जाने की त्रासदी है । 'बहादुर' कहानी में एक गरीब नेपाली पुरूष को कुत्ते से बदत्तर जीवन दिया जाने की व्याख्या है । 'रात' में नारी का यौन शोषण है ।

गांवों में शोषण तथा अत्याचारों के विरोध मे ग्रामीण डकैती का जीवन अपना लेते है । 'रघुलाल का टोला' 'अपने लोग' 'हत्यारों की वापसी' आदि कहानियॉ इसकी प्रतीक है । साथ ही साथ मिथिलेश्वरजी ने गांव की नयी पीढि शहरों की और भाग रही है । वह शहरों में भी रसबस नही सकी है । वे फिर से अपने गांव लौट रहे है । परिवारों का विघटन भी गावों में बडी मात्रा में हो रहा है । बूढे माता पिता की परवरिश की चिंता भी गांव की मुख्य समस्या बनती जा रही है । स्पष्ट है कि मिथीलेश्वर जी की कहानियॉ समूचे ग्रामीण सामाजिक जीवन को समेटते हुए उसका जीवन चित्रण करती है ।

संदर्भ

1. रामदरश मिश्र हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा पृ 141
2. डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 01
3. डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 13
4) मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पीयासी के पृष्ठ प्लैफ से ।
5. मिथिलेश्वर - बाबूजी कहानी संग्रह के प्लैप से
6. मिथिलेश्वर बाबूजी एक और हत्या पृ. 22
7. मिथिलेश्वर बाबूजी एक और हत्या पृ. 23
8. मिथिलेश्वर बाबूजी एक और हत्या पृ. 29
9. मिथिलेश्वर - शेष जिन्दगी पृ - 54-55
10 मिथिलेश्वर - शेष जिन्दगी पृ - 55
11. मिथिलेश्वर - बाबूजी शेष जिन्दगी पृ - 51
12. मिथिलेश्वर - बाबूजी पृ -101
13. मिथिलेश्वर - बाबूजी -पृ - 94
14. मिथिलेश्वर - पत्थर की लकीर -पृ- 84
15. डॉ. प्रभा खेतान - हंस - नंवबर दिसबंर - पृ - 69
16. मिथिलेश्वर - संगीता बॅनजी -पृ -78
17. तसलीमा नसरीन - नवबंर - दिसंबर - हंस 1994 पृ 75
18. मिथिलेश्वर - पहली घटना पृ 112
19. मिथिलेश्वर प्रो. बी. लाल - (बन्द रास्तों के बीच) पृ 39
20. मिथिलेश्वर बन्द रास्तों के बीच शरीर से लाश तक पृ 123

21. मिथिलेश्वर शांता नाम की एक लडकी -पृ 117

22. डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 67

23. मिथिलेश्वर - जी का जंजाल (एम में अनेक) पृ 29

24. मिथिलेश्वर - जी का जंजाल (एम में अनेक) पृ 29

25. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय- रात पृ 77

26. मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले पृ- 50

27. मिथिलेश्वर - गंगिया फुआ पृ- 183

28. मिथिलेश्वर - गंगिया फुआ पृ -191

29. मिथिलेश्वर वैतरणी भौजी (तंदैव) पृ 57

30 मिथिलेश्वर-दो शब्द-भीष्म साहनी पृ 07

31. मिथिलेश्वर-दो शब्द-भीष्म साहनी पृ 8

32. मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत (दो शब्द-भीष्म साहनी) पृ 08

33. मिथिलेश्वर - बाबूजी कहानी संग्रह के प्लैप से

34. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय भूमिका से पृ 11

35. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय पृ 09

36. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय पृ 18-19

37. मिथिलेश्वर - कुचलती हुई लाश - पृ 23

38. मिथिलेश्वर - जिन्दगी का एक दिन- पृ 39

39. डॉ. माधव सोनटक्के - समकालीन परिवेश और प्रासंगिक रचना संदर्भ पृ 05

40 मिथिलेश्वर - बहादूर पृ 70

41 मिथिलेश्वर - बहादूर पृ 74

42. मिथिलेश्वर - बंद रास्तों के बीच पत्थर की लकीर पृ 84

43) मिथिलेश्वर - हत्यारों की वापसी पृ 38

44) मिथिलेश्वर - तिरिया जनम पृ 14

45) डॉ विवेकी राय माटी की महक धरती गांव की - प्लेप से ।

46) मिथिलेश्वर - हरिहर काका - पृ 88

47) मिथिलेश्वर - हरिहर काका - पृ 88

48) मिथिलेश्वर - हरिहर काका पृ 91

49) मिथिलेश्वर जंगल होते शहर पृ 115

50) मिथिलेश्वर - सीमाएँ पृ 169

51) मिथिलेश्वर - जमुनी पृ 69

52) मिथिलेश्वर - जमुनी पृ 70

53) मिथिलेश्वर - जमुनी पृ 79

54) डॉ राकेश गुप्त एव डॉ ऋषिकुमार चतुर्वेदी - हिन्दी कहानी की भूमिका से

55) मिथिलेश्वर - जमुनी कहानी संग्रह के प्लैप से

56) मिथिलेश्वर - विषवृक्ष पृ 30

57) मिथिलेश्वर - जमुनी कहानी संग्रह के प्लैप से ।

58) मिथिलेश्वर - नदी की राह में -पृ -62

59) मिथिलेश्वर गांव का घर - पृ -107

60) मिथिलेश्वर - चल खुसरों घर अपनें - गांव का घर पृ 56

61) मिथिलेश्वर - चल खुसरों घर अपने - गांव का घर पृ 14

62) मिथिलेश्वर - एक थे प्रो. बी लाल पृ 11

चतुर्थ अध्याय

मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में राजनीतिक ग्रामीण जीवन

15 अगस्त 1947 को हमें आजादी मिली । जिसके कारण भारतीय सामाजिक जीवन की आशाएँ उत्पन्न हुयी । हमने अपना कानून बनाया तथा लोकतंत्रिक सरकार चुनी । भारतीय समाज ने सरकार से बहुत सारी आस लगाई । लेकिन भारतीय समाज का मोहभंग हुआ । कॉग्रेसी नेताओं ने खादी उतारकर नया चोला पहन लिया । भारतीय नेताओ ने स्वार्थी प्रवृत्ती के कारण अपने ही घर भरने शुरू किये । और भारतीय समाज अनास्था के गर्ते में चला गया सत्ता का लालच बहुत बुरा होता है । खुर्ची की लालसा लग गई । उसे छोडे नही बनता । सामान्य जनजीवन की सुनवाई सत्या के गलियारों में कभी सुनी नही गयी । समाज से नेता ने नाता तोड लिया । आम जनता की चीख इन नेताओ के कानों तक कभी पहुॅच नही पायी । वर्तमान राजनीति के लिए निम्न उदाहरण उचित होगा- "देश में बहुमुखी राजनीति का पतन हुआ । उसने नैतिकता के सभी मूल्य ध्वस्त कर दिए । अब जनता के सभी मसलें चाहे वे रोटी के हो चाहे धर्म के हों, वोट की नीति से तय हाने लगे । सत्ताव्दारा भ्रष्टाचार और दुश्चरित्रता के संरक्षण एवं अपराध तथा राजनीतिक गठजोड ने जन जीवन में असहायता और असुरक्षा की भावना भर दी वोट की राजनीति में संकिर्ण जातिवाद और गुटबंदी को भरपूर प्रश्रय दिया । परिणामस्वरूप जनता का विश्वास सभी प्रकार की संवैधानिक रक्षात्मक इकाइयों से उठ गया" ।[1] स्पष्ट है कि भारतीय राजनीति ही बदल गई है । नेता स्वार्थी बन गये । सरकारी तंत्र भी नेताओं के इशारे पर काम करने लगा । अफसर शाही लाल फीताशाही में बदल गई । लेकिन राजनीति का अर्थ ही सम सामायिक राजनीति ने बदल डाला । जैसे राजनीति वह नीति है जिससे राज्य का और शासन का संचालन होता है । अत: उपर्युक्त कोशगत अर्थ के आधार पर हम राजनीतिक चेतना के संदर्भ में कह सकते है कि- "देश के वे नियम जो सामाजिक सद्भाव, विकास एवं समन्वय की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं । वे आदर्शात्मक होते हैं । देश विदेश की जनता का विविध दृष्टि से विकास होना चाहिए इस आधार पर ऐसे नियमों, तत्वों की संहिता का नाम राजनीति है" ।[2] लेकिन इन सब नियमों को देख कर हर कोई अपना उल्लु सीधा करने लगे राजनीति में भ्रष्ट तथा चरित्रहीन नेताओं के प्रवेश करने के बाद सत्ता हथियाने गुडें तथा बेईमानों का साथ लेकर अपनी कुर्सी साबुत रखी । जाति को आधार बनाकर राजनीति

शुरू की । लोगों को खरीद कर अपनी राहें आसान बनायी । जिससें समाज का शोषण, अत्याचार अन्याय में बढोत्तरी हुयी । सरकारों ने समाज के लिए योजनाएँ बनाई लेकिन वह आम जनता तक नही पहुॅच पायी । देश की आर्थिक नीति बदली । नेहरू ने समाजवाद का नारा दिया । बडे बडे कल कारखाने लगवाएँ । लेकिन उसमें भी आम जनता का शोषण ही हुआ । नेताओं ने केवल भाषण दिए लेकिन उन भाषणों से जनता का कल्याण नही हो सका । ग्रामीण समाज शहरों की ओर भागने लगा । लेकिन वहॉ भी इतनी भीड थी कि वह डरा सहमा नाली के किनारे रहकर अपना गुजारा करने लगा । स्पष्ट है कि वहॉ भी उसका मोहभंग हुआ । और वह फिर से अपना जीवन लाचारी और गरीबी में जीने लगा । शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्र में अब बहुत जादा अन्तर नही रहा है । गावां में भी छोटे मोटे नेता वही करते है जो शहरों में करते रहे है । स्पष्ट है कि भारतीय राजनीति में इन दुष्कर्मो के कारण भारतीय समाज का अहित ही हुआ है ।

देश की इसी भ्रष्ट राजनीति के कारण समाज में कई तरह के अन्याय और अत्याचार हो रहें । भय तथा आंतक का माहौल बन गया है । नारी पर पहले भी अत्याचार होते थे और आज भी हो रहें है । फलस्वरूप सस्ते पर कोई कह जाता है । तो लोग कहते है कि इससे हमारा मतलब नही ।

मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में सरकारी तंत्र, नौकर शाही तथा पुलिस की दमनकारी प्रवृत्तियों को उजागर करन की कोशिश की है । इसी व्यवस्था का पोल खोलनेवाली इनकी कहानी है 'सो दुविधा, पारस नहिं जानत' में लेखक कहते है कहानी का अनुभव मेरा निजी अनुभव नही है । वह आप सबका अनुभव है सार्वजनिक अनुभव । क्या आप वैसे लोगों को नही जानते जो पिछली व्यवस्था में अभियुक्त थे, अनेक संगीन जुर्म उनके नाम थे लेकिन नयी व्यवस्था में वे नयी आजादी के प्रणेता साबित किये गये सच्चे राष्ट्रभक्त सच्चे समाजसेवी । मैं यह नही कहता कि जो पिछली व्यवस्था में गलत होता है, वह अगली व्यवस्था में सही नही हो सकता ? या लगाये गये आरोप आरोपित और मिथ्या नही हो सकते ? यह जॉच पडताल और न्याय प्रक्रिया का विषय है व्यवस्था से हटने और सटने का नही अगर व्यवस्था से हटना और सटना ही सब कुछ है तब फिर व्यवस्था, व्यवस्था न होकर पारस पत्थर होने का भ्रम पैदा करने लगती है । इस भ्रम ने सचमुच मुझे बहुत चिन्तित और परेशान किया था । परंतु इस संदर्भ में एक व्यक्ति का व्यवस्थागत उत्थान पतन देख मेरा सारा भ्रम जाता रहा । मै एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूॅ जो पिछली व्यवस्था में अभियुक्त था । बाद में दूसरी व्यवस्था आने पर

उसे महान समाजसेवी और सच्चा राष्ट्रभक्त बना दिया गया । लेकिन पुनः जब तीसरी व्यवस्था आयी तो उसे अभियुक्त के कठघरे में लाकर खडा कर दिया गया" ।[3] स्पष्ट है कि हमारे प्रजातंत्र में भी ऐसा होता रहा है । एक सरकार आती है तो चोर को समाज सेवा के रूप में उसे सन्मानित किया जाता है और दूसरी सरकार आती है तो उसे अभियुक्त बना दिया जाता है । यह कहानी सरकारी व्यवस्था की पोल खोल देती है । उसी प्रकार भय और आंतक तथा असुरक्षा की बढती भावना को मिथिलेश्वर 'सरे आम' कहानी में चित्रित करते है । दो पढे लिखे नौजवान नौकरी के साक्षात्कार में जाते है एक तो परिवहन निगम में क्लर्क की नौकरी मिलती है तब दूसरे को घुस देकर कंडक्टर बना दिया जाता है । लेकिन वह कंडक्टर गुन्डों का शिकार होता है । वह कई बार अपने रहने की जगह बदलता है आखिरी बार तो वह पुलिस स्टेशन के पास अपने लिए कमरा लेता है । फिर भी गुण्डेां के हाथों मार दिया जाता है । तो हम सोच सकते है कि इस समाज में सामान्य लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी कैसी है । लेखक कहते है- "फिर मेरी नजर पूरे शहर पर दौड जाती है । लेकिन इस शहर से निराश होकर पुनः दूसरे बडे शहर पर जा टिकती है । यहॉ भी उसे निराशा ही मिलती है और दिल्ली के इस छोर से उस छोर तक पूरे देश केा टटोलती है । पूरे देश में मुझे कही भी ऐसा सुरक्षित स्थान नजर नही आता है जहॉ रहकर दोस्त अपने केा बचा सकते थे" ।[4] स्पष्ट है सारी व्यवस्था परिवर्तित हो गई हे । और सामान्य लोगों का जीवन जीना दुभर हा गया है । व्यवस्था अनास्था में बदल गई है ।

पंचायत राज की व्यवस्था इस लिए शुरू की गई की ग्रामीण क्षेत्र में परिवर्तन हो सकें । गावों का विकास हो सके । ग्रामीण जनता को रोजगार के लिए शहरों की ओर भागना न पडे । महात्मा गांधीजीने रामराज्य की कल्पना इसी लिए की थी लेकिन यह संभव नही हो सका । गावों का विकास पूरी तरह से नही हो सका । महात्मा गांधीजी रामराज्य की इस प्रकार प्रत्येक गाव एक गणराज्य अथवा पंचायत राज होगा । उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी" ।[5] यही उद्देश्य सामने रखकर महात्मा गांधी के जन्म दिन के अवसर पर पंचायत राज का शुभारंभ हुआ । जिसके उद्देश्य कृषि सुधार, यातायात के साधन, तथा ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की व्यवस्था और चिकित्सा के साधन बढे । लेकिन यह पंचायत राज विशिष्ट याने धनी साहुकारों, जमीदारों के कब्जे में चले गये ।

जो भी योजनाएँ गरीबों के लिए बनती गई । यह विशिष्ट लोग अपनी जेबें भरते गये । पंचायत राज के बारें में डॉ. विवेकीराय अपनी बात इस तरह रखते है । कृषि यातायात शिक्षा और स्वास्थ आदि विषयों में गॉवों के विकास के पूर्ण अधिकार और सुविधाएँ ग्राम पंचायतों को दी गई । गुप्त मतदान पध्दति से चुनाव कराने की व्यवस्था की गई । आदिम और अनुसूचित जन जातियों को सुरक्षित प्रतिनिधित्व दिया गया अब तो महिलाओं को भी सुरक्षित प्रतिनिधित्व दिया गया । फिर भी पंचायतों से ग्राम विकास तथा स्वास्थ जनतांत्रिक परम्परा का पौधा नही उग पाया । पंच परमेश्वर की भावना का विकास नागरिकता की शिक्षा, शांति , सुरक्षा, ग्राम जीवन की इकाई की सुदृढता, रामराज अर्थात ग्राम राज्य में गांधी के सपनों के गांव का विकास , सारे उँचे उद्देश्य जातिवाद, अशिक्षा, दरिद्रता राजनीति, नेतागिरी, स्वार्थ , लूट और नौकरशाही के किचड में सन गये और परिणाम ठीक उल्टा निकला" ।[6] स्पष्ट है कि पंचायत राज तो आया लेकिन गांवों में सरपंच (मुखिया) आदिवासी, दलित होता है । लेकिन उसपर राज कररनेवाला ऊँची जाति का होता है । इसी तथ्य को मिथिलेश्वर 'एक गांव की अन्तकथा' में लिखते है- "मेरे गांव को सुखे से मुक्ति कहॉ है ? गांव को सरकार ने अकालग्रस्त घोषित नही किया । इस पर मेरे गांव को लगभग लगान देना बन्द कर दिया है । दोनें और से संघर्ष छिड गया । कर्मचारी पुलिस के साथ आते और गाय भैंस खोलकर ले जाते । दरवाजों से चौखड किवाड निकालकर ले जाते । राजशक्ति की क्रूरता के आगे मेरे गांव को झुकना पडा" ।[7] ग्राम पंचायतों के बारे में लेखक लिखते है- "ग्रामपंचायत के मुखिया और सरपंच चुनाव प्रचार के दौरान ही पहचान जाते है कि कौन उसके पक्ष में है और कौन विपक्ष में ? फिर मुखिया और सरपंच बनते` ही विपक्ष से मुँह मोड लेते है । पंचायत के माध्यम से विपक्ष को सुविधा और सहायता तो दूर उन्हें तंग करने की योजनाएँ बनायी जाने लगती है, जा चुनाव के बाद की दूसरी रणनीति होती है । अपने पक्ष के सभी लोगें को भी मुखिया सरपंच सटने नही देते । जब तक नही बने थे तब तक सबको अपना बनाये थे । लेकिन चुने जाते ही बदल जाते है" ।[8] ग्रामीण पंचायतें अपना काम किस प्रकार करते है , इसका भी जिक्र मिथिलेश्वर करते है - "अपने चंद परिवारजनों और दलालनुमा व्यक्तियों को छोडकर पंचायत अन्य ग्रामीणों की ओर कोई ध्यान नहीं देती । प्रखंड विकास कार्यालय से मिलकर स्वयं दलाली करने लगती है । इस संदर्भ में मुखिया और सरपंच व्दारा वितरित किया जानेवाला राशन,

खाद, चीनी आदि का व्यापक घालमेल देखा जा सकता है" ।[9] स्पष्ट है कि आज ग्रामीण क्षेत्र में यही स्थिति देखी जा सकती है । और ग्रामीण इस बदलाव की उम्मीद भी बहुत कम करते है । लेखक गांव की प्राथमिक स्कूल के बारें में भी बताते है- "मेरे गांव में बच्चों के लिए एक पाठशाला है । पाठशाला की तीन कोठारियो में से एक कोठरी में जोरावर सिंह का भूसा भरा हुआ है । यह पाठशाला कब खुलती है, इसमें लडके पढते है या नही शिक्षक कब आते हैं और कितने दिनों पर आते है यह सब बता पाना संभव नही" ।[10] वैसे ही गांव में सुविधा पहुॅच तो जाती है लेकिन उसके कार्यान्वयन में भारी गडबडियॉ होती है । कर्मचारी केवल वेतन लेते है । काम नही करते । इस पर लेखक लिखते है- "गांव की बगल में वयस्क शिक्षा का भी केद्र है, लेकिन हकिगत यह है कि इस शिक्षा के माध्यम से एक भी वयस्क शिक्षित नही हुआ है । वयस्क शिक्षा के शिक्षक और सुपरवायझर तो गांवो से शुध्द घी और सस्ते अनाज खरदीकर शहरों में सप्लाई करते है । इस तरह वेतन के साथ साथ गांवों से जुडने का दोहरा फायदा उठाते है" ।[11] उसी प्रकर गांवों में और भी अधिक सुविधाऍ आयी । जैसे प्राथमिक चिकित्सा केद्र , वृध्दास्था पेन्शन , स्वतंत्रता सेनानी पेशन, बेरोजगारी भत्ता आदि लेकिन इन सबका लाभ किसी अन्य लोग ले रहे है । लेखक लिखते है- "मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नही की सरकार व्दारा मिलनेवाली ये सुविधाऍ वितरण करनेवाले सरकारी कर्मचारी मिल जुलकर हडप जाते है, अगर कुछ लोग प्राप्त करने में सफल हो जाते है , तो वे नही जो वास्तविक हकदार होते है , बल्कि जो घूस की मोटी रकम दे सकते है और पहुॅच के स्तर पर अपने को दावेदार साबित कर सकते हैं । लाल कार्ड के साथ भी यही स्थिति है" ।[12] यह एक गांव की अन्त:कथा लिखने का दृष्टिकोन समझाते है- "जाडे की एक शाम जब मै अपने गांव में घूम रहा था तो अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया कि मुझे अपने गांव पर एक कथा रिपोर्ताज लिखना चाहिए । यह ख्याल धीरे धीरे मेरे अन्दर गहराने लगा । फिर गर्मियों की एक दोपहरी में मैंने इसे लिख दिया । सचमुच कभी कभी किसी रचना का प्रवाह ऐसा आता है कि एक ही बैठक में वह पूरी हो जाती है । हालॉकि ऐसा बहुत कम होता है । मेरी जिन चन्द रचनाओं के साथ ऐसा हुआ है, उसमें एक गांव की अन्त:कथा भी है" ।[13]

ग्रामीण व्यवस्था के लिए कई सरकार व्दारा कई परियोजनाएँ लायी गई है । लेकिन उसमें सुधारों की आवश्यकता है ।

सांमतीय जीवन की स्थिति मिथिलेश्वर जी ने अपने कहानी साहित्य में स्पष्ट की है । आजादी के बाद सांमतीय जीवन में परिवर्तन देखा जा सकता है । क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का नियम है । इस संदर्भ में डॉ हेमेद्र पानेरी लिखते है- "सामाजिक प्रक्रिया के संदर्भ में समाजशास्त्रियों की दो धारणाएँ विद्यमान है प्रथम यह है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया एक चकली भॉति चलती है । जैसे दिन के पश्चात रात एंव रात के पश्चात दिन आता है । जैसे ऋतु परिवर्तन चलता रहता है , ठिक उसी प्रकार समाज में परिवर्तन का चक्र चलता रहता है । समाज बनता है, बिगडता है, फिर बनता है । सभ्यताओं का उदय अन्त एवं पुनः होता है । इस प्रक्रिया को चाक्रिक की संज्ञा दी गई है । परिवर्तन के संदर्भ में दूसरी धारणा यह है कि सामाजिक परिवर्तन चक्र में न चलकर एक दिशा की ओर, विकास की ओर बढता है" ।[14] इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज व्यवस्था सामाजिक तथा राजनीतिक तौर पर बदलती रही है ।

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन कुछ मात्रा में जरूर हुए लेकिन शोषण के मार्ग बदल गये है । जमींदारी तथा सामंत्ती प्रवृत्ती कानूनन खत्म की भी गयी है । लेकिन इन लोागो ने गांवों में अपना दबदबा कायम रखा है । इन लोगों ने राजनीतिक लोगों से सॉठ गॉठ करके अपना कार्य करते रहे है । ग्रामीण योजनाओं को भी सरकारी अधिकारियों को अपने वंश में करके अपनी जेबों में भरते गये । मिथिलेश्वर ने 'एक सडक और तीन सौदेबाज' कहानी में इसी प्रवृत्ति का चित्रण किया है । ठेकेदार, इंजिनियर और नेता यह सब मिलकर ग्रामीणों का शोषण करते है । उनके खिलाफ बोलने की किसी की हिम्मत नही है । नेता के संदर्भ में यही कहा जा सकता है 'वह' जिसकी ओर नजर उठाकर देखता, वह हाथ जोडे नजर आता जिस अफसर को जो संकेत देता, वह अफसर तत्काल उसका पालन करता । उसके साथ के लोग उसकी सेवा में बराबर तत्पर रहते । वह जब किसी चीज की इच्छा प्रकट करता लोग तत्क्षण उसकी पूर्ति करता" ।[15] स्पष्ट है कि राजनेता ही सामत्ती प्रवृत्ति का परिपोषण कर रहे है ।

भारतीय राजनीति की चुनाव प्रक्रिया भी बडी विचारणीय है । 1950 मे भारतीय प्रजातंत्र शुरू हुआ और 1951 में चुनी हुयी सरकार स्थापित हुयी । पं नेहरू के नेतृत्व में हमारी चुनी हुयी सरकार बनी । भारतीय समाज ने इस सरकार से काफी अपेक्षाएँ रखी लेकिन वह अपेक्षा निराशा में बदल गयी । क्योंकि चुनाव हमेशा से जाति के आधार पर लडे गये । तथा जाति के आधार पर पार्टिया विभाजित हुयी । जिस स्थानपर जिस जाति का बोलबाला है । हरेक पार्टी ने उसी जाति विशेष के आदमी को टिकट देकर जिताया है । यहॉ तक की चुनावों में जीत हासिल करने के लिए अलग अलग हथकंडे अपनाये गये । जिसमें जाति को आधार बनाकर दंगे करवाना, गुण्डों, बदमाशों के हाथों मतदाता बुथों पर कब्जा करना, पैसे देकर वोटों को खरीद लेना आदि आदि कई हथकंडे अपनाए जाते है । और यह उपर से लेकर नीचे तक भारतीय समाज उसमें जकडता रहा है । गावों में भी यही चित्र देखा जा सकता है । लेखक इस बारें मे कहते है - "चुनाव में खडा व्यक्ति अगर मेरे गाव की मुख्य जाति का है या मेरे गॉव का सम्बंधी है या मेरे गांव से सम्बन्ध रखता है तो उसे ही मत दिया जाता है । हालॉकि इस संदर्भ में विभिन्न जातियोंवाले मेरे गांव में अकसर ही तनाव व्याप्त हो जाता है । पर सफलता उसी वर्ग को मिलती है जो वर्ग बूथ पर कब्जा कर लेता है । इस मामले में कई बार बूथ का चुनाव अवैध घोषित किया जा चुका है । फिर भी यह प्रक्रिया जारी है । इसको लेकर मेरे गांव के कुछ हिस्सों में क्षोभ और असंतोष पसरता जा रहा है" ।[16] यहॉ तक की भारतीय ग्राम पंचायतों मे भी यही चित्र देखने के लिए मिलता है । जाति को आधार बनाकर चुनाव लडे और जीते जाते है । मिथिलेश्वर जी कहते है- "ग्राम पंचायत के मुखिया और सरपंच चुनाव प्रचार के दौरान ही यह जान जाते है कि कौन उनके पक्ष में है और कौन विपक्ष मे फिर मुखिया और सरपंच बनते ही विपक्ष से मुॅह मोड लेते है । पंचायत के माध्यम से विपक्ष को सुविधा और सहायता तो दूर उन्हें तंग करने की योजणाएँ बनायी जाने लगती है , जो चुनाव के बाद की दूसरी रणनीति है । अपने पक्ष के सभी लोगों को भी मुखिया सरपंच सटने नही देते । जब तक नही बने थे तब तक सबको अपना बनाये थे । लेकिन चुने जाते ही बदल जाते है ।17 याने पूरी चुनाव प्रक्रिया ही वर्तमान समय में बदलने की आवश्यकता है । जिसमें केवल जाति, धर्म, संप्रदाय न हो केवल यह देखा जाए कि नेता का चरित्र कैसा है । तब ही हम यह व्यवस्था परिवर्तित कर सकते है अन्यथा नही ।

भारतीय पुलिस भी इससे भिन्न नही है । पुलिस विभाग में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है । उनके तबादले शिफारिशें तथा रिश्वत से किये जाते है । नौकरियॉ पाने में भ्रष्टाचार है तो नौकरी मे भी भ्रष्टाचार आयेगा ही । पुलिस विभाग में भी जाति के आधार पर उसे डयुटी पर तैनात किया जाता है । उसी प्रकार सामान्य लोगों के शोषण में भी पुलिस पीछे नही है । धन के आधार पर ही पुलिस व्दारा आजकल न्याय होता है । जिसके पास धन वह उसका सहारा लेकर बेलगाम घुमता है । लेकिन जो गरीब है शोषित है उसे पुलिस जेलों में बंद कर देती है । मिथिलेश्वर जी की 'उम्र कैद' ऐसी ही कहानी है । जो आर्थिकता तथा गरीबी के कारण चोरी, डकैती करता है । उसे पुलिस पकड लेती है । सरना पर पुलिस तरह तरह के अत्याचार करती है । मारपीट से बचने के लिए सरना अपने साथियों के नाम बताता है तो पुलिस आग बबूला हो जाती है । क्योंकि उन लोगों की पहुॅच उपर तक है । वह गरीब है इसलिए उसे जेल में डाल दिया जाता है । उसकी व्यथा सुनने के लिए कोई तैयार नही है । तब सरना सोचता है कि- "जेल भी बडे बडे डाकू और खुनियों के लिए है ठाट से मजा मार रहें है "।[18] स्पष्ट है कि पुलिस भी सहुकारों तथा बडे लोगेां का पक्ष लेते है । निर्धन की कोई बात सुनी नही जाती । नारियों पर भी तरह तरह के अत्याचार होते है लेकिन पुलिस तमाशबीन बनी खडी देखती रह जाती है ।

नेता तथा अधिकारी वर्तमान समय में सबसे भ्रष्ट बन गये है । अग्रेजों के जमाने में साहूकार और जमींदार ग्रामीण जनता का शोषण करते थे । आजादी के बाद राज नेता और भ्रष्ट अधिकारी लोगेां का शोषण करते है । वे अपने स्वार्थ सिध्दी के लिए कुछ करने के लिए आमादा है । नेता और अधिकारियों की सांठ गांठ के कारण सामान्य जनों के लिए जो भी योजनाएॅ बनायी जाती है । वह इन्ही लोगों के व्दारा बीच में ही खत्म हो जाती है । जैसे- "सरकारी प्रचार की समस्त तामझाम के बावजूद यह योजना अपने लक्ष्योदेश्यों की पूर्ति नही कर पाई । ग्रामीणों में आंतरिक प्रेरणा पैदा नही हुई कि वे आत्म सुधार करें और एक नया भारत बनाने के लिए प्रयत्न करें । पारस्परिक एकता प्रेम एंव सदभाव के बदले ईष्या, द्रेष, फूट, घृणा एवं अलगाव के भाव ही अधिक पनपे । घटिया राजनीतिक दॉव पेचों और नौकरशाही भ्रष्टाचार ने करेले के नीम चढे होने की कहावत चरितार्थ की" ।[19] इन सब में ग्रामीण वर्ग पिस रहा है । उसका हर जगह पर शोषण हो रहा है । नेताओं के संदर्भ में 'रात अभी बाकी' है में निझावन कहता है -

"कैसी आजादी के सपने संजोये थे क्या वह सब कुछ मात्र दिखावा , भ्रम और छलावा ही था ? क्या उतनी बडी आजादी सिर्फ चन्द लोगों केा कुर्सी से चिपकाने भर तक ही थी ? कुछ भी समझ नही आता है निझावन को" ।[20] इसी तरह भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों पर भी मिथिलेश्वर 'एक सडक और तीन सौदेबाज' कहानी में पोल खोलते है आज सर्वत्र दो प्रकार के सम्बंध है नाम के सम्बंध और काम के सम्बंध । नाम का सम्बंध औपचारिक होता है , काम का सम्बंध व्यावहारिक अर्थात रिश्वत पर आधारित । ग्रामीण किसान इस रिश्वत की चक्की का शिकार हुआ है । ग्रामविकास की सारी योजनाएँ मृगमरिचिका सिध्द हुई है क्योंकि ठेकदार , इंजिनियर और नेता मिलकर अपनी जेबें भर रहे है" ।[21] इससे स्पष्ट होता है कि हमारे राजनेता और अधिकारी मिल जुलकर इस देश को लुट रहे है । जिनके चुनाव जीतने के बाद करोडों की संपत्ती आ जाती है । उसी प्रकार भ्रष्ट अधिकारियों के भी बॅकों के लॉकर धन से भरे पडे है । और ग्रामीण जनता इस शोषण में त्राहि त्राहि कर रही है ।

श्रमिक मजदूर तथा किसानों का शोषण पहले से हो रहा है । जिससे विद्रोह की चिनगारी कभी कभी उठती है । गावों में गरीबी, शिक्षा, स्वास्थचिकित्सा, बिजली की समस्या, नयी और पुरानी पीढि का संघर्ष आदि समस्याए है । किसानों की स्थिति के बारें में मिथिलेश्वर लिखते है- "मजबूरी और लाचारी का दूसरा नाम गांव का किसान है । असहाय , असमर्थ अपनी पीडा के इजहार से वंचित जितना लूटो, जितना टॅक्स लाद दो वह देगा नही तो जायेगा कहा" ।[22] उसी प्रकार गावों के बेरोजगार शहरों में नौकरी की तलाश में निकले लोगों का हमेशा शोषण होता रहा है । मिथिलेश्वर ने 'मेघना का निर्णय' मजदूरों के शोषण के खिलाफ आवाज बुलन्द करनेवाली कहानी है । मेघना गांव में रहता है उसकी छोटी सी झोपडी है । लेकिन गांव में पैसा कमाना तथा अपना परिवार का पालन पोषण करना बडा मुशिकल कार्य है । उपर से मालिकों की गाली गलौच्च भी सुनना । मेघना की पत्नी उसे समझाते हुए कहती है - "गांव बाबू लोगों का है । वे गांव के मालिक है । अगर तुम्हे डांट फटकार और गाली ही दे दी तो क्या हुआ वे बडे लोग है । पुश्तों से इस गांव पर उनका शासन चला आ रहा है । उनसे टकराने की बात मत सोचो पानी में रहकर मगर से बैर ठीक नही होगा"।[23] इसिलीए गांव को त्यागकर मेघना शहर की ओर जाता है । वहॉ मिस्तरी के हाथ के नीचे काम करता है । लेकिन वहॉ भी उसका शोषण होता है । वह हेड मिस्तरी के बारें में कहता

है- "हेड मिस्तरी मजदूरों का हमदर्द नही बल्कि दुश्मन है । वह मजदूरों का खून चुसनेवाला है । मकान मालिक, मजदूर और मिस्तरी भेजने तथा अपनी निगरानी में मकान बनाने के ऐवज में हेड मिस्तरी को काफी पैसा देते है । पूरे शहर में मिला जुलाकर हेड मिस्तरी को तीन हजार रूपये माहवारी पड जाते है । लेकिन हेड मिस्तरी का इससे भी पेट नही भरता । जिन मजदूरों के चलते उसे इतने रूपये मिलते हैं, उन मजदूरों की मजदूरी में भी वह एक रूपया काट लेता है । मालिक के प्रति मजदूर पांच रूपये रोज के हिसाब से हेड मिस्तरी लेता है लेकिन मजदूरों को चार रूपये रोज के हिसाब से ही बाटता"।[24] यही शोषण के खिलाफ मेघना संघटन बनाकर विद्रोह करता है । वह मरने और मारने की बात करता है । जैसे- "अब गांव के बाबुओं से भी टकराना होगा । बात सिर्फ शहर की हो तो कोई बात नही थी । लेकिन शहर के मालिक के साथ गांव के बाबू लोग भी मिल गये है । हम गांव के बाबूओं के बनिहार, चरवाह तो नही कि वे अपना रौब हमे दिखायेगें । हम उनकी जमीन पर नहीं बसे है । उनसे हमारा कुछ लेना देना भी नही है वे लाख मनमानी करते है तब भी हम उनके बीच नहीं जाते हैं । फिर वे हमारे बीच क्यो आते है ? हमें जान की बाजी लगाकर भी उनका जबाब देना होगा, नही तो वे हर बार इसी तरह शहर के मालिकों से मिल कर हमें दबाते रहेंगे" ।[25] ऐसे ही मजदूरों का शोषण होता रहा है । इनके लिए कानून कायदा कोई मायने नही रखता । ना यह कानून से डरते हे । स्पष्ट है कि मजदूरों का शोषण होता रहेगा । मिथिलेश्वर जी ने 'एक और हत्या' कहानी में गावों के बडे बडे जमींदारों के यहॉ काम करनेवाले लोगो का शोषण भी हमारे सामने प्रस्तुत किया है । जगेंसर हरपालसिंह के यहॉ काम करता है । उसे काम करते हुए भी गालियॉ सुननी पडती है- "जैसे लाट साहब बने है साले । बाजार में जाकर मजा मार रहे है, महिना खत्म होते ही अपनी मेहरिया को जाकर पच्चीस रूपये दे आते है, और भैस हम खिलाये । एक दिन की रहती तो एक दिन की--- साले ने रोज का नियम बना लिया है । जब कही किसी काम को भेजता हूॅ चुतिया वही जमा रह जाता है । खाना साले को बढिया चाहिए । धोती आठ से कम की लेगे नही । घटे भर से साले की राह देख रहा हूॅ दस डेग पर बाजार है । दिन भर में आदमी सैकडों बार बाजार से आ जा सकता है, मर यह कमीना है कि इसका कोई जबाब नही है मेरे पास । दरवाजे पर भैंस टर्रा रही है" ।[26] ऐसे ही

किसानों मजदूरों तथा श्रमिकों का शोषण हो रहा है । जिसे मिथिलेश्वर जी ने अपने कथा साहित्य में उसे विश्लेषित किया है ।

शिक्षा जगत में भी भ्रष्टाचार और अनाचार फैला हुआ है । मिथिलेश्वर पेशे से प्रोफेसर रहें है । उन्होंने शिक्षा संम्बंधी राजनीति बहुत करीब देखी है । महाविद्यालयों , विश्वविद्यालयों में जाति के आधारपर किसी को भी सिनेट में या अन्य स्थानों पर नियुक्ति देने की परंपरा रही है । जिसे मिथिलेश्वरजीने 'अध्यापन' कहानी में विशद किया है । लेखक लिखते है- "अध्यापन अध्यापक जीवन के मेरे अनुभवों पर आधारित कहानी है । पहले मै स्वतंत्र लेखन में था । बाद में कॉलेज प्राध्यापक के कार्य से आ जुडा । दरअसल शिक्षक का पद मेरी दृष्टि में सर्वाधिक उपयोगी और सार्थक पद था, इसीलिए इस पर का चुनाव मैंने किया था" ।[27] कैलासचंद इस कहानी का नायक है । अध्यापक कभी समयपर तासिका नही लेता है । अपना जी चुराता है । छात्रों को बेकार की बातों में उलझाएँ रहते है । लेखक इस प्रवृत्ति पर आधात करते हुए लिखते है- "उन्होंनें शिक्षकों की इस गलत प्रवृत्ति का न तो कभी समर्थन किया है और न इसे अपने जीवन का अंग ही बनने दिया है । एक कॉलेज शिक्षक के जिम्मे सप्ताह में सिर्फ चार या पांच क्लास ही होते हैं और प्रत्येक क्लास मात्र पचास मिनट का । लेकिन इस कार्य के प्रति भी जी चुराते हुए गैर जिम्मेदार हुआ जाए, यह उन्हें सरासर अनुचित और अनैतिक लगता है" ।[28] लेकिन जब नौकरी नही होती तो कितनों के आगे हाथ पसारते है । लेकिन जब नौकरी मिल जाती है तो अध्यापकों के रंग ही बदल जाते है । वे हमेशा राजनीति की बातें करते है । या अन्य दूसरी योजनाओं की इससे बेहतर यह है कि बहसबाजी छोडकर अध्यापकों को अपना ज्ञानवर्धन करने के लिए पुस्तकालयों में जाना चाहिए । बल्कि अध्यापक यह सब अच्छे कार्य छोडकर अलग चर्चाओं में तत्पर है । वे सोचते है - "सिनेट और सिडिकेट का चुनाव, रजिस्टार और वाइस चान्सलर की निकटता, परिक्षा अधिक्षक और एडमिशिन इन्चार्ज का पद, लेक्चरर से रीडर और रीडर से प्रोफेसर में पदोन्नती, विश्वविद्यालय की अधिकारी के पद पर पहुॅचने की योजना, इसके अतिरिक्त अपनी चर्चाओं में वे जातिय समीकरण की गोटियॉ भी फिट करते है तथा स्थानान्तरण और पदोन्नती के माध्यम से उठा पटक की रणनीति भी तय करते है । अध्ययन - अध्यापन के नाम पर कॉलेज में जुटने का उलटा उद्देश्य अंजाम दिया जाता है" ।[29] उसी प्रकार से शिक्षा विभागों में रिश्तेदारों के कारण भी कई लोग अध्यापक बन

जाते है । बालेश्वर ऐसे ही टॉपर अध्यापक है जिन्हें पढाना तथा छात्रों को अपना बनाना नही आता है । जब कैलासचंद अच्छे अध्यापक है । सभी छात्रों को एक समान मानते है । और अपने विचारों और मूल्यों से कभी समझौता नही करते । इस कारण छात्रों में लोकप्रिय भी बनते है । किन्तु छात्रों में गुटबाजी है, गुडागर्दी है । हमेशा दो गुडो में ठन जाती है । परिक्षाएँ ठिक से नही होती है । नकल करना एक बहुत बडी समस्या बन गई है । लेकिन फिर भी कैलासचंद इस चित्र को बदलना चाहते है । छात्र केवल डिग्री के लिए ना पढे बल्कि उसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए यही उम्मीद वह रखते है - "कैलासचंद को विश्वास है, एक जोरदार आंधी आएगी , जो इस उमस को ले जाएगी । फिर नया वातावरण बनेगा , उस नये वातावरण के आगमन को कोई रेाक नही सकता" ।[30] लेखक भी स्वयं इस अनुभव से गुजरे है । वे लिखते है- "कॉलेज में आने के बाद मैंने पाया कि अध्ययन अध्यापन और कुछ बनने करने का माहौल वहॉ से तिरोहित होता जा रहा हे । कॉलेज और विश्वविद्यालय डिग्री प्रदान करने के लिए करखाने बनते जा रहे है । छात्रों ने अध्ययन, मनन और चिंतन तथा शिक्षकों से जानने समझने और सिखने की अपेक्षा डिग्री प्राप्त करने के अन्य कई सहज और आसान मार्गो का अविष्कार कर लिया है" ।[31] कैलासचंद के माध्यम से लेखक यह व्यक्त करते है कि अध्यापकों को अपना कर्तव्य कर्म पूरी ईमानदारी लगन और मेहनत से करना चाहिए । जिससे समाज परिवर्तन का दायित्व का निर्वाह हो सकें लेखक को महसूस होता है कि हमारे समाज में कुछ अच्छे लोग भी इसी लिए वे लिखते हे- "शिक्षक एवं छात्र है जो इस माहौल को बदलना चाहते है और पूरे मन से इस कार्य में लगे हुए है । अगर वैसे शिक्षक न होते तो शायद अध्यापन कहानी की रचना मैं नही कर पाता । ऐसे ही एक शिक्षक कैलासचंद को लेकर अध्यापन कहानी की रचना की है । सचमुच यह सुख और संतोष का विषय है । कैलासचंद जैसे शिक्षकों की निरन्तर वृध्दि होती जा रही है । कहने की आवश्यकता नही कि ऐसे शिक्षक ही नये वातावरण की करागर पृष्ठभूमि तैयार कर रहे है । दरअसल, नये वातावरण को पनपने से और देर तक रोका नही जा सकता । उमस के अधिक बढ जाने के बाद ऑधी आने और वातावरण को सामान्य बना जाने की क्रिया क्या किसी के रोके कभी रूकी है" ।[32] इससे यह बोध होता है कि शिक्षा जगत में बदलाव जरूरी हे । और शिक्षा क्षेत्र में सुधार होगा । मिथिलेश्वर ने अपने पिता पर इसी कथ्य को लेकर कहानी लिखी हे । 'एक थे प्रो बी लाल' जो बहुत अधिक

कर्मठ और अपनी शर्तो पर जीने वाले अध्यापक थे । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजीने राजनीतिक व्यवस्था के चलते विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा संस्थाओं में बढते भ्रष्टाचार, दुष्प्रभावों को प्रस्तुत कर भारतीय समाज को सोचने के लिए मजबूर किया हे ।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि मिथिलेश्वरजीने अपने कथा साहित्य में राजनीतिक ग्रामीण जीवन का गहराई और सच्चाई से चित्रण किया है । हमारे देश में राजनीति किस ओर जा रही है । भाई भतिजावाद का सहारा लिया जा रहा है । नेताओं का चरित्र भ्रष्ट होता जा रहा है । वे केवल वादे करते है । उन्हें कभी पूरा नही करते राजनीतिक पार्टियों भी भ्रष्टाचार को पनाह देती है । चुनावों में जाति धर्म संप्रदायों को आधार बनाया जाता रहा है । अर्थ नीति के कारण सत्ता काबिज की जाती है । लोगों का लालच देकर पांच साल के लिए चुने जाते है । और चुनने के बाद लोगों की ओर से आंख मुद लेते है । सारे नेता अवसरवादी हो गये है । चुनावों में गुन्डों का सहारा लिया जाता है । आज हमारा समाज भय और आंतक में जी रहा है । हमारी सुरक्षा की कोई जिम्मेदारी वहन नही करता है । पुलिस भी धनवानों तथा नेताओं की साठगांठ में सुरक्षित महसूस करते है । ग्रामीण क्षेत्र में भी यही स्थिति देखी जा सकती है । किसानों, श्रमिकों तथा मजदूरों का शोषण हो रहा है । जमींदारी व्यवस्था कानून के व्दारा खत्म की गई है लेकिन जमींदारों की प्रवृत्ति में कोई बदलाव नही हुआ है । ग्रामीण क्षेत्र में नारी की स्थिति आज भी भयावह है । चाहे वह श्रमिक हो, गृहस्थी चलाती हो । उसे हमेशा छला जाता रहा है ।

स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी ने इन सब राजनीतिक हथकडों का जायजा लिया है और हमें उसके प्रति सोचने के लिए मजबूर किया है । यही सच्चे लेखक की सार्थक उपलब्धि होती है ।

संदर्भ

1) डॉ. रमेश देशमुख - आठवें दशक की कहानी में जीवन मूल्य पृ 18

2) रामचंद वर्मा - संक्षिप्त हिन्दी शब्दकोश पृ 849

3. मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले के नेपथ्यसे पृ 12

4. मिथिलेश्वर (बंद रास्तों के बीच) सरे आम पृ 74

5. महात्मा गांधी - हरिजन पत्रिका 28/7/-1946-1

6) डॉ विवेकी राय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्रामजीवन पृ 76 -77

7) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गॉव की अन्तकथा पृ 211

8) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गॉव की अन्तकथा पृ 215

9) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 215

10) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 215

11) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 216

12) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 217

13) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 15-16

14) डॉ हेमेद्र पानेरी - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में मूल्य संक्रमण- पृ 65

15) मिथिलेश्वर - हरिहर काका तथा अन्य कहानियॉ पृ 50

16) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - एक गांव की अन्तकथा पृ 215

17) मिथिलेश्वर - एक गॉव की अन्तकथा पृ 215

18) मिथिलेश्वर - उम्रकैद पृ 46

19) डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 06

20) मिथिलेश्वर - बन्द रास्तों के बीच पृ 127

21) डॉ वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 91

22) मिथिलेश्वर - एक गांव की अन्तकथा पृ 211

23) मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय पृ 1-2

24) मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय पृ 09

25) मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय पृ 18-19

26) मिथिलेश्वर - बाबूजी पृ 25

27) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले नेपथ्य से- पृ 9

28) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले नेपथ्य से- पृ 70

29) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - अध्यापन पृ 73

30) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले - अध्यापन पृ 82

31) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले नेपथ्य से -पृ 9

32) मिथिलेश्वर - भोर होने से पहले नेपथ्य से -पृ 9

पंचम अध्याय

मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण आर्थिक जीवन

आजादी प्राप्ति के पश्चात देश का परिपूर्ण विकास का सपना देखा गया जिसमें सबसे अधिक आर्थिकता पर जोर दिया गया । और यह कार्य आसान नही था । हर भारतीय वर्ग के जीवन में सुधार तथा परिवर्तन हो यह भी चाह थी ।समाज उन्नति की ओर ले जाने हेतु योजना आयोग का गठन किया गया । जिसके व्दारा आनेवाले पांच सालों की पंचवार्षिक योजना बनायी गई । जिससे समाज की आर्थिक हालत में सुधार होगा, इसका लक्ष्य रखा गया था । विभिन्न योजनाएं आयी लेकिन उसके अमंल में लानेवाले लोग सक्षम नही थे । जिसके कारण अपेक्षित तरक्की हम नही कर पाये । औद्योगिक विकास को लक्षित किया गया लेकिन रोजगारी की तलाश में गांव से निकले पढे नौजवान शहरों में जाकर भ्रमनिराश ही हुए । और किडे मकौडों की तरह जीवन निर्वाह करने लगा । शिक्षा नीति भी कारगर साबित नही हुयी । क्योंकि ऐसी नीति से हमने बेरोजगारी ही बढायी है । सरकारी यत्रणाएँ भी भ्रष्टाचार तथा अपने अपने हितों की रक्षा करने में लगे पाये गये । जिससे पैसा कमाना ही एकमात्र प्रयाजन रह गया इस बारें में डॉ. टी मोहन सिंह लिखते है- "प्राचीन भारतीय समाज में धर्म , अर्थ, काम एवं मोक्ष जीवन के पुरूषार्थ माने जाते थे किन्तु औद्योगिक क्रान्ति , पूँजीवादी व्यवस्था, व्यक्तिवादी दृष्टिकोन एवं द्वन्द्वत्मक भौतिकवादी विचारधारा के कारण अर्थ एवं काम ही आज के पुरूषार्थ बन गये है" ।[1]

अंग्रेजी शासन काल में देश की तथा समाज की आर्थिक सुधार हेतु कई योजनाएँ शुरू की । लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कही कोई परिवर्तन देखा नही गया । गावों में गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक शोषण होता ही रहा है । आजादी के बाद भी वही चित्र रहा । अपनी सरकार आनेपर ग्रामीण क्षेत्र में कई सुधारवादी योजनाएँ स्थापित तो की लेकिन वह ग्रामीण समाज तक नही पहुँची । उसका फायदा पूँजीपति, जमींदार, सामंन्त, नेता तथा सरकारी अधिकारियों को ज्यादा मिला है । भ्रष्ट शासन प्रणाली तथा भ्रष्ट अधिकारियों व्दारा गरीबों की योजनाएँ हडप ली गई । अर्थ प्राप्ति के खातिर मनुष्य को अपनी इन्सानियत खो दी है । यह नैतिक पतन का ही समय है । समाज का हर वर्ग जिसके हाथ में लाठी है । वह लूट पर आमादा है । वर्तमान समय में अर्थ ही सर्वापरि हो

गया है । कोई इसके लिए अपना ईमान बेच रहा है तो कोई अपनी अस्मत । वेश्यावृत्ती इसका सर्वोच्च प्रमाण है ।

मिथिलेश्वर ने आजादी के पहले के गांवों को भी देखा है और आजादी के बाद के भी । लेखक ग्रामीण क्षेत्र से बचपन से जुडे रहे है । उन्होंने देखा और भोगा भी है । इसी को आधार बनाकर आर्थिक वैषम्य की कई कहानियॉ लिखी है । जिसमें पढे लिखे नौजवानों की दशा, गरीबी , डकैती, शिक्षा संस्थानों में घपलेबाजी, आर्थिकता के कारण यौन शोषण, मजदूर तथा श्रमिकों का शोषण ऐसी कई समस्याओं का चित्रण किया है । मिथिलेश्वर ग्रामीण जनता के शोषण के बारें में लिखते है- "सामाजिक सडी-गली रूढियों को तोडकर अन्याय और शोषण के विरूध्द एक तेजस्विता लेकर खडे होने का संदेश 'मेघना का निर्णय' नामक इस संग्रह की कहानियों में मिलता है । मिथिलेश्वर शोषण और दमन से आक्रान्त बहुसंख्यक जन समुदाय की मुक्ति का आंदोलन उन्हीं के भीतर से छेडना चाहते है । उनकी प्राय: सभी कहानियों मे निम्न वर्ग और मध्यवर्ग के जीवन की विषमताओं के साथ उस वर्ग की चारित्रिक दुर्बलता और उसके बीच क्रांति का उगता हुआ अंकुर दिखाई देता है" ।[2]

'मेघना का निर्णय' कहानी मजदूरों के शोषण की कहानी है । मेघना अपने गांव में मजदूरी करके अपने परिवार का चरितार्थ चलाता है लेकिन उससे परिवार का पालन पोषण नही होता । इसलिए वह शहर जाकर मजदूरी करता है । लेकिन वह देखता है कि वहॉ भी शोषण है । वह उन लोगों के खिलाफ आवाज उठाता है । वह कहता है अब गांव के बाबुओं से भी टकराना होगा । बात सिर्फ शहर की हो तो कोई बात नही थी । लेकिन शहर के मालिक के साथ गांव के बाबू लोग भी मिल गये हैं । हम गांव के बाबुओं के बनिहार, चरवाहे तो नही कि वे अपना रोब हमे दिखायेंगे । हम उनकी जमीन पर नही बसे है । उनसे हमारा कुछ देना देना भी नही है । वे लाख मनमानी करते है । तब भी हम उनके बीच नही आते है । फिर वे हमारे बीच क्यों आते है ? हमें जान की बाजी लगाकर भी उनका जबाब देना होगा नही तो वे हर बार इसी तरह के मालिकों से मिलकर हमे दबाते रहेगे" ।[3] स्पष्ट है कि गांवों में किसी न किसी तरीके से शोषण होता रहा हे और हो रहा है ।

वैसे ही बहादुर नामक कहानी में गांव के नौकर का शोषण किस हद तक होता है इसका चित्रण हुआ है । वह बहादुर अपना पेट भरने के लिए नेपाल से आया है । वह

एक इजिनियर के यहॉ काम करता है । वह पैसे कमा कर अपने वतन लौटकर शादी करना चाहता है । लेकिन कोई आदिवासी लडकी उसके दस साल की कमाई के सारे पैसे लेकर भाग जाती है । इजिनियर के यहॉ भी उसे सभी प्रकार के काम करने पडते है । यहां तक की कुत्ते से भी बदत्तर जीवन वह जी रहा है और उपर से गालिया भी सुननी पडती है । मालकिन कहती है- "दो पैसे का नौकर जुबान चलाता है । मैं जो जो कहूॅगी वह सब तुमको करना पडेगा । खाना कपडा और महिना तुमको लाट साहब की तरह बैठने के लिए नही देती हूँ । सीधे मन से जाकर कपडे फींचो, नही तो बोरिया-बिस्तर बांधकर यहॉ से चले जाओ, तुम्हारे जैसे ढेर नौकर मिलेंगे" ।[4] याने बडे घरों में नौकर और नौकरानियों का इसी प्रकार शोषण होता है । कभी कभी चोरी, लूटपाट का आरोप लगाकर उनको नौकरी से निकाल दिया जाता है ।

पैसे के बल पर भी ग्रामीण क्षेत्र में गरीब लोगों के जीवन का शोषण होता है । डाकूओं, डकैती करनेवाले लोग भी इसी तरह बडे लोगों का शिकार होते है । लेखक लिखते है- "मुझे लगता है कि समाज की अपेक्षा जीवन की किसी कचोट और संश्लिष्ट माहौल की जकडन ने उन्हें भटकन में डाल दिया है । इस अन्तहीन भटकन में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वे रूक्ष, कठोर और अभेद बनते चले गए है । लेकिन जहॉ किसी विचार और घटना ने उनके मर्म को स्पर्श किया है , वहॉ उनके भीतर का इन्सान जाग गया है" ।[5] गांव का हाजी गांव की ही पाठशाला की जमीन हडपना चाहता है । इन डकैतों को दुगुना पैसा देकर वह जमीन खाली करना चाहता है लेकिन यह डकैत भी उसी गांव के है और उनके ही बच्चे उस स्कूल में पढते है । इसीलिए वह लिये हुए पैसे लौटाकर वह काम करने से मना कर देते है ।

'एक और हत्या' कहानी में भी ग्रामीण जनता के शोषण का चित्रण मिलता हे । जगेसरा हरपालसिह के यहॉ चाकरी करता है । काम करने के बावजूद उसे गालियॉ भी सुननी पडती है - उसका मालिक कहता है इ "साले तुम्हें पच्चीस रूपया महिना लत्ता कपडा और खाना क्या इसलिए देता हूॅ ? यह तुम्हारी आज की आदत नही, बल्कि रोज की है । एक तो तुम लेट बाजार जाते हो, दूसरे आते भी हो लेट इस पर भी एक न एक सामान छोड ही देते हो । इधर भैंस छटपटा रही है । एक नाद भी सानी नही दिया गया है इसे । तुम्हारी सब हेकडी अब जल्द ही खत्म करूॅगा । कही से खोजकर मेरा सब रूपया लौटा जाओ । देखेंगे, तुम कहॉ जाकर बाबू बनते हो ? कौन रखेगा तुम जैसे

देह चोर को ? मुझे तो खेती गृहस्थी करनी नही है । सब बंदोबस्त कर देता हूँ । दूध के लिए एक भैस रखी है, तो उसके लिए हजारों चरवाहें है । देखूगाँ कौन देता है एक भैंस पर तुम्हें पच्चीस रूपया" ।[6] जगेसरा के मन में मालिक के प्रति विद्रोह है लेकिन वह मजबूर हो जाता है । बाजार जाते समय उसे कुत्ता काट लेता है तो मालिक उसके इलाज के लिए भी पैसा नही देता । जगेसरा अपनी पत्नी के सोने के जेवर बेचकर अपना इलाज नही करना चाहता । वह समझता है कि मेरा जीवन कितना तुच्छ है । यह स्थिति हर मजदूर, नौकर के साथ होती है । ग्रामीण इलाके में बनिहार, चरवाहा लोगों का जीवन किसी नर्क से कम नही होता । उन्हें हमेशा अपने मालिकों को खुश रखना पडता है । यहॉ तक की इन लोगों की औरतें भी इन मालिकों के हवस का शिकार होती है । जैसे वे जबचाहे और जिस रूप में चाहें, इनका इस्तेमाल कर सकते हैं । शुरू शुरू में हर बनिहार, चरवाह इसका विरोध करता है । लेकिन समयानुसार मालिक बनिहार और चरवाह की जिन्दगी की यातनाएँ बढाकर या उनकी जिन्दगी को सुविधाएँ देकर उन्हें अपने वश में कर लेते है । फिर वे सिर्फ बनिहार , चरवाह के ही नही बल्कि उनके पूरे परिवार के स्वामी हो जाते है । बनिहार-चरवाह के मलिक के वश में नही आ सकें इसके लिए कोई विकल्प भी तो नही होता है उनके पास । आखिर मरता क्या नही करता ।[7]

गांव में निम्नजाति के लोगों का शोषण होता रहा है । मिथिलेश्वर ने 'सीमाएँ' कहानी कहार जाति का ददूआ के शोषण को विशद करती है । ददूआ कमजोर नाटा लॅगडा तोतरा बोलनेवाला था लेकिन उसे पत्नी बहुत रूपवान मिली । जब ब्याहकर वह पत्नी को लाया तो उसकी जवानी पर गांव के चंद्र मोहन बाबू फिसल पडा क्योंकि उन्होंने ऐसे रूप की औरत अपने गांव में दूसरी कोई नही देखी थी । बस अपने पहलेवाले चरवाहे पर चोरी का झूठा आरोप कर उसे निकाल दिया और ददूआ को उस काम में लगाया गया । इस बहान ददूआ की पत्नी भी बाबू के घर के काम करने लगी । गरीब अपनी इज्जत बेचकर रोटी का सहारा पाता है । ददूआ के परिवार को इसकी भनक लगी । तब ददूआ के परिवार वाले उसे मार पीटकर घर गांव से बाहर कर देना चाहते है । संयोगवश उसी गली से चंद्रमोहन बाबू गुजर रहे थे । तो ददूआ की पत्नी ने उनके पैर पकड लिये और उसे बचाने की याचना करने लगी । बाबू उसे बचाना चाहते थे उसे पनाह भी देना चाहते थे । वे सोचते है- "उनके मन में आया कि ददूआ को ले चले अपने साथ । ददूआ के भाईयों की गर्मी झाड दें । एक अलग कमरे में रख लेगें

उसे । बडी प्यारी औरत है यह । कहा मिलती है ऐसी बाँकी औरते । इसे पाकर आनंद में डूबे रहेंगे । बडे जमींदारों और रईसों के यहॉ तो रखैलों की परंपरा रही ही है । लेकिन वे वैसे बडे जमींदार और रईस भी तो नही । गांव मे नाक कट जायगी बेटी बेटियों के शादी ब्याह बंद हो जाएँगे । सब थू-थू छी-छी करेंगे । खानदानी इज्जत मिनटों में राख हेा जाएगी । बस अपने बढ हुए मन कों वापस लौटा लिया उन्होंने फिर न चाहते हुए भी ह्रदय पर पत्थर रख वहा से चल पडे" ।[8] स्पष्ट है कि यहॉ प्रेमचद की 'ठाकूर का कुआ' कहानी की याद आती है । गंगी अपने जीवन के बारे में सोचते है । गाव के बडे उॅची जातिवालो को मेरा शरीर चलता है । लेकिन पानी भरने से मना करते है । चंद्रमोहन बाबू जैसे अनेकों चरित्र गांवों मे भरे पडे है ।

इसी प्रकार गांव में छोटा मोटा काम करके गुजारा करनेवाले लोगों का भी शोषण होता है । 'मोल ली हुई मुसीबत' कहानी में दातोन बेचनेवाली भाई बहन की दर्दनाक कहानी है । भाई रात में सफर करके पहाडों और जंगलों में जाता है । और दातौन तोडकर लाता है । और फिर बहन घर घर जाकर दातौन बेचती है । लेखक उस लडके के बारे में सोचते है- "अपनी मैली कुचैली साडी को वह अपनी कमर में खुब कसकर लपेटे होती थी । उसका चेहरा बहुत खुबसुरत था यह कहने की हिमाकत मैं नही करूॅगा । वह जवान जरूर थी । लेकिन उसके चेहरे पर कोई खुब सूरती नही थी । हॉ , मेहनत मजदूरी के कारण उसका शरीर बहुत सुडौल ओर कसावपूर्ण हो गया था । वह देखने में इसलिए भली लगती थी कि उसका सुगठित शरीर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था" ।[9] यह भाई बहन अपने बूढे पिता के साथ रेलवे स्टेशन पर रहते है । वहीं पर खाना बनाते है और वही रहते है । एक दिन उस लडकी को कोई गर्भवती कर छोड गया । तबसे यह परिवार अपने आपको असहाय महसूस करने लगा । आज भी ऐसी गरीब लडकियों को लालच देकर अपना शिकार किया जाना आम बात हो गई है ।

मिथिलेश्वर अपनी कहानी यात्रा में मदारी का खेल दिखाने वाले लोगों की त्रासदी भी बयान करते है । न चाहते हुए भी कहानी का मदारी अपने भालु का खेल दिखाकर अपना पेट पालता है । वह गांव गांव जाकर लोगों को खेल दिखाता है लेकिन पेट भरने लायक उसे पैसे नही मिलते । मदारी सोचता है- "वैसे देखने के लिए तो बहुत सारे पैसे उसकी चादर पर बिखर जाते थे । लेकिन शाम को जब वह अपने दिन भर

की कमाई एकत्रित करके दुकान में जाता था, तब उसे पता चलता था कि, इस पैसे से एक शाम का खाना भी किसी सूरत में नही मिलेंगा" ।[10] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजी ने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण शोषण की कई पर्ते खोली है ।

बेकारी की समस्या पूरे भारतभर में फैली है । जिससे मुक्ति पाना असंभव सा लगता है । आजादी के बाद भारतीय गावों के नव जवान शिक्षा प्राप्त कर नौकरी की तलाश में इधर उधर भटकता रहा लेकिन नौकरी नही मिल सकी । बेरोजगारी की समस्या दिन ब दिन बढती गई और आज लाखों लोग बेरोजगार बने घुम रहे है । भ्रष्टाचार के कारण भी बेरोजगारी की समस्या बढती गई है । मिथिलेश्वरजी ने अपने कथा साहित्य में भी यह समस्या उदघाटित की है । 'नपुंसक समझौते' कहानी का नायक ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार है । वह हमेशा गांव के बाहर जाकर एक छोटी सी पहाडी पर बैठता है और अपने गांव को देखता है । तो पाता है कि गांव के कई मकान पक्के मकानों में तब्दिल हो रहे है । लेकिन जब उसको अपना घर याद आता है । उसका घर खंडहर के रूप में उपस्थित है । वह उब चुका है । उसे कोई परिवर्तन की उम्मीद नजर आ रही है । वह सोचता है- "बदलाव इसी मायने में नही हुआ है कि तुम्हारी नपुसंकता और कायरता रोज बढती ही जा रही है" ।[11] लेकिन कहानी का नायक गांव के युवकों को देखता है तो पाता है कि यह लोग नशे के आदि हो चुके है । कभी कभी तो भांग भी पी जाते है । यहॉ तक की गांव की लडकियों को कैसे फसाया जाए इस पर भी रात रात विचार करते रहते है । नायक के पास जमीन है लेकिन बोंरिग करने के लिए पैसा नही है । उपर से पूरे परिवार का भरण पोषण की जिम्मेदारी है । भाई को शिक्षा देनी है । लेकिन भाई स्कुल जाने से कतराता है । वह कहता है- "पढ लिखकर क्या करूॅगा ? तुम्हारी तरह बेकारहीन हो जाऊगा । सरकार नौकरी देगी नही और घर का काम मुझसे फिर होगा नही" ।[12] नायक अपनी बहन की शादी करना चाहता है लेकिन तीन चार हो रिश्ते आ गए लेकिन दहेज के करण उसकी शादी नही हो पा रही है । स्पष्ट है कि बेरोजगार शिक्षा पाकर नौकरी की तलाश करने के चक्कर में अपनी पूरी जिन्दगी बरबाद कर देता है । क्योंकि वर्तमान शिक्षा पाकर वह नपुंसक होता है । किसी अन्य काम का नही रह जाता है ।

'अनुभवहीन' कहानी भी इसी बेरोजगारी की समस्या को उद्घाटित करती है । आज के युग में अपनी योग्यता के आधार पर नौकरियाँ नही मिलती है । भ्रष्ट तरिके

अपनाये जाते है । कहानी का नायक ग्रज्युएट है । उसकी उम्र बढती जा रही है । उसकी शादी हो चुकी है । जब सब डिप्टी कलेक्टरी का विज्ञापन पढता है तो बहुत खुश होता है । लेकिन उस परिक्षा की तीस रूपये फीस भी उसे अखरती है । उसके पास वह तीस रूपया भी नही है । और उस तीस रूपये के लिए वह बिना संतान नसबंदी कर लेता है । वह सोचता है साठ रूपये नसबंदी के और भत्ते के आठ रूपये कल अडसठ रूपये उसे याद आता है पांच रूपये परामर्शता को भी मिलने है" ।[13] लेकिन फार्म भरते भरते उसे याद आता है कि नौकरी के लिए आरक्षित उम्र उसकी निकल चुकी है । उसका सहपाठी उसे समझाता है- "मुझे दुख है कि, फॉर्म भरते भरते एज एक्सपायर हेा जाने के बाद भी तुम्हें अनुभव नही हुआ । तुम क्या समझते हो कि इस बार तुम्हारा हो जाएगा ? अरे बच्चु जितनी सीटें खाली हैं , उतनी नियुक्तियॉ हो चुकी है । अब यह सिर्फ गोरखधंदा चल रहा है" ।[14] वह निराश और हताश घर की ओर लौटता है रात को उसे नींद नही आती और अपने मित्र के वे शब्द उसे बार बार याद आते है । 'बीच रास्ते में' कहानी दो बेरोजगार भाईयों की त्रासदी है । इनकी पढाई के कारण ना नौकरी मिलती है ना यह खेती कर पाते है । क्योंकि पढा लिखा आदमी नपुंसक हो जाता है । इनकी हालत इतनी खराब है कि इन्हे पहनने के लिए कपडे तक नही है । दोनों के पास एक ही धोती कमीज और पुरानी लुंगी है । वह पुलिस में भर्ती हेतू दोनों जाते है लेकिन कपडे के अभाव में लुगी पहनकर गन्ने के खेतों में छिपकर बैठता है । भर्ती में जाने के बाद पता चलता है कि नरेश ही पुलिस में भर्ती हो सकता है क्योंकि वह काफी लंबा है । वह भागते दौडते नरेन के पास आता है तो देखता है कि नरेश को सांप काट लिया है उसकी लुंगी भी हाथ से छिटक जाती है । वह पागलपन में अपने गांव की ओर दौडता है- "उसके सामने कि आखिर जवानी किस दिन के लिए है ? वह ॲगुली पर जोडता है बाईस पूरे हो गये है उसे । उससे चार साल छोटा नरेन भी अठारह का हो गया है । लेकिन क्या कर लिया उन लोगों ने अभी तक तो कहीं से एक फुटी कौडी भी हासिल नही की । वह अपने केा और नरेन को लेकर बराबर सोचता रहता है कि उन्हें डूब मरना चाहिए । इस जवानी में भी वे बूढे बाप के सहारे जी रहें है ।15

मिथिलेश्वरजीने 'कसूर' कहानी के माध्यम से ग्रामीण बेरोजगार की व्यथा का सशक्त चित्रण किया है । कहानी का नायक पढ लिखकर कई स्थानों पर साक्षात्कार

देता है लेकिन उसे कही भी नौकरी नही मिलती । वह हट्टा कट्टा नौजवान हे । गांव के लोग उसे डकैत मान लेते है । यहॉ तक की उसके परिवारवालों का भी उसपर विश्वास नही रहता । और इस कारण पुलिस उसे पकडकर ले जाती है । इसीलिए की वह बेरोजगार है । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वरजीने अपने कथा साहित्य में बेरोजगारी की समस्या को बखुबी चित्रित किया है ।

गरीबी का चित्रण भी अपने कथा साहित्य में मिथिलेश्वरजीने किया है । 'रात अभी बाकी है' कहानी गरीबी का दर्दनाक चित्रण करती है । निझावन अपने परिवार का बोझ ढोते ढोते जी रहा है क्योंकि पांच बेटे और एक बेटी का वह पिता है । सबसे बडा बेटा नरेश मेहनत के साथ खेती संभालता है । दूसरा हीरा किराणा दुकान चलाता है । तीसरा सातवी पास होकर आयुर्वेद का अध्ययन कर डॉक्टरी चलाता है । चौथा चोरी डकैती करता है । पांचवा लडका बेकार घुमता है नरेश बीमारी में छटपटाता है दवा के लिए पैसे नही है । मोती को चोरी के कारण पुलिस पीटती है । निझावन अपनी स्थिति के बारे में सोचता हे । निझावन मन ही मन सोचता है , क्या दुनियॉ में सबसे बडा पापी वही है । आखिर उसके भाग्य ने पलटा क्या नही खाया गाव के अधिकांश लोगों से तो वह हर मायने मे अच्छा और पवित्रा ही है कितने कुकर्म और कैसे कैसे अत्याचार करते है लोग । फिर भी उनकी मुट्ठियाँ भरी रहती है । और उसकी मुट्ठीयाँ क्या अब तक इसीलिए खाली रहीं कि जब तब उसका शरीर चलता रहा बगैर भगवान के सामने अगरबत्ती दिखलाए खाना नही खाया उसने । वही बाप दादे से चली आर रही पाचे बीघे जमीन पुतैनी जब अब भी निझावन के भाग्य से जुडी है" ।[16] निझावन पुरी तरह से भाग्य को कोसता है । अग्रेंजों के जाने के बाद हरेक ने सुराज का सपना देखा सबका जीवन सुखमय होने के सपने देखे लेकिन वह सपना सपना ही रह गया । और भारतीय किसान भी निराशा के गर्त में खेाता गया क्योंकि उसका कर्ज कम होने के बजाय बढता गया और उसका जीवन दुभर होता गया । निझावन इसके बारें में कहता है किस- "कायापालट की आशा की थी उसने ? कैसी आजादी के सपने संजोये थे क्या वह सबकुछ मात्र दिखावा, भ्रम ओर छलावा ही था क्या उतनी बडी आजादी सिर्फ चन्द लोगों की कुर्सी से चिपकाने भर तक ही थी ? कुछ भी समझमें नही आता हे निझावन को । लेकिन हॉ इतने दिनों के अनुभव से वह इतना तो समझ ही गया है सब सिर्फ

भाग्यवादिता का खेल है । भाग्य ने चाहा तो रंक को भी राजा बना दिया और राजा को भी रंक" ।[17] यह स्थितियॉ केवल सरकारी दुहरी नीति के ही परिणाम है ।

'विग्रह बाबू' कहानी भी गरीबी में जीनेवाले एक सामान्य कलर्क की जीवन गाथा है ।वह शहर दफ्तर व्दारा मिले हुए कमरे में रहता है । लेखक उसकी आर्थिक दयनीय स्थिति का चित्रण करते है- "विग्रह बाबू की स्थितियॉ चरम दयनीय, संदर्भ दारूण और असंगतिया इस कदर भयावह है । विग्रह बाबू की खौफनाक और विकराल दुनिया ने मुझे पूरी तरह दहला दिया था । उनके साथ तीन चार महिना बीतते बीतते ही मुझे लगा था कि अगर देर तक सोचता रहूँगा तो पागल हो जाऊगा" ।[18] विग्रह बाबू का परिवार काफी बडा है । दो भाई और बहन अपंग है । स्वयं की तीन लडके और दो लडकियॉ । साथ ही बूढी मॉ भी है । उनके गांव में मकान तो हैं । लेकिन उसकी हालत उसमें रहने जैसी नही है । इस बारें में बाबू कहते है- "गाव में पुतैनी मकान के सिवाय जमीन का एक छोटा टुकडा भी उनके पास नही है । उनके अनुसार उनका परिवार बहुत बडा है । परिवार के तीन सदस्य अपाहिज है । दो भाई तथा एक बहन । विग्रह बाबू कहते थे कि ईश्वरीय प्रकोप के कारण उनके भाई और बहन हाथ पाव से लाचार है । इसीलिए उनका भरण पोषण भी विग्रह बाबू को ही करना पडता था । इसके साथ ही उनकी अपनी पत्नी तीन छोटे छोटे लडके एक बूढी मॉ तथा दो लडकियॉ है । लडकियाँ लडकों से उम्रदार है । बडी लडकी तो काफी सयानी हो गयी है ।[19] उनकी आर्थिक दरिद्रता के कारण वे चिता में डूबे हुए थे । बेटी की जैसे तैसे शादी तय की तो लडकेवाले उनकी सच्चाई जानने को इच्छुक थे शादी तय हो जाने के बाद लडकेवाले उनके जीवन स्तर की जानकारी लेने लगे थे । मुझे अपने मुहल्लेवालों पर बहुत गुस्सा आता है । उन्होंने लडकेवालों से विग्रहबाबू की बेढंगी और उजाड जिदगी को स्पष्ट कर दिया था । बस लडकेवालों ने चकबंदी आफिस जाकर बाबू को एक जबाब दे दिया था ।[20] स्पष्ट है कि शादी का सपना बिखर जाने से विग्रह बाबू पागलों की तरह घुमते रहे और अपना अंत कर लिया । इनके बारें में लेखक कहते है- "विग्रह बाबू के दर्द को किसी औरत के गर्भ की तरह कराह कराह कर मुझे ढोना ही है । हॉ आपसे अब मै सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि हमको और आपको अब मिलकर यह देखना है कि कोई और विग्रह बाबू इस रास्ते से गुजरने न पाय ।[21] इस प्रकार मिथिलेश्वर जी अपने कथा साहित्य में गरीबी का चित्रण करते है ।

ग्रामीणो की शहरो की ओर पलायन की समस्या अब विकराल रूप धारण कर चुकी है । क्योंकि गाव के पढे लिखे नौजवान नौकरी की आस लिये शहरों की और भाग रहे है लेकिन उनके हाथ निराशा ही आती है । इस संदर्भ में डॉ वर्षा मिश्र लिखती है । शहरो मे सुख सुविधा के सारे साधन एवं आकर्षण के केद्र है । पैसा कमानेवाले के लिए शहर में आजविका के अनेकों साधन हे । बम्बई जैसे महानगर में सभी को रोजी रोटी मिल जाती है । भले ही रहने के लिए फुटपाथ या झुग्गी झोपडी का सहारा लेना पडे । गांव के नवयुवक शिक्षा प्राप्ति हेतू नगरों में जाने के लिए लालचित रहते है । मजदूर भी गांव में हल चलाने के बदले शहर में रिक्शा चलाना उत्तम मानता है । वैज्ञानिक युग की सुख सुविधाएँ गॉवो मे कहा । बढती महगाई और जीवन की जटिलता के समक्ष ग्राम की सादगी असहाय लगती है । सारांश यह कि गाव के प्रति विरक्ति की भावना उत्पन्न हो गई है" ।[22] लेकिन शहर की ओर जाने के बाद उन्हें मोहभंग ही होता है । मिथिलेश्वर इन समस्या को काफी करीब से समझते है क्योंकि वे भी ग्रामीण संस्कृति से निकलकर नौकरी हेतु शहर की ओर जाते है । 'उन्होंने आखिरी' बार नामक कहानी लिखी है । कहानी का सरना गांव से तंग आकर बम्बई जाता है लेकिन देखता है कि जो गांवों में हो रहा है वही शहरों में भी हो रहा है । आखिर में तंग आकर वह अपने गांव आ जाता है । वह सोचता है गाव में चोरी डकैती , बेईमानी , जानमारी अब पहले से बहुत अधिक बढ गयी है । साल में तो तीन जानें जरूर मारी जाती है । तथा चोरियॉ, डकैतियॉ तो सैंकडों होती है लाज, शरम, इज्जत सब कुछ लागों ने छोड दी है । किसी भी तरह पेट भरना और पैसा जुटाना ही लोगों का धरम बन गया है ।[23] स्पष्ट है कि गांवों से शहरों की ओर भागे हुए लोगों को अपनी इज्जत तक बेचकर रोटी का इन्तजाम करना पडता है । 'कितनी दुनिया' का राम रतन पैसे कमाने हेतु शहर जाता है । लेकिन गांव में रह रहे छोटे भाई और पत्नी के बीच अवैध सम्बंध स्थापित हो जाते है । वह यह सब देखने के लिए शहर से गांव आता है किन्तु बाद में सबकुछ ध्वस्त हो जाता है । 'शेष जिन्दगी' कहानी की नायिका शहर में वैधव्य का जीवन जी रही है । उसे अपने पति व्दारा बताया गाव आकृष्ट करता है । उसका पति की बातें उसे याद आती है-"तुम जानती नही गावों का जीवन कितना सुखमय है । यहॉ तो किसी से किसी को कोई मतलब नही । सबकुछ पैसा ही है यहॉ । मनुष्यत्व नाम की कोई चीज नही । हर जगह सिर्र्फ मक्कारी है फरेब" ।[24] किन्तु गांव के बारें में पति की बात याद करती है । लेकिन गांवों मे ं देखो

थोडे में ही लोग कितने संतुष्ट और सुखी है । एक दूसरे के दु:ख दर्द में लोग कितना साथ देते है । बडे बुजुर्गो की कितनी इज्जत है । किसी के घर चोरी होती है तो हल्ला सुनते ही लाठी भाला लेकर लोग जुट जाते है । कोई किसी के साथ मनमानी नही कर सकता । विधवा औरतों को लोग देवी की तरह समझते है" ।[25] किन्तु यह सब होते हुए भी लोग गावों से शहर की भोगवादी संस्कृति की ओर पलायन कर रहे है । 'जी का जंजाल' कहानी की विधवा मॉ के बेटे जो शहर में रहने चले गये है । लेकिन मॉ को लोकलाज के कारण शहर बुलाया जाता है किन्तु हर बेटे के पास तीन तीन महिने के लिए रखा जाता है । तीन महिने से अधिक एक दिन भी वह अपनी मॉ को रखना नही चाहते- "जैसे जिसके यहॉ उसकी पारी शुरू होती है, उसके यहॉ वह बोझ बन जाती है । बहूऍं उन्हें ताना देती है तथा उपेक्षापूर्वक बासी और अरूचिकर भोजन देते हुए चाहती है कि जल्द ही जल्द उनकी पारी खत्म हो जावे" ।[26] स्पष्ट है कि शहरी संस्कृति में मनुष्य रस बस नही सकता उसे गांव में ही अधिक रूचि होती हे । लेकिन शहर के इन आकर्षणों के कारण मरा हुआ आदमी जीता जा रहा है । 'नदी की राह' कहानी का आलोकनाथ पढ लिखकर नौकरी के लिए अपनी प्रेमिका मालती को गाव छोडकर जाता है । किन्तु बम्बई के कारखाने मे बम विस्फोट के कारण वह कारखाना बंद कर दिया जाता है । अत: वह सउदी अरब स्मगलरों के साथ चला जाता है । किन्तु वहॉ से लौटने पर देखता है कि मालतीने दूसरी शादी कर ली है । और सारा परिवार बिखर गया है । स्पष्ट है कि शहरों में जाकर केवल पैसा कमाया जा सकता है । लेकिन सुख चैन नही । अत: मनुष्य का जीवन सुख चैन के सिवा नर्क के समान बन जाता है । मिथिलेश्वर जी इससे बखुबी परिचित है ।

आजादी मिलने और संविधान प्राप्ति के पश्चात सरकार व्दारा कई योजनाएँ बनाई गई जिसमें प्रमुख है । कृषि विकास, जमीदारी उन्मुलन, पंच वर्षीय योजनाएँ, सामुदायिक विकास योजनाएँ, कुटीर उद्योग, पंचायत राज, चक्रबन्दी, सहकारी खेती आदि । यह सारी योजनाएँ सरकारों व्दारा लाई गयी । लेकिन वह गावों तक ठिक से नही पहुँच पायी । क्योंकि उसे अंमल में लाने वाले अधिकारी अपनी साठ गाठ से उसे बीच में ही खा गये । भ्रष्टाचार आज हमारे देश में बहुत बडी समस्या बनती जा रही हे । सरकार व्दारा इस सम्बंध मे जो भी कानून बनाये जाते है । उसकी कमियों के कारण अधिकारी वर्ग उसका फायदा उठाकर अपने महल भर रहे है । यहॉ तक सुखा वाढ

प्राकृतिक आपदा जब होती है और जिसमें जो मदद दी जाती है उसमें भी भ्रष्टाचार पाया जाता है । सुखे क्षेत्र में पशुओ के लिए जो चारा लाया जाता है । उसमें भी सरकारी अधिकारी गबन कर जाते है । अत: सरकारी योजना ओ में मंत्री नेता बडे बडे अधिकारी से लेकर ग्राम पंचायत का मुखिया तक शामिल हो जाते है । इस संदर्भ में डॉ वर्षा मिश्र लिखती है- "सरकारी प्रचार की समस्त तामझाम के बावजूद यह योजना अपने लक्ष्योद्देश्यों की पूर्ति नही कर पाई ग्रामीणों में आंतरिक प्रेरणा पैदा नही हुई कि वे आत्मसुधार करें और एक नया भारत बनाने के लिए प्रयत्न करे । पारंस्पारिक एकता, प्रेम एवं सद्भाव के बदले ईर्ष्या , व्देष , फुट , घृणा एवं अलगाव के भाव ही अधिक पनपे । घटिया राजनीतिक दॉव पेचों और नौकरशाही भ्रष्टाचार ने करेले के नीमचढे होने की कहावत चरितार्थ की । इस योजना से भूस्वामी ओर संपन्न लोग लाभान्वित हुए" ।[27] स्पष्ट है कि हिन्दी कथाकारों ने इन समस्याओं को लेकर अपने कथा साहित्य में खुब लिखा है । मिथिलेश्वर भी इसके अपवाद नही है । उन्होंने 'एक गांव सुखा ग्रस्त' में इसका चित्रण किया है । हम सब जानते है कि दिल्ली में बैठे बडे लोग यह नही जानते कि गरीबों की समस्याएॅ क्या है । वो तो योजनाएँ बनाते है लेकिन वह गरीबों तक सही मात्रा में पहुॅचती है की नही यह नहीं देख पाते । एक गॉव सुखाग्रस्त कहानी भी इसी पर आधारित है । अकाल विशेषांक निकालने के व्यंग्य पर यह रिपोर्ताज है । इस संदर्भ में डॉ. वर्षा मिश्र लिखती है-"बाढ, सुखा और महामारी ग्रामीणों के लिए मारक सिध्द होते है । सरकारी योजनाएॅ केवल कागज पर रही है, ग्राम्य जीवन को उनसे कोई राहत नहीं मिलती है । सुखा अथवा अकाल में गॉव की दशा कैसी विकट हो जाती है" ।[28] इसे जो पीडा भोगता है वही जानता है । जो वातानुकूलित कमरों में बैठकर आँकडे जमा करते है । उन्हें इसका दर्द महसूस नही होता है गावों में गरीबी, दरिद्री, शोषण, अनाचार, अत्याचार है तो शहरो में सबकुछ खुशहाल । यह देखते हुए लेखक लिखते है आपकी दिल्ली में आकर मै हैरत में पड गया हूॅ । हर जगह संपन्नता सुख, शांती, बडी बडी अट्टालिकाएॅ, जगमगाती रोशनी चौराहे पर फव्वारों का सौंदर्य कमर में बॉहे डाले घूमते प्रेमी युगल, चौडी सडक पर मछली की तरह फिसलती कारें । सुखा अकाल, बाढ , विनाश, महामारी किसी का कहीं कोई नामोनिशान नही । क्या यह शहर उसी देश का है , जिस देश का मै गाव हूॅ" ।[29]

'एक सडक और तीन सौदेबाज' नामक कहानी के नामकरण से सिध्द होता है कि सडक के सौदेबाज उस सडक की क्या हालत करते है । हम देखते है कि हर साल एक सडक की मरम्मत होती है । लेकिन सडक जस की तस रहती है । क्योंकि उसका सारा माल इंजिनियर, ठेकेदार खा जाते है जो उपर से लेकर नीचे तक की कडी होती है । मंत्री भी इसमें शामिल होते है क्योंकि इनकी मर्जी के सिवा कुछ नही होता । हर अफसर इन नेताओं की गुलामी करते है । लेखक इस संदर्भ मे कहते है- "वह जिसकी ओर नजर उठाकर देखता वह हाथ जोडे नजर आता । जिस अफसर को जो संकेत देता, वह अफसर तत्काल उसका पालन करता, उसके साथ के लोग उसकी सेवा में बराबर तत्पर रहते । वह जब जिस चीज की इच्छा प्रकट करता लोग तत्क्षण उसकी पूर्ति करते" ।[30] स्पष्ट है कि सरकारों व्दारा विभिन्न योजनाएँ शुरू की है । उसका फायदा भी हुआ है । लेकिन जिसे होना चाहिए था उसे नही हुआ । क्योंकि भ्रष्टाचार ही उसकी जड है । उसे निकालकर जब तक हम फेंकते नही तब तक इसकी उम्मीद ही कम की जा सकती है ।

पंचवर्षीय योजनाएँ और गांव के संम्बंध में कई समस्याएँ आज भी बनी है । आजादी के बाद पंचवर्षीय योजना का आगाज किया गया । जिसे कई देशों के मार्गदर्शक तत्वों से अपनाया गया । इस संदर्भ में टी. के. लक्ष्मण और बी. के. नारायण लिखते है । ट्रिकल डाउन थ्योरी या आय का वृततीय बहाव के रूप में जाना जाता है । इसमें यह मानकर चला जाता है कि एक क्षेत्र में किसी उत्पादक गतिविधि के प्रारंभ करने से विविध क्षेत्रों में उसकी प्रतिक्रिया होती है ओर उसका प्रभाव संपूर्ण अर्थ व्यवस्था पर पडता है । प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उत्पादक गतिविधियों से उत्पन्न आय से लाभान्वित लोग उन बहुत सी वस्तुओं के लिए मांग का निर्माण करते है जो उपभोक्ताओं की पंसद की प्रथम पंक्ति में है । और इससे अंतत: अतिरिक्त आय एवं रोजगारी की परिस्थितियॉ उत्पन्न होती है । इससे कुछ हद तक आर्थिक विकास सुधारित रोजगार सुविधाओं तथा उत्तम सामाजिक एव आर्थिक सुविधाओं की क्षमताओं के निर्माण मे मदद मिली किन्तु गरीबी, बेकारी तथा असमानताओं को दुर कर पाने में केाई विशेष सफलता नही मिली । उत्पादन के फलों का वितरण असमान ही रहा" ।[31] किन्तु इस नीति के तहत भारत में बहुत कुछ हासिल नही हुआ । पहली पंचवर्षीय योजना में कृषी केा अधिक महत्व दिया गया । तथा उद्योग, चिकित्सा , शिक्षा , जलपूर्ति , परिवार नियोजन आदि योजनाओं पर भी बल दिया गया लेकिन फिर भी यह योजना जनता में विश्वास पैदा न कर सकी ।

इस बारें मे विवेकी राय लिखते है- "राष्ट्रीय विकास की दृष्टि न उभरकर जाल फरेब कर सरकारी तंत्र से अनुदान और विभीन्न मंदो का पैसा ऐठने की वृत्ती ग्रामीणों मे जागी । भ्रष्ट नौकरशाही ने इसे और बढावा दिया । सामूहिक ग्रामविकास से अधिक व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहन मिला जिसमें संपन्नो का भाग अधिक हो गया" ।[32] पर इस योजना का फल यह देखा गया कि कृषि के बदल उद्योग मे भारी वृध्दी हुयी और ग्रामीण विकास इससे कोसों दूर रहा ।

व्दितीय योजना के तहत सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र में पुँजी लगाई गई । बडे बडे कारखान खोल गए तथा ग्रामीण विकास के लिए ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाने की प्रक्रिया शुरू की गई थी । यह सब नेहरू विचारधारा के अंतर्गत हुआ । इस संबंध में विवेकीराय अपने शोधकार्य में लिखते है- "नयी साम्यवादी और समाजवादी हवाएँ भी पहुँची और जमींदार किसान संघर्ष के आयाम भी उभरे परंतु जातिवाद के लौह गढ मे आरक्षित गांव पंगु नैतिकता , मृत आध्यात्मिकता और अंध विश्वास की सुदृढ वायवी शृंखलाओ मे जकडे गांव ,वर्ण परिवार और समाज के अलिखित कानूनों से अधिक प्रभावित, प्रतिष्ठा पर प्राण देने वाले परम्परित गांव रामायण , महाभारत, भक्तमाल, अर्जून , गीता, ब्रजविलास और हनुमान चालिसा की कथासूत्र भूमियों मे विचरणशील भोले भाले भावूक गॉव नयी अंग्रेजी शिक्षा नयी सभ्यता, विविध वाद, वैज्ञानिक उपलब्धियों आंदोलन विचार , नेतृत्व, संघर्ष और उथल पुथल में बहुत पिछड गये मगर । उनमें आमूल परिवर्तन इस कारण से नही दिखा कि उनकी मूल आजीविका कृषि के संदर्भ में कोई बदलाव तब तक नही आया" ।[33]

उसी प्रकार तृतीय योजना के अनुसार राष्ट्रीय आय और खाद्य की परिपूर्णता पर अधिक ध्यान दिया गया । जिससे कृषि में तथा अन्य योजनाओं में काफी सुधार देखा गया । और काफी समर्थक यह योजना रही । चौथी पंचवर्षीय योजना में खाद्यान्न के उत्पादन पर बल दिया गया । कृषि तकनीक तथा कीटनाशक, खाद पर अधिक खर्च की परिणति यह हुयी की खाद्य उत्पादन में हम बहुत अधिक दूसरों पर पराश्रित नही रहें । पंचवर्षीय योजना के बीचा मिलियन अट खाद्यान्न पैदावाद हुयी । वही छठी योजना में इससे ज्यादा 10 लाख टन ज्यादा खाद्यान्न पैदा की गई है । स्पष्ट है कि इन योजना ओं को देखें तो कह सकते है कि ग्रामीण विकास से शहरी विकास अधिक हुआ । किन्तु भ्रष्टाचार और किसी योजना को कार्यान्वित करने की प्रामाणिकता का इन सभी योजनाओं में अभाव रहा है । मिथिलेश्वरजी अपने कथा साहित्य में इसका चित्रण करते

है- "मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नही कि सरकारव्दारा मिलनेवाली ये सुविधाएँ वितरण करने वाले सरकारी कर्मचारी मिल जुलकर हडप जाते. है । अगर कुछ लोग प्राप्त करने में सफल हो जाते है तो वे नही जो वास्तविक हकदार होते है बल्कि जो घूस की मोटी रकम दे सकते है और पहुँच के स्तर पर अपने को दावेदार साबित कर सकते है । लाल कार्ड के साथ भी यही स्थिति है" ।[34] यही स्थिति ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी योजनाओं की रही है । जो अब तक बरकरार हैा ।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत आने से भारत के लघु और मध्यम उद्योगों पर काफी प्रभाव पडा क्योंकि अग्रेंजी नीति के तहत भारतीय लोगों को ब्रिटन व्दारा बनाई गई वस्तुए अपनानी पडी फलस्वरूप भारतीय खतरे में पडे दिखाई दिये । किन्तु आजादी के बाद विविध सरकारी योजनाओं में कुटीर उद्योग को भी शामिल किया गया । और अलग अलग संस्थाओं से अनुदान की प्राप्ति होने लगी जिससे ग्रामीण क्षेत्र में खेती के साथ साथ पशु पालन डेअरी व्यवसाय साथ स्तय मुर्गी पालन , शहामुर्ग पालन, और जो जाति के आधार पर अपना कार्य करते थे । उन्हें फायदा हुआ । किन्तु सबको इसका फायदा नही पहुँचा । इसके बारें में डॉ. वर्षा मिश्र लिखती है आजादी के बाद गावों में कुटीर उद्याोग का विकास हुआ । इस संदर्भ मं खादी ग्रामोद्योग का विकास उल्लेखनीय है । चौथी योजना के आरंभ में हथकरघा एक करोड लोगों की जीविका का साधन बन गया । कताई बुनाई, मिट्टी का काम, चर्म और काष्ठकला, साबुन , गुड, मधु और तेल आदि उद्योगों का नए सिरे से विकास शुरू हुआ किन्तु इससे जाति के आधार पर परम्परा से इन उद्योग से जुडे लोगों के समक्ष बेकारी का प्रश्न आ खडा हुआ । इन उद्योगो का लाभ साधन सुविधा संपन्न लोगों को मिला गांव का भूमिहीन वर्ग प्यासा का प्यासा ही रह गया इस सरकारी तंत्र में बदलाव की हमें जरूर त है । और जरूरतमन्दों को फायदा पहुँचे । ऐसी नीति हमें बनाने की आवश्यकता है ।

मिथिलेश्वर अपने कथा साहित्य में ग्रामीण पशु पालन को स्थान देते है क्योंकि उन्होनें देखा है कि ग्रामीण क्षेत्र में किसान पशुओं को अपना भाग्य विधाता मानता है । क्योंकि इन्ही के बलपर किसानी करता है । आपने 'जमुनी' कहानी में भैस के महत्व को चित्रित किया है । जमुनी के बीमार पडते ही घर के सारे उत्साह और खुशियों के जैसे पाला मार गया है । जमुनी के इस रूप में रहते हुए उससे चुल्हा नहीं जलेगा । जमुनी केा किसी ने माहूर तो नही दे दिया या टोना टोटका तो नही कर दिया दरवाजे पर हाथी की तरह मस्त जमुनी को देखकर कितनों मुदइयों का कलेजा फट रहा था ।

जरूर उसी में से किसी ने कुछ किया है" ।[36] स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में केवल किसानी से पैट नही भरता । पशु पालन से सहारा मिल जाता है । जमुनी आने से पहले जिऊत बंधआ मजदूर हुआ करता था । लेकिन उनके जीवन में अब कितना परिवर्तन हो गया है- "जमुनी से पहले जिऊत मालिक के यहाँ बनिहार था और सदभुचरवाहा खेत जोतनी से लेकर दवनी करने तक वे खेती गृहस्थी के सारे कार्य थे । सरभू के जिम्मे मालिक से अपनी बडी बेटी मतिया की शादी में उसने मालिक से कर्जा क्या लिया दोनों बाप बेटे उनके यहॉ बंधक बन गए थे । मालिक के जायज नाजायज आदेश का पालन तत्क्षण करना पडता था । उसके बदले में किसी तरह जीने खाने भर अनाज अभावों से घिरी बदहाल बेबस और व्यथित जिंदगी । इस जहालत भरी जिदगी से अगर किसीने छुटकारा दिया तो जमुनी ने । उनके लिए वह लक्ष्मी थी । दूध , दही और घी से घर भर दिया था पॉच महिने के अन्दर ही मालिक का कर्ज चुका दिया था । दोनों बाप बेटे आजाद हो गये थे" ।[37] स्पष्ट है कि जमुनी ने सारे परिवार को आजाद किया जैसे भगवान का रूप ही उनके लिए वह लेकर आयी । इस बारें में जिऊत कहता है- "भैस नही है जमुनी, कामधेनु है । पहले जिऊत जानता था कि कामधेनु देवताओं के पास रहनेवाली कोई ऐसी चमत्कारिक धेनू होत है जो सारी मनोकामनाएँ पूर्ण कर देती है पर अब उसे लग गया है कि जमुनी जैसी धेनू का ही नाम लोगों ने कामधेनु रख दिया होगा" ।[38] जिडत की पत्नी जोगनी भी अपनी जान से अधिक जमुनी को चाहती है । वह कहती है- "उसके लिए जमुनी घर की नींव हे । उसकी सुखी गृहस्थी को सीचने वाली नदी, उसके छूँछे हाथ का कंगन , उसके खाली देहरी का अनाज उसके घर के अँधेरे का दीया । पति जिऊत के कंधे की लाठी बेटे सरयु के माथे का गमछा बेटी रतिया के गले की ओढनी । उसे बनिहारिन से रउताइन बना दिया है जमुनी ने, एक खाते पीते धर की मलिका इन । इसीलिए जोगनी बीमार जमुनी को एक मॉ की तरह अगोरकर बैठी है जैसे जमुनी उसकी भैस नही अकेली संतान हो , जिसके जीवन मरण का प्रश्न उसके वंश के बसने उजडने का प्रश्न हो" ।[39] स्पष्ट है कि कुटीर उद्योगों से गॉव के परिवारों में खुशहाली आयी है । लेकिन हरेक के लिए यह भी संभव नही है । सरकार व्दारा दिये गए पशु भी बडे लोगों की नाद में बांधे जाते है । और गरीब ताकता रह जाता है ।

आजादी के बाद सरकारी योजनाओं के तहत बडे बडे बांध बनाये गये । हरितक्रांती की योजना अंमल में लायी गई । जिससे भारतीय ग्रामीण क्षेत्र लाभान्वित हुआ । विवेकीराय भी अपना मत लिखते है- "उन्नत बीज, खाद कीटनाशक द्रव्य, प्रदर्शनी , उत्तम नश्ल के पशु पक्षी , सॉड, कृत्रिम गर्भाधान, लघु उद्योग, प्रौढ, शिक्षा, ग्रामीण पखाने नाली, सोख्ता, कुऑ, पुलिया, कच्ची सडक, पोखरा और कृषि यंत्रादि की नयी हवा चल पडी । भेड बकरी, अश्व, मत्स्य , कुक्कुट विकास से लेकर सुअर आदि के विकास तक के आयाम उभरने लगे । युवक मंगल दल और महिला मंगल दल से लेकर बोरिंग, ड्रिब्लिंग की बातों में ग्रामीण रस लेने लगे । जापानी ढंग जैसे घनी खेती और श्रमदान जैसा नव दान , कागजी ही सही परंतु एक नये समारोह के साथ ग्रामाचल में उतरे" ।[40] सरकारी कृषि नीति के अंतर्गत हम देख रहे है कि कृषि क्षेत्र में बीज में नये नये प्रयोग करके खाद्यान्य को बढावा दिया जा रहा है । उसी प्रकार रासायनिक व उर्वर को का प्रयोग बढाकर कृषि क्षेत्र में आमूल परिवर्तन किया जा रहा है । सिंचाई की व्यवस्था में दिन ब दिन बढोत्तरी हो रही है । फसल संरक्षण के अंतर्गत भी अलग अलग कीटनाशको का ईजाद कर ज्यादा से ज्यादा फसलें बचाई जा रही है । कृषि यंत्रीकरण भी बढते जा रहा है । इन सब सुख सुविधाओं के चलते कृषि क्षेत्र में काफी परिवर्तन देखा जा सकता है । पर यह योजनाएँ भी मध्यम और छोटे किसानों तक नही पुहॅुचती । उसे इन साधनों की पूर्ति हेतू बॅको व्दारा कर्ज नही मिलता । बडे बडे किसान ही बॅकोव्दारा लाई गई योजनाओं का फायदा उठाते है । कुछ किसान तो भगवान भरोसे खेती करते है । बरसात हेगी ता फसल आती है । नही तो नही । कभी कभी किसान बाढ का शिकार हो जाता है तो कभी कभी सुखे का । अब तो किसानों की हालत यह हा गई है उसे बॅकों का ऋण चुकाते चुकाते अपना जीवन खत्म करने का समय आ गया है ।

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि मिथिलेश्वर के कथा साहित्य ग्रामीण आर्थिक जीवन पूरी बेबाकी से चित्रित हुआ है । मिथिलेश्वर ग्रामीण जीवन की स्थितीयॉ भली भॉति जानते है । उन्होंने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण पढे लिखे युवकों की स्थिती का चित्रण किया है । ग्रामीण युवक पढ लिखकर बेरोजगार घुमता है । लाख कोशिश करने पर भी उसे नौकरी नही मिलता । इस कारण वह निराश है । निराश होकर वह शहर की ओर भागता है । लेकिन वहॉ भी उसका मोहभंग ही होता है । किसी कल कारखाने में नौकरी कर फुटपाथ पर सोने के लिए वह मजबूर है वह अपने आपको कटा कटा

महसूस कर रहा है । परिवार गॉव में और वह पैसे कमाने के खातिर सब कुछ खोता जा रहा है । गॉवों के नौजवान चोरी डकैती की ओर अधिक जा रहे है । उनके पास पैसा कमाने का कोई साधन नही है । बेकारी के कारण वह नशे का आदी हो रहा है ।

ग्रामीण किसान की हालत भी गंभीर बनी हुयी है । खेती पर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण नहीं कर पाता है । इसीलिए वह आत्महत्याएँ कर रहा है । ग्रामीण नारी भी शोषण का शिकार हो रही है । वह जमीदारों के यहॉ छोटे-मोटे काम करते अपनी अस्मत बेचती रहती है । मजदूरी करनेवाले मजदूरों का शोषण नगर तथा ग्राम दोनों ही स्थानों पर होता है । उसके मनमें क्रांति का बीज तो बनता है । लेकिन उसे पल्लवित नही कर पाता । क्योंकि मजदूरो को हमेशा दबाया और कुचला जाता है।

सरकारी योजनाए आजाद भारत में बहुत सारी बनाई गई लेकिन वह गरीब, आदिवासी अति पिछडे हुए लोगों तक नही पहुॅच पायी । क्योंकि सरकार के मंत्री, नेता, बडे बडे अफसर भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जा रहे है । यहॉ तक की ग्रामीण क्षेत्र में भी पंचायत समिती से लेकर ग्रामपंचायत तक भ्रष्टाचार के अड्डे बनते जा रहे है ।

संदर्भ

1. डॉ. टी. मोहन सिंह - साठोत्तर हिन्दी उपन्यास प्रतिपाद्य और शिल्प पृ 35
2. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय नेपथ्य से ।
3. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय - मेघना का निर्णय पृ 18-19
4. मिथिलेश्वर - मेघना का निर्णय-बहादूर पृ 70
5. मिथिलेश्वर - तिरिया जनम - हत्यारों की वापसी पृ 14
6. मिथिलेश्वर - बाबूजी - एक और हत्या पृ 22
7. मिथिलेश्वर - बंद रास्तो के बीच-पत्थर की लकीर पृ 84
8. मिथिलेश्वर - सीमाएँ - पृ 169
9. मिथिलेश्वर - मोल ली हुई मुसीबत पृ 75
10. मिथिलेश्वर - न चाहते हुए भी - पृ 106
11. मिथिलेश्वर - नपुंसक समझौते - पृ 12
12. मिथिलेश्वर - न चाहते हुए भी - पृ 18
13. मिथिलेश्वर - अनुभवहीन पृ 07
14. मिथिलेश्वर - अनुभवहीन पृ 09

15. मिथिलेश्वर - बीच रास्ते मे पृ 33
16. मिथिलेश्वर बंद रास्तों के बीच रात अभी बाकी है पृ 128
17. मिथिलेश्वर बंद रास्तों के बीच रात अभी बाकी है पृ 127
18. मिथिलेश्वर विग्रह बाबू पृ 62
19. मिथिलेश्वर बाबूजी - विग्रह बाबू - पृ - 61-62
20. मिथिलेश्वर बाबूजी - विग्रह बाबू - पृ - 69
21. मिथिलेश्वर बाबूजी - विग्रह बाबू - पृ - 70
22. डॉ . वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 09
23. मिथिलेश्वर - बन्द रास्तों के बीच पृ 57
24. मिथिलेश्वर - बाबूजी - शेष जिन्दगी - पृ 54-55
25. मिथिलेश्वर बाबूजी - शेष जिन्दगी - पृ 55
26. मिथिलेश्वर जी का जंजाल पृ 29
27. डॉ . वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 06
28. डॉ . वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ -पृ -70
29. मिथिलेश्वर - तिरियाजनम - एक गाव सुखाग्रस्त- पृ- 124
30. मिथिलेश्वर - हरिहर काका तथा अन्य कहानियाँ पृ 50
31. संपा टी के लक्ष्मण , बी के नारायण, Rural Development of India पृ - 37
32. विवेकीराय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन पृ 67
33. विवेकीराय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन पृ 65
34. मिथिलेश्वर एक गाव की अन्तकथा पृ 217
35. डॉ. वर्षा मिश्र मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ पृ 07
36. मिथिलेश्वर - जमुनी पृ 70
37. डॉ. संगिता पाटील - अप्रकाशित साहित्य से 1
38. मिथिलेश्वर - जमुनी पृ 79
39. मिथिलेश्वर - जमुनी - पृ 89
40. विवेकीराय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा - साहित्य और ग्राम जीवन पृ 73

अध्याय षष्ठम :

मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन

मनुष्य प्राचीन काल में समूह में रहता था । जिससे समाज का निर्माण हुआ। समाज की जरुरतों के मुताबिक वह कार्य करने लगे। जिससे वर्ण व्यवस्था कायम हुयी। उसी आधार पर लोग अपने-अपने मन शांती हेतु भगवान का स्मरण करने लगे। सुर्यदेवता, चंद्र देवता, प्रकृती पूजा यही धर्म के प्रतिक माने जाने लगे। जैसे जैसे समूह बढने लगे। आस्था, विश्वास भी बढने लगे । उसे हमने धर्म की परिभाषा दी। धर्म मनुष्य को जीवन जीने का मार्गदर्शक बना। धर्म के अनुरुप संस्कृति का विकास हुआ। संस्कृति शब्द अंग्रेजी कल्चर का पर्यायवाची माना जाता है। इस बारे में रामशकल पांडेय लिखते है- परंपरा से प्राप्त विचार, मूल्य, कला, शिल्प, वस्तु तथा आदत संस्कृति के अंग है। आदर्शो, मूल्यों, स्थापनाओं एवं मान्यताओं का समूह संस्कृति है।[1] स्पष्ट है कि हमारी जीवन प्रणाली को हम संस्कृति मान सकते है । इसी जीवन शैली को कमलेश्वर जी इस तरह व्यक्त करते हैं - सभ्यता के अंतर में बहनेवाली विचार धारा को, जिस पर युग के क्रम अंकित हैं, हम संस्कृति कह सकते है ।[2] याने मानव विकास की अगली कडी ही संस्कृति और धर्म है । धर्म और संस्कृति को रुपायित करने में निम्नलिखित आधार महत्वपूर्ण है- सांस्कृतिक मान्यता प्राप्त विभिन्न पवित्र विश्वास ही धर्म है। जो मानव समाज को अपनी पूर्व पिढियों से सामाजिक विरासत के रुप में प्राप्त होते है । उसी के आधार पर अपने जीवन क्रम को निर्धारित करते है, आकस्मिक आपदाओं को सहन करने का संबल भी ।[3] किंतु धर्म और संस्कृति विकसित होते होते उसमे कुछ जातक कथाए भी जुडती गई और कुरुपताएँ भी।

भारतीय समाज व्यवस्था अनेक धर्म, संप्रदाय, जाति वर्गो में बटी है। पर कोई जाति विशेष को लेकर अपनी श्रध्दा, विश्वास और मान्यताए मानता है। और अपना जीवनयापन करता है। उसी तरह भारतीय समाज दो भागों में बंटा हुआ है। नागर समाज और ग्रामीण समाज । आजादी के पुर्व अशिक्षा अज्ञान की गर्त में डूबा हुआ था। अनेक अंधश्रध्दाएँ लेकर वह जीवनयापन करता था। अंग्रेजों ने यहाँ आकर बहुत से सुधारवादी कानून बनाये। हमारा यहा के विदुषी लोगों ने भी बालविवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह जैसी समस्याओं को खत्म करने की कोशिश की है। आजादी पश्चात शिक्षा क्षेत्र बढता गया है। और हमारा समाज शिक्षा दिक्षा ग्रहण कर आधुनिकता की ओर बढा जिससे हमारे समाज में फैली अंध परंम्पराएँ दकियानुसी विचारधारा में काफी

परिवर्तन देखा गया है। लेकिन अंधविश्वास की यह बिमारी से हम आज भी मुक्त नही हो पाये है। पंडित नेहरुजी भी इसी तथ्य को उजागर करते है- भारत की अंधिकांश सामाजिक समस्याएँ जैसे जाँति-पाँति दहेजप्रथा, सांप्रदायिकता, बालविवाह आदि के पीछे मूल कारण अंधविश्वास एवं रुढियों का आंखे मूंदकर पालन करना ही है।[4]

स्पष्ट है । की भारतीय ग्रामीण समाज में आशिक्षा के कारण यह सारी प्रथाएँ आज भी विद्यमान है। जैसे कि डॉ. संगिता पाटील अपने अप्रकाशित साहित्य मे लिखती है- समाज में प्रचलित अंधविश्वास, अंधश्रध्दा और रुढिगत मान्यताओं के कारण ग्रामीण लोगों में देवी देवताओं का बोलना तथा उनका संचार होना, देवी-देवताओं की पूजा, मंत्र-तंत्र , दान, व्रत, उपवास, चढावा चढाना संतान की प्राप्ति के लिए पूजा-पाठ, मनौतियाँ मनाना, पाप-पूण्य तथा शकुन अपशकुन पर विश्वास करना मृतकों का क्रियाकर्म करना आदि प्रकार के अंधविश्वास देखने को मिलते है।[5]

यहॉ तक की हमारे ग्रामीण समाज में आज भी बिल्ली के रास्ता काटने पर काम बिगड जाने की मान्यता है। तथा भगवान द्वारा दूध पिये जाने की दुर्भावना हमारे समाज में परिव्याप्त है।

ग्रामीण समाज आज भी धार्मिक अंध परंम्पराओं से ग्रस्त है। जिसमें पुरुष वर्ग के साथ-साथ नारी भी सम्मिलित है। ग्रामिण समाज आज भी जाति पाति के भेद में पडा है। गांवों में सभी प्रकार की जातियाँ निवास करती है। लेकिन वे अलग-अलग टोलों में विभाजित होती है। ब्राम्हण टोला अलग बसता है तो हरिजन टोला अलग । उसी प्रकार गावों में चमार पासी, मुसहर डोम अहिर, कामस्थ सभी लोग होते है। वे सभी अपनी अपनी संस्कृति का वाहन करके जीती है। सबके अपने अपने पर्व, त्योहार, उत्सव, मेले, देवि देवता, रिती-रिवाज, लोककला तथा लोकगीत होते हैं। और अपनी अपनी परंम्पराओं के अनुरुप देवी देवताओं का अभीष्ट करते है। लेकीन यह जातियाँ जो वर्गों में बंटी है। उनका आधार आर्थिकता पर निश्चित किया जाता है। एक जाति का दूसरी जाति में शादी-ब्याह वर्जित होता है। तथा खान पान भी। वैसे ही उनके त्यौहारों में भी वे अलग अलग होते है। मिथिलेश्वर इस ग्रामीण संस्कृति की विरासत से परिचित है। उन्होंने उसे बडे करीब से देखा है। वे जानते है की इस समाज में जाति व्यवस्था और सांप्रदायिकता कितनी प्रभावी रुप में इनके बीच पनपती है। मिथिलेश्वरजी ने घ्हवा का असर कहानी में सांप्रदायिकता का वर्णन किया है। वैसे आमतौर पर लोगएक साथ काम करते है । निवास भी करते है। लेकिन दंगे फसाद के दौरान उनमें शक पैदा हो जाता

है। और वह आग उफनती ती है। जैसे- सामाजिक प्राणी इन्सान के अंदर शक भय और नफरत की आग पैदा कर देती है। रामकृष्ण पाण्डेय सुलेमान अहमद और हरिन्दर सिंह परप्रांतीय होने के कारण धर्मावलम्बी होने के बावजूद एक दूसरे से घुल मिल गये थे, लेकिन जब दंगे छिडे तो उनके बीच दूरियाँ कायम हो गयी। सांप्रदायिकता का विष फैलानेवाले इंन्सान की एकता और भाईचारे के दुश्मन है।[6] वैसे ही आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी जातियों के लिए मंदिर प्रवेश वर्जित है। गाँव का कुंआ वर्जित है। सामुदायिक सांस्कृतिक कार्यक्रम वर्जित है। वर्णव्यवस्था का शिकार यह समाज आज भी उसी आस में बैठा है की भगवान एक न एक दिन हमें दर्शन देगें। इसी कथ्य को आधार बनाकर मिथिलेश्वर जीने अधिकार संपन्न कहानी लिखी है। जिसमें पुरोहितवाद पर करारा प्रहार किया है। इसके बारे में डॉ. वर्षा मिश्रजी लिखती है- अस्थानाजी के यहाँ सत्यनारायण की कथा है। पूजा के प्रसाद को दाई के लडके ने जूठा कर दिया।
सब चिन्ता में पड जाते हैं। पुरोहितजी तुलसी और गंगाजल छिडक कर उसकी पवित्रता दूर कर देते है। बंन्टी पुछता है- पुरोहितजी को इतना बडा अधिकार किसने दिया दादाजी ? और अस्थानाजी निरुत्तर हो जाते है।[7] स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज जाति प्रथाओं और संप्रदायों में आज भी लिप्त है। जिसे शिक्षा का माध्यम ही दूर कर सकता है।

ग्रामीण समाज आज भी अंधविश्वास और अंधश्रध्दओं पर विश्वास करता है। हमने विज्ञान और तकनीकी तौर पर कितना भी विकास कर लिया हो। लेकिन यह विकास ग्रामीण क्षेत्र में कोई मायने नही रखता। गांवों में आज भी हम देखते है कि वहॉ अस्पताल है, डॉक्टर हैं लेकिन अपनी बिमारी का इलाज वे अस्पतालों के बजाय ओझाओं के पास जाकर करते है। मिथिलेश्वर जी इससे परिचित है। वे ओझा के बारें में लिखते है- ओझा हमारे समाज के वैसे व्यक्ति होते है जो अशिक्षित और विपन्न होते है, लेकिन दिमागी स्तर पर वे विलक्षण, प्रत्युत्पन्न मतित्व से संपन्न तथा मानव मन के नैसर्गिक जानकार होते है। जिविकोपार्जन के लिए वे बनिहार-चरवाही या मजदूरी कर रहे होते है। समाज में अपने अनुकुल काम न पा और इच्छित सुविधाओं के अभाव मे वे ओझाई का रास्ता अख्तियार करते है। उनकी स्पष्ट स्विकारोक्ति है।

सब कुछ छोड के हम करब ओझाई
कुछओं ना मिली त खइलका कहाँ जाई।

यहॉ खइलका से उनका तात्पर्य खाने-पीने के लिए अर्थ-प्राप्ति के साथ भरपुर यौन-सुख की प्राप्ति से भी होता है।[8] मिथिलेश्वर ने विरासत कहानी मे ऐसे ही ओझा का चित्रण किया है। जिसका नाम झकड बाबा है। झकडबाबा के फुलन है। वे भी काफी चर्चित रहे है। क्योंकि फुलन के द्वारा ही सुमेरराम की बांझ पत्नी को पुत्र प्राप्त हुआ था। जिससे फुलन की आस-पास के गांवों में जयजयकार होने लगी थी। उसने अपने घर के आंगन में ही देवी माता का चबुतरा बना लिया था । वही पर दुखियारे, रोगी अपना इलाज करवाते थे। लेकिन झकडबाबा का नाम सबसे उपर था। वे जब बचपन में पढाई करते थे तो सबसे उपर था। वे जब बचपन में पढाई करते थे तो सबसे तेज छात्रों मे वे गिने जाते थे। और हमेशा पहने दर्जे में पास होते थे। उनकी करामतों से वे किसी को भी पछाड देते थे। किन्तु पिता ने पढाई के बजाय उन्हें खेती बाडी का काम सौप दिया । जिससे उनकी पढाई रुक गई । और वे अनपढ जैसे रह गये। लेकिन गांवों के रोगी हो या अन्य कोई समस्या उसे अपने ज्ञान के आधार पर निपटाने लगे। कारणवश बडे लोग में उन्हें सम्मान देने लगे। फल स्वरुप वे हमेशा चर्चित रहें। और जवानी के मुहाने पर गांव के मुखिया बनाये गये। किंतु पढाई के अभाव से शादी नही हो पाई और उसका दर्द वे महसुस करने लगे। इस संदर्भ में मिथिलेश्वरजी लिखते है- अपने भयावह कुंआरेपन के दर्द को हलका करने के लिए ही आगे चलकर झकड बाबाने अपनी जिंदगी में कारनामों और करिश्मों को जन्म दिया।[9]

जब गांव में कोई भी बिमार होता तो वे हमेशा डायन या भूत-प्रेत को कारण बताते किंतु अपनी स्वयं की बिमारी का इलाज शहर के अच्छे डॉक्टरों से करवाते। इस बात को गांव के कुछ लोग जानने और समझने लगे थे। जग्गुबाबा इसीलिए झकड बाबा का विरोध करने लगा था। वे कहते है- यह झकड एक नंबर का पाखंडी है। अपना डॉक्टरों से इलाज करवाता है और गांवभर को डायन तथा भूत प्रेत का लगना बता देता है।[10] इधर झकड बाबा को अपना कंवारापन काफी खलने लगा था। गांव की कई औरतों से संबंध भी बताया जाता है। फलस्वरुप गांव में उसकी काफी बदनामी हो चुकी थी। एक दिन अचानक झकडबाबा गांव से गायब हो गये। और बहुत दिनों के बाद फिर यकायक गांव में आ धमक। लोग कहने लगे कि बाबा सिध्दि प्राप्त करके आये है। वे फिर से अपना पुराना पेशा अपनाकर लोगों का दुख-दर्द कम करने का दावाँ करने लगा। लेकिन अंन्त में लेखक पटेसर के साथ मिलकर बाबा का असली चेहरा लोगों के सामने लाने की कोशिश करते है. यथा - मै दौडा हुआ बटेसर के घर पहुंचा था। फिर उसे सारी

बातें बता दी थी। बस बटेसर गांव की गलियों में घुम-घुमकर झकडबाबा के षडयंत्रों को बेनकाब करने लगा था। हालाँकि लोगों को बटेसर की बातपर विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन बटेसर ने गांव के हर व्यक्ति के कानों तक यह बात पहुंचा दी थी।[11] स्पष्ट है कि अशिक्षा के कारण ही झकडबाबा जैसे लोग ग्रामीण लोगों का फायदा उठाते है।

गृहप्रवेश कहानी भी ऐसे अंधश्रध्दा के शिकार एक व्यक्ति की कहानी है। जिस में श्रीवास्तव गृह प्रवेश करते समय पूजा नही करवाते है, और घर में रहने चले जाते है। कई दिनों के बाद उनकी बहन का छत से गिरने के कारण मृत्यु हो जाती है। समाज इस घटना को गृहप्रवेश में पूजा न करवाने की घटना से जोडते है। जिससे श्रीवास्तव भी अपनी हार मान लेता है। स्पष्ट है कि हमारा समाज कितना भी शिक्षित बन जाए लेकिन अंधविश्वास और अंधश्रध्दा के चक्र से अलग नही हो सकता है। एक गाँव की अन्त:कथा में भी ग्रामीण अंधश्रध्दा का वर्णन चित्रित है। लेखक कहते है- गाँव के दखिन में ब्रम्ह बाबा के चबुतरे पर प्रति शुक्रवार की शाम देवास का आयोजन होता है। जहाँ अभावों और मनोव्याधियों से पीडित औरतें डायन और भूत खिलाती है तथा ओझा उनकी ओझाई करते है।[12] यही आज भी गांवों में हो रहा है। ग्रामीण लोग आज भी डॉक्टरी इलाज के बदले ऐसे ढोंगी बाबाओं, साधुओं तथा ओझाओं के पास जाते है। जो स्वयं अज्ञानी होते है।

भारतीय समाज की ग्रामीण संस्कृति में आज भी भूत प्रेत, जादु-टोना आदि पर विश्वास किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र अज्ञान अशिक्षा से आज भी पीडित दिखाई देता है। अंधश्रध्दा और अंधविश्वास तो पहले से बना हुआ है ही। हमारा समाज कही सुनी बातों पर अधिक विश्वास करता है। आँखो देखी घटना पर नही। भूतों की कल्पना भी इसी प्रकार की है। हम एक पीढि के लोग दूसरे पीढि के लोगों तक यह भ्रामक कल्पना बरकरार रखते है। स्वयं मिथिलेश्वर जी अपने गांव का प्रसंग बताते है लेखक शहर में नौकरी करते थे। लेकिन उनका परिवार गॉव में ही रहता था। जब वह एक बार गॉव गए थे। गॉव में सभी लोग एक साथ ही सोते थे। जब बाबा एक प्रेत का किस्सा सुनाते है- तो सुनो बचवन (बच्चों) आज तोहनी का एगो प्रेत के किस्सा सुनाता हूँ । ई किस्सा कवनो कथा-कहानी नाहीं। एकदम सच्ची बात । अपना ए ही गांव में घटल कहानी। ओह घरी तुम सबों का जन्मों नही हुआ था। तुम्हारे बाप चाचा भी एकदम बुतरु (छोटे बच्चे) थे। मै उस बखत(वक्त) सरेख(सयाना) हो गया था।[13] उस समय गाँव में बिरदासिंह जैसा शक्तिशाली मनुष्य दूसरा कोई नही था। वे आसपास के किसी भी

पहलवानों को चीत करने की शक्ति रखता था। वह रात बेरात कही भी निकल पडता था। एक रात जटाधारी प्रेत के चक्कर में पड गया। गांव के बगीचे पर बूढा बरगद का पेड है। उसी स्थान पर वह प्रेत रहता था। बाबा आगे कहते है- हुआ ई कि विरदा नाच देख के बगल के गांव से आवत रहे। आधा रात का बेर (समय) था। बुढवा बरगद के भीरी (नजदीक) पहुंचने पर किनारे से मानुष भेष में (मनुष्य के रूप में) आकर उस प्रेत ने बिरदा का रास्ता रोक दिया । उखमंजल (शक्ति के घमंड में चूर) बिरदा सिंह ने आव देखा न ताव राह से उसका धकिया-कर आगे बढ जाना चहा बाकिर ऊ तो बिरदा सिंह का बाप साबित हुआ । लाख जोड अजमाते रहे बिरदा, पर ऊ टस से मस न हुआ । तब का जट हवा प्रेत है मूल देखन। अब बिरदाने निहोरा किया आप काहे हमार रास्ता छेंकत है। हमको घर जाने दे।[14] तब उस प्रेत ने कहा पहले मुझे खैनी खिलाओ, तो तुम्हे मैं तुम्हारे गांव पहुंचा दूँगा । खैनी खाने के बाद वह विरदा सिंह को अपनी पीठ पर बिठाकर चल पडता है। बिरदा सिंह मन में सोचता है कि यह मुझे अंधेरी रात में गिरा देगा। लेकिन फिर भी वह डरा नही । उसके पास उस्तरा है। और वह जानता है कि उस्तरे का प्रयोग वह कभी भी कर सकता है। ऐसा माना जाता है कि प्रेत की ताकत उसके जट मे होती है। मगर उस जट को काट दिया जाए तो वह सचमुच मनुष्य रुप धारण कर लेता है। और उसको बिरदा सिंह अपने घर पर लाकर नौकर रख देता है। उस कटी जट को अगर किसी धान की कोठी में डाल दिया जाए तो धान कभी खत्म नही होता।

बाबा आगे कहते है - प्रेत से मनुष्य बना वह आदमी पूरी ईमानदारी से काम करता था । बिरदा सिंह का भाग्य जगमगा गया था। गांव के लोग भी बडे हैरान थे कि बिरदा सिंह की इतनी उन्नती कैसे हो रही है। लेकिन एक दिन अनाज तौलते-तौलते वह जट उस प्रेत को दिखाई देती है। और वह झट से उसे अपने हांथो मे ले लेता है। और बिरदा सिंह को कहता है ऊं बिरदा सिंह के अँगूठा देखावत भाग चला जट मिल गयी, फट(ठेंगा) ले लो, जट मिल गयी, कट ले लो।[15] ऐसे ही ग्रामीण जीवन में कई कहानियाँ भुत प्रेतों की सुनने में आती है। स्पष्ट है कि, ग्रामीण आज भी अंधश्रध्दा में लिप्त है।

ग्रामीण क्षेत्र में मनुष्य के अन्दर इतना अंधविश्वास है कि वह अपने पशुओं के भाग्य का फैसला भी भगवान भरोसे छोड देते है। मिथिलेश्वर जी ने जमुनी नामक भैंस को नायिका के रुप में प्रस्तुत किया है। पर जमुनी जब बिमार होती है तो जिऊत और

उसकी पत्नी जोगनी तरह तरह की मनौतियाँ माँगती है। वह कहती है- उसकी जमुनी रानी को क्या हो गया है ? किसने नजर लगा दी ? वह गांव के गौरेया बाबा को पीठा चढाने, काली माई को चुनरी ओढाने तथा धरम बाबा को लॅगोटा पहनाने की भखौटी मन-ही-मन भाखती रहती है।[16] इस तरह जमुनी का बेटा परभू और बेटी रतिया भी भगवान की सुमिरन करती है। क्योंकि पूरे परिवार भरन-पोषण जमुनी के द्वारा ही होता है। इसी लिए ऐसा लगता है कि पूरे परिवार को ही ग्रहण लग गया है। जमुनी को किसी ने माहूर तो नहीं दे दिया या टोना-टोटका तो नही कर दिया। दरवाजे पर हाथी की तरह मस्त जमुनी को देखकर कितने मुदइयों का कलेजा फट रहा था। जरुर उन्हीं में से किसी ने कुछ किया है। वह सुरज बाबा को गोहराती है कि जमुनी को ठीक करदे।[17] जमुनी के इलाज के लिए गांव भर के वैद्य, ओंझा डॉक्टर सबको बुलाया जाता है। इसीलिए कि किसी न किसी के हाथ से जमुनी ठिक हो जाय अलियार ओंझा पर गांव के बहुत से लोगों का विश्वास है । वह ओझा जानता है कि यह लोग अज्ञानी है। इसी लिए उनके अज्ञान का फायदा उठाकर वह कहता है - घबराने की जरुरत नही है भौजी । इसे पडोस की ही एक डायन ने नजर की है। तुम याद करो भौजी, तुमसे मटठा मांगने एक औरत आयी थी। तुम उसे मट्ठा देने के लिए घर के अंदर गई थी। उसी वक्त उसने भैस को अपना शिकार बनाया था। काफी दिनों से वह इसे अपनी नजर पर चढाए थी।[18] लेकिन जब उस डायन का नाम बताने का समय आता है तो ओझा का यह धर्म भी नही है कि वह किसी डायन का नाम बताए । इससे ओझाओं का सत जाता रहता है। वह तो कुछ लोग बाध्य कर देते है - जिद पकड लेते है , नही तो मैं बताता ही नही।[19] ओझा आगे भी कहता है - भौजी नाम जानकर क्या करोगी ? मैं जो कहता हूँ वह करों। उसकी करनी का ऐसा फल मै चखा दूंगा कि कभी इस घर की ओर वह आँख उठाकर की नहीं ताकेगी। मुझे एक गोइँठे पर आग सुलगाकर दे दो तथा एक लोटे में साफ जल इसके साथ पिअर की तोरी और एक मुट्ठी भर लोहबान भी।[20] उसके बाद ओझा वह पानी का लोटा और लोभान लेकर जमुनी के पास जाकर मुंह से तरह तरह की आवाज निकालकर पानी के छिटे जमुनी पर फेंकता है। तो जमुनी पर पानी गिरने से वह अचकचाती है। जोगनी को लगता है कि डायन का असर कम हो रहा है वह सोचती है- अलियार डायन की चपेट से जमुना का मुक्त करना शुरु कर दिया है। उनके मन में किसी न किसी कोने में यह आशा बंधी रहती है कि, शायद अलियार की ओझाई सुन ले। अगर अलियार की ओझाई न भी सुने तो भी उन्हें इस

बात का अफसोस तो नहीं रहेगा कि उन्होंने सिर्फ दवाई ही दी, ओझाई नही की। इसीलिए वे चुपचाप ओझाई देखते है।[21]

किन्तु जब ओझा अपना तंत्रमंत्र कर रहा था। उसी समय सिपरसन आ जाता है। जिऊत को महसूस होने लगा कि दोनों को एक ही समय में बुलाना नही चाहिए था। सिपरसन और ओझा एक दूसरे से पहले इलाज के बहाने भीड चुके थे। लेकिन सिपरसन मवेशियों के प्रति अधिक संवेदनशील है। वह जानता है कि उसकी अचूक बिमारी क्या है। उसीपर वह जडी बूटी देता है। और जानवरों को ठिक करता है। जमुनी को देखने के बाद वह जडी बूटी लाने जाता है । और कभी लालच भी नहीं करता। उसके बारें मे लेखक कहते है - गऊ सेवा को वह अपना पवित्र धर्म मानता है। इस विषय में मोल भाव करना पाप समझता है। लेकिन लोगों ने भी उसे कम नहीं दिया है। बिना किसी खेती- गृहस्थी के वह अच्छा खाता है पहनता है। लेकिन जब से कस्बे में मवेशी अस्पताल खुला है, लोग उसे कम बुलाने लगे है। उसकी अपेक्षा शहर से आए मवेंशी डॉक्टरों मे लोंगों का विश्वास ज्यादा रहने लगा है। पर सिपरसन दु:खी नही है। वह कहता है कि, अंग्रेजी सुइयॉ और दवाइयाँ उसकी जडी बुटियों का मुकाबला नही कर सकती ।[22] सिपरसन अचुक इलाज करता है। किंतु जमुनी का अलिआर पहले से अधिक इलाज करना शुरु करता है। और इलाज करके चल देता है। सिपरसन जंगल से जडी बुटी लाकर रतिया को पीसकर गुड में खिलाने को कहता है- अगर जडी ने सुन ली तो रात भर में जमुनी रास्ते पर आ जाएगी। यह जडी बावग नही जाती .... अपना असर दिखाकर ही रहती है।[23] सिपरसन अच्छा वैद्य है। वह किसी का विरोध भी नही करता ना शहर से आये मवेशी डॉक्टरों का । पर अन्त में जमुनी ठीक हो जाती है। तब जोगनी सुरज बाबा, देवी देवताओं की पूजा करेगी क्योंकि इन्ही की कृपा से जमुनी ठिक हुयी है। तात्पर्य ग्रामीण लोग आज की इन झाड फूँक करनेवाले बाबाओं पर अपनी श्रध्दा रखते है।

इसी प्रकार मिथिलेश्वर जीने गूँगा गंगू कहानी में ढोंगी लोगों पर प्रहार किया है। सिताबगंज नामक गांव के रज्जुबाबा अपने क्षेत्र में प्रसिध्द थे। दूर दूर से लोग अपना भाग्य देखने रज्जुबाबा के पास आते थे। वे पहले पंडित रघुनाथ आनंद हुआ करते थे। बादमें रजुनाथ बावा और अन्त में रज्जुबाबा बन गये। सिताबगंज को वो अपनी कर्मभुमी मानते थे।

सिताबगंज गांव के अमीर किसान अभिजित सिंह थे। और मुखिया भी। उन्ही का दस वर्ष का बालक मिठू तीन चार दिनों से लापता था। अमीर की संतान शरारती होती है । वह कभी पढाई में ध्यान नही लगाता था। एक दिन मारपीट करके पिता ने उसे पढने के लिए कहा तो वह भाग गया। इस बात को चार पांच दिन होने के पश्चात दोंनो पति-पत्नी बाबा को बिनंती करते है- चाहे जैसे हो, हमारे बेटे का पता लगवा दीजिए बाबा। उसे बुलवा दीजिए आप जो कहेंगे, हम करेंगे। आपको आँख की पुतरी बनाकर रखेंगे। आपके उपकार से कभी उऋण नहीं होंगें।[24] उसी समय बाबा ध्यान लगाकर देखते है और कहते है - आपका लडका सही सलामत है। वह भटक रहा है। कष्ट में भी है। उसकी वापसी के लिए अनुष्ठान जरुरी है।[25] इसके बाद अनुष्ठान किया गया और बेटा वापस भी आ गया। उसके आने के बाद बताया कि मार से बचने के लिए वह मामा के घर भागना चाहता था कितु रास्ता भटकने के कारण शहर चला गया लेकिन इधर लोगों का विश्वास अधिक प्रबल हुआ की, बाबा के अनुष्ठान से ही बच्चा वापस आया है। अपने अनुष्ठान से ही बाबा ने घर वापसी के लिए उनका मन बरला है।[26] उसी दिन अभिजित सिंह का परिवार बाबा का कायल हो गया। और बाबा के लिए सारी सुख सुविधाओं का इन्तजाम किया गया। बाबा किसी भी दुखियारें का दुख कम करने लगे। उनको लगता था - मै कोई सिध्द संत और चमत्कारिक पुरुष नहीं । मेरी भविष्यवाणी और सगुण विचार का संबंध इस बात पर निर्भर करता है की पूछनेवाला किस दिशा से आया है और कब आया है ? उस समय मैं क्या कर रहा होता हूँ किस दिशा में मुँह कर बैठा होता हूँ ? जब तक आगन्तुक सही समय और सही स्थिति में नही आएँगे मेरी भविष्यवाणी और सगुण विचार सही नही होंगे।[27] इसी आधार पर बाबा का नाम चारों दिशाओं मे फैलने लगा। और उन्होंने उसी गांव में अब अपना सिध्द स्थल बना लिया और गंगु को भी कोई नही था। इसी बीच अभिजित सिंह की पत्नी का सोने का हार चोरी हो गया। तो अभिजित सिंह बाबा के पास पहुंचे । बाबा ने उनके घर की नौकरानी पवितरी का नाम लिया । उसे डराया धमकाया गया।

रज्जुबाबा अपने बैठने के स्थान पर किसी को फटकने तक नही देते थे गांव के लोगों में भी यह समय थी कि बाबा इसी आसन पर बैठकर की भविष्यवाणी सही साबित करते थे। लेकिन एक दिन उसी आसन पर सांप दिखाई दिया। गांव के लोगों ने बाबा का आसन जब उल्टा कर दिया तो वहीं गांव के चोरी गई सारे सामान पडे मिले । जैसे- गद्दा हटते ही लोगोंने देखा कि आसन के नीचे पडा वह सांप मरा हुआ था।

उससे कुछ ही दूरी पर अभिजित सिंह की पत्नी का वह गायब हुआ हार पडा था। अभी हाल ही में शिवेंद्र की चोरी हुई विदेशी घडी तथा गोवर्धन की बेटी के चोरी गए जेवर भी पडे थे। अब लोगों को यह समझने देर नही लगी कि बाबा क्यों आसन उलटे नही कर देना चाहता था और क्यों आसन पर ही सदैव मौजूद रहता था ? आसन के पास किसी और को न जाने देने के पीछे भी उसकी मंशा क्या थी ।[28] वैसे ही अपना पोल खुलते देख बाबा कहते है। - अरे साले चोरों ने गजब कर दिया ? मेरे आसन के नीचे ही यह सब छिपा रखा है। सोचा है बाबा के आसन के नीचे कोई नही खोजेंगे ।[29] कितू ग्रामीण लोग इतने भी मूर्ख नही होते है वे बाबा को कहते है अब हमें मूर्ख न बनाओं पंडित आज रंगे हाथों तेरी करतूत पकड ली गई है। सिर्फ मेरी पत्नी का हार रहता तो मै तेरी बात मान भी लेता । गांव के सारे चोर तुम्हारे आसन के नीचे ही रखने आते है और वह भी जब कि तुम आसन के पास किसी को फटकने तक नही देते।[30] अन्त में गांव के सारे लोग बाबा को मारने पीटने पर उतारु हो जाते है। बाबा भी समझ जाते है कि अब बचने का कोई और मौका नही है। इसीलिए मुखिया के पैर पकडकर गिडगिडाकर माफी माँगता है। गांव निर्णय करता है कि इसे गांव से बाहर कर दिया जाय। जैसे ही बाबा गांव से निकलते है। गंगू की ओर सारा गांव श्रध्दा से भर जाता है क्योंकि गंगू ने ही सांप को मारकर बाबा के आसन के नीचे डाल दिया था। इस प्रकार पाखंडी बाबा का गांव के लोग भंडा फोड करते है।

बीजारोपन कहानी में भी मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण अंधश्रध्दा को उद्‌घाटित किया है। गांव का धरीछन खेत मजदुर है। लेकिन एक दिन अपनी पत्नी अधिक मेहनत के कारण मर जाती है। वह गर्भवती थी। धरीघन का अपनी पत्नी पर अधिक स्नेह था। अब उसका कर्मक्रिया हेतू वह बाजार जाता है। तब उसे अपनी पत्नी की बहुत याद आती है - वह धरीछन की लंबी उम्र के लिए उसकी पत्नी तीज - त्यौहार करती । देवी देवताओं से मिन्नते मनाती। और धरीछन अपनी पत्नी के लिए खून पसीना एक करके कमाता उनकी अपनी दुनिया बहुत छोटी थी । लेकिन कही भी खोटी और अधुरी नहीं थी । वह दुनिया आज उजड गयी।[31] धरीछन की पत्नी के मरने पर वह सोचता है- धरीछन की पत्नी निरंतर पीली हो गयी। धरीछन को देवी देवताओं पर तनिक भी विश्वास नही था। वह कभी पूजा पाठ नही करता था। लेकिन अपनी पत्नी की जिंदगी के लिए गांव के हर मंदिर में जाकर प्रार्थना करने लगा। घंटो ईश्वर के सामने हाथ जोडकर वह आँखे मुंदे खडा रहता।[32] लेकिन गांवों की त्रासदी यह होती है कि इ

आपको भुखे मरते वक्त कोई एक पैसा तक नही देगा लेकिन आपके मर जाने पर दाह संस्कार के लिए पूरा गांव उमड पडेगा। शायद मृतक की अंतेष्टि से कुछ पुण्य मिलता हो।[33] लेकिन गांव में एक और परंपरा है कि गांव में कोई गर्भवती महिला मरती है तो उसके पैरों में कीले ठोकी जाती है। नही तो वह भूत बनकर मरनेवाले के घर को सताती है। किंतू धरीछन ऐसा करने से मना करता है और कहता है- मैं किसी भी सूरत मे अपनी पत्नी के हांथ पाव में कीले नही ठोंकने दूंगा । जिसे यहॉ रहना है रहे, अन्याथा जाये । मुझे किसी की परवाह नहीं। जब मेरी पत्नी दवा के बिना मर रही थी तब कोई क्यो नही आया था।[34] संयोगवश कुछ दिनों में पडोसी की भैंस मर जाती है। तब धरीछन की पत्नी को ही जिम्मेदार माना जाता है। गांव में पढे लिखे लोग भी है। वे केवल चर्चा करते है। कोई बात अंमल में नही लाते। वे चर्चा करते है कि धरीछन ने अच्छी परंम्परा शुरु की है। उसे शाबाश्ी देने की चर्चा करते है । धरीछन उनकी बांते सुनता है- धरीछन ने बहुत सही किया है। वे जी खोलकर धरीछन की तारीफ करते । उनके अनुसार अनपढ होते हुए की धरीछन अपने प्रेम के तहत एक अच्छा काम कर गया। अशिक्षित जनता की मुक्ति के लिए रुढियों और आडम्बरों के विरोध में धरीछन का यह कार्य प्रशंसनिय है। उसने राजा राम मोहन राय की परंपरा को जिंदा किया है। अब गांव बदलने लगे है।[35] पर इन लोगें की चर्चा सुनते धरीछन समझ नही पाता। उसे नही पता की राजाराम मोहन रॉय कौन है। अन्त मे धरीछन गांव छोडकर चला जाता है।

ग्रामीण क्षेत्र में आज भी कुछ बिमारियों को लेकर लोगें में अंधश्रध्दा का भाव विद्यमान है। मिथिलेश्वरजीने सवाल नामक कहानी में इसी समस्या को चित्रित किया है। गांव में एक कृष्ठरोगी है। जिसे लोग बहुत ही घृणा की नजर से देखते है। यहाँ तक की उसको ठोंकरे मारी जाती है और इधर से उधर उसे धकेला जाता है। और अंत में एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। और ऐसे लोगों को ग्रामीण लोग मरने के लिए भी जगह नही देते । मिथिलेश्वरजी की कहानी में भी ऐसा ही चित्रण हुआ है। फुलिया के दादा झगरु कई सालों से कृष्ठरोग से पीडित है। हरखु अपनी बेटी फुलिया की शादी बडी धुम धाम से करना चाहता है क्योंकि वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करता है। किंतु अपने पिता की बिमारी ही उसकी शादी के आडे आती है। गांव के लोग उसे कहते है कि अपने बाप को नदी मे फेंक दे दीया जाए। पर हरखु अपनो से भी बहुत स्नेह रखता है। वह बडी उलझन में फँस जाता है एक तरफ बेटी और एक तरफ पिता है। अंत में

वह पिता को नदी मे फेंकने के लिए तैयार हो जाता है। और उसे जल समाधि दी जाती है। फुलिया उसी नदी के रास्ते से गुजरती है तो बाबा की झोंपडी देखती है। झोपडी के अन्दर लंबी - लंबी घास उग आयी है और बाबा व्दारा पालित वह जंगली बिल्ली उस घास के बीच बैठी किसी की प्रतीक्षा कर रही है। पास ही नीम के गाछ के नीचे अंधा सरजू पडा है। फुलिया ने सुना था की अंधों की आंखों से आंसू नही बहते। लेकिन वह साफ देखती है की सरजु की दोंनों आँखों से आंसू बह रहे है।[36] ग्रामीण अंश्रध्दा के कारण एक असहाय व्यक्ति की मृत्यु होती है। वैसे अनेकों लोगों के दिल में संवेदना उठती है। लेकिन कोई इस दर्दनाक घटना को रोक नही पाये । यही त्रासदी है। लेखक कहते है - गांव के पढे लिखे लोगों का एक छोटासा तबका, जो मानसिकता से झगरु की इस घटना को रुढि और अन्याय समझता है, शरीर से सामने नही आता है। फलतः गांव की बहुसंख्यक जनता जो झगरु को फेंकने के पक्ष मे होती है. कहीं से कमजोर नही पडती है।[37] स्पष्ट है की अभी भी ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार का अंधकार लोगों में छाया हुआ है। ग्रामीण लोगों में यह भी भ्रामक कल्पना है कि हतेअरवा बीमारी के कारण जानवर मरते है। उसके लिए वे पूजापाठ भी करते है। लेकिन कोई फायदा नही होता। हते अरवा बिमारी में मवेशी ऐंठ जाता है। उसका कोई लक्षण नही दिखाई देता है। गांव के ओझा भी इस बिमारी का निदान नही जानते। मवेशी, डॉक्टर यह कहते है कि बरसाती मौसम मे जो घास आती है उसे खाने से यह बिमारी होती है। गांव के पुरोहित द्वारा भी पूजापाठ किया जाता है। लेकिन यह बिमारी नही जाती । कहानी का जिऊत को लगता है कि सुअर के कारण यह बिमारी फैलती है तो पुरोहित से पूजा करवाकर उसे दूर करने की कोशिश करते है- क्या पुरोहितजी द्वारा पूजा दिए जाने और टिका दिए जाने से हतेअरवा सुअर के उस छौने में चला जाता है और उसे जहॉ भगा दिया जाता है। वह रोज वहॉ चला जाता है। संभव है ऐसा होता हो। संभव है ऐसा नही होता हो। लेकिन जब सारा गांव आँख मुँदकर इसे मानता है तो फिर वह कौन होता है इस पर सोच विचार करनेवाला ।[38] अंत में गांव से यह बिमारी भगाने के चक्कर में सुअर को गाव से भगाते सभी लहुलूहान होते है। और आखिर में केस भी दर्ज होता है। और वह केस वर्षो तक चलता है। स्पष्ट है कि आज भी गांव की कोई बिमारी हो कोई समस्या हो लोग ओझा, बाबाओं के चक्कर में पडकर मुसीबतें झेलते है। लेकिन कोई सुधारवादी दृष्टिकोन नहीं अपनाते।

ग्रामीण क्षेत्र में भले ही निर्धनता, बेबसी, लाचारी हो लेकिन फिर भी वे लोग अपने पर्व-त्यौंहारों, उत्सवों तथा धार्मिक पूजापाठ को बखुबी मनाते है। वैसे उनके लिए यही मौका होता है, खुशी मनाने का । इसीलिए ये लोग बडी निष्ठा और लगन से उत्सव मनाते है। तथा पूजा पाठ करते है। मिथिलेश्वरजीने अजगर करै न चाकरी कहानी में तिरिया मेला का वर्णन किया है। इस कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते है कि हमारे धार्मिक स्थान, मंदिर आज कैसे भग्नावस्था में खडे है। इसका विवरण देते है। लेखक के गांव देवधाम आज ध्वस्त हो गया है। एक समय था जब यह मंदिर पूरे गुलजार रुप में था। लोग दूर दूर से पूजापाठ मनौतिया मांगने आते थे। इसे देवधाम का एक इतिहास है। गांव के पुराने जमाने के व्यक्ति कहते है - हमारे गांव का यह देवधाम पुरुखों के जमाने से है । जब मैं छोटा था तब से इसे इसी रुपमें देखता आ रहा हूँ । पूर्वजों ने हमें बताया है कि जेठ की तपती दुपहरिया में सडक से गुजर रहे एक पंडित राहगीर ने इसी पीपल वृक्ष के नीचे प्यास से छटपटाते हुए आपने प्राण त्याग दिये थे। उस पंडित का नाम पता किसी को ज्ञान नही था। उसके कंधे पर जनेऊ, माथे पेर चंदन का टिका तथा झोली मे श्री सत्यनारायण व्रत कथा की पुस्तिका देख सबको उनके पंडित होने का विश्वास हो गया था। गांव ने पूरी श्रध्दा के साथ उनका दाह संस्कार किया था । वही पंडित मरने के बाद ब्रम्ह बनकर इस पीपल वृक्ष पर रहने आ है। उन्होंने शुरु में ही ग्रामवासियों को स्वप्न दे दिया था कि तुम लोग मेरी पूजा करो, मैं बाहरी आक्रमण से गांव की रक्षा करुंगा। तभी से हमारे गांव के लोग उनकी पूजा करते आ रहे है।[39]

बटुकनाथ इस देवधाम के मालिक बने थे। क्योंकि उनके पूर्वज भी इसी काम में लिप्त थे। एक मुसाफिर औरत की मनौती पूर्ण होने के कारण इस देवधाम की चर्चा फैलने लगी। धन्नासेठ की पत्नी को इसी देवधाम की कृपा से पुत्र प्राप्ति हुयी । उसने मंदिर का चबुतरा अपने पैसे से बनवा दिया। यही से तिरिया मेला प्रारंभ हुआ। हर हप्ते में दो बार यह मेला लगने लगा। और कई महिलाएँ अपनी मनोकामना पूर्ण करने लगी। बटुकनाथ का परिवार धनराशी से मालामाल होने लगा। मंदिर के आसपास का खेत रामेश्वर भट्ट का था। वह रहर का खेत करता था। जिससे आसपास का माहौल बडा मनभावन प्रतीत होता था। स्पष्ट है जहाँ सुंन्दर युवतियाँ मेले में आती है वहाँ नौजवान भी होते है। गांव के लोगों ने भी इस अनाचार को रोकने की कोशिश की लेकिन बटुकनाथ इस बात का हमेशा इन्कार करते रहें शहर से पत्रकार भी इस बात को

जानने आता हैं तो बटुकनाथ कहता है- छि-छि बचवा राम राम । यह क्या कह रहे हो। धाम के बारें मे भूलकर भी ऐसा नही कहते जो पातकी है, जो दोष दृष्टि के शिकार है, वहीं ऐसा कहते हैं। उन्हें ही यह सब दिखता है। जा की रही भावना जैसी प्रभु मुरत देखी तिन्ह तैंसी । यह तो ईश्वर का दरबार है बेटा यहॉ दूध का दूध और पानी का पानी होता है। यहाँ ऐसा वैसा कुछ भी होता तो हर मेले के दिन ऐसी भीड नही उमडती । तब कौन स्त्री यहाँ जाना चाहती ? अच्छी-अच्छी घर की खानदानी महिलाएँ यहाँ आती है। खुद उसके घरवाले यहॉ छोड जाते हैं। अपने मन से शंका निकाल दो बच्चा। आशिष लेकर जाओ। तुम्हारी कलम कभी नहीं रुकेगी।[40] उनके ही गांव के गजेंद्र बहू ने इस मंदिर की लीला का भंडाफोड किया । वह पढी लिखी थी । और शिक्षिका थी। उसका इस प्रकार की अंधश्रध्दाओं पर विश्वास नही था, लेकिन उसे भी संतान प्राप्ति नही हो रही थी । इस कारण बूढी सांस को लगता कि मेरे जीते जी इस खानदान को कोई वारिस मिल जाय । इस कारण वह जिद पे अडी थी कि बहुने तिरिया मेले में जाना चाहिए । सास कहती है- मुझे इस तरह न छछनाओं गजेद्र बहू। वंश का मुँह देखे बगैर मर गयी तो मेरी आत्मा तडपती रहेगी। अपनी खातिर न सही, मेरी खातिर देवधाम में चली चलो बहू। सारा जग वहाँ से निहार हो गया और गांव के होकर अभागे बने रहे । कुएँ का मालिक होकर पीआसा । जिसकी भाई पुआ पकावै, उसी की धिअवा ललचे।[41] सांस के खातिर बहु मेले में जाती है। वहॉ देखती है कि जो औरतें संतान प्राप्ति के लिए आयी है वह अपने बाल खोलकर इधर उधर टहलती है। यहा एक ओर परंम्परा है कि जो भी औरत आती है उसे एक रात यहां गुजारनी होती है। गजेंद्र की बहू भी एक रात गुजारने का निर्णय लेती है। लेकिन रात में वह देखती है कि, रात भर अनेकों स्त्रियॉ किसी न किसी नौजवान के साथ रहर की खेत में जाती है। और यह सब देखकर बहू को इन मंदिरों और मठों के प्रति घृणा होती है। सबेरे ही परमेश्वर भट्ट के पास जाकर बहू प्रार्थना करती है- बाबा आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि आप देवधाम के अपने खेंतों से रहर की फसले कटवा लें, और उसमें रहर की खेती कभी ना करे । कोई भी दूसरा अनाज उपजा लिया करें। वे खेत भ्रष्टाचार के अड्डे बन गये हैं। उनकी उपज से कभी बरकत होनवाली नहीं। आप तो स्वयं जानते है स्थान का और अनाज का बहुत महत्व होता है। हम किस जगह कैसा अनाज खाते हैं इसका सीधा असर तन मन पर होता है और हमारा लोक परलोक भी इसी पर निर्भर करता है। मैं तो आपकी बेटी तुल्य हूँ, मैं आपको क्या बताऊँ, लेकिन वहाँ जो कुछ मैंने देखा

है उसे देखने के बाद आपको अवगत करा देना मैने अपना पुनित धर्म समझा है।[42] बाद में देखा गया कि औरतों की चुडिया, टिकुली आदि आदि कई प्रकार का सामान पाया गया था। जिससे साबित होता है कि यहाँ अनाचार और यौनाचार होता था। इसके बाद जैसे देवधाम का तिरीया मेले को श्राप लग गया और उसका महत्व घटने लगा। बटुकनाथ भी इस पर कोई इलाज नही कर पाये। वे कहते है - अब समय बदल गया है। धामों ने अपने सत समेट लिये । जब सुपात्रों की कमी हो जाती है तो धाम अपना दरवाजा बंद कर देते है। सब समय का फेर है। कभी अर्जुन के समक्ष कोई यौध्दा टिकता नहीं था और उनके गाण्डीव जैसा अमोघ वस्त्र भी किसी के पास नही था, लेकिन इस धरती से भगवान श्रीकृष्ण हो जाते ही अर्जुन की वीरता ,खत्म हो गयी और गाण्डीव में वह तेज नहीं रहा । हमारे देवधाम के साथ भी ऐसा ही हुआ है। फिर कभी अनुकुल समय आयगा, फिर वह स्थल जगमगा उठेगा।[43] स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर जीने अपने कहानी साहित्यमें भूत की ग्रामीण परिकल्पना और अंधविश्वास तथा भुतप्रेत को दूर करनेवाले पूजा पाठ और साधु बाबा या ओझा आदियों का चित्रण किया है। साथ ही साथ मंदिरों, मठों मे होनेवाले यौनाचार, अनाचार को भी उद्‌घाटित किया है। अंत में मिथिलेश्वर ग्रामीण समाज व्यवस्था को भलि भाँति जानते और समझते है। इसलिए उनकी भाव भावनाओं का चित्रण करने में सफल हुए है। वैसे ही ग्रामीण समाज विभिन्न उत्सवों, मेलों तथा पूजा पाठ में लगा रहता है। उस समय विभिन्न गीतों और पूजा में अलग अलग प्रकार के गीत गाये जाते है। जैसे बिहार में छट पूजा को बडे धूमधाम से मनाया जाता है। इस संदर्भ में मिथिलेश्वर जीने जमुनी कहानी की जोगनी द्वारा अपनी भैंस की बिमारी को दूर करने हेतू विभिन्न देवी देवताओं की मनौतियाँ करती है और छठ गीत गाती है।

चारी पहर राति जल धल सेईले
सेईले चरण तोहार
छठी मइया...
दुखवा हरना हमार ।[44]

इसी प्रकार मिथिलेश्वरजीने पानी बिच मीन पियासी उन्यास में गांव की लडकियों को वर ढूंढते समय कई परेशानियों से गुजरना पडता है। उस समय कभी कभी गांव के लोग यह भी कह देते हैं कि बेटी बेच दी है। तो इस प्रथा को बेटा बेचवा कहा जाता है। ऐसे प्रसंगों पर मेलों, उत्सवों मे निम्न गीत गाया जाता है।

रोपेया गिनाई लिहल
पगहा धराइ दिहल
चोरिया से छेरिया बनवल ए बाबूजी।
अइसन खो जल वर
देखत लागेल डर
जमने महुरवा चटइत हो बाबुजी।
हलुवा घोंटात नइखे मुहँमा में दाँत नइरवे
पाकुर - पाकुर मुहँवा चलावेला हो बाबुजी।[45]

ऐसे ही ग्रामीण संस्कृति में शादी ब्याह की और परंम्परा है। सीतला मइया के सामने दो गड्ढे खोदे जाते है। एक गड्ढें में पानी और एक में अनाज भरा जाता है। अनाज बस्ती के लोग अपनी अपनी आर्थिक स्थितिसे लाकर देते है। कोई गेंहु, कोई धान कोई कमई, चना-मटर और कोई खेसारी लाते है। और दुल्हा दुल्हन को उन गड्ढों के सामने बिढाया जाता है। इससे यह साबित किया जाता है की उन दोनों के जिवन में अन्न और पानी की कभी कमी ना आये। और फिर सारी महिलाएँ सितला मइया के सामने गीत गाती है।

निमिया के डाड मइया झुलेली हिडोंलवा की झुमी झुमी ना
सातो बहिनी गावे गीत कि झुमी झुमी ना।[46]

वैसे ही एक ग्रामीण को जब कभी कोई काम मिलता है तो उसकी खुशी का ठिकाना नही रहता और वह इस गीत को गाता है।

पुरुब से आन्ही आइल पच्छिम से बरखा
अंगलबा भिंजेला हो रामा।
निहुरी -निहुरी गोरी अंगना बहारेली
अँचरवा उडी उडी जाला हो रामा।
का तुहूँ अँचरा उडी उडी जाल ।
हमरो बलमू कलकतवा हो रामा।
चिट्ठिया मे लिखि लिखि पतिया पेठवणी
तबहूँ ना अइले मोर सजनवा हो रामा... ।[47]

मिथिलेश्वर ग्रामीण कथाकार के रुप में प्रसिध्द है। गांव उनके अन्तस में हमेशा बसा है। वहाँ के लोकगीत उनके नस-नस में बसें है। गांव की नारियाँ खेतों के काम करते हुए

यह लोकगीत गाती है जिसे मिथिलेश्वर जीने माटी कहे कुम्हार से उपन्यास में अंकित किया है।

किया तोरे तिवई मइहर दुःख किया तोरे ससुरा दुख हो

नहीं मोरा नइहर दुख, नही ससुरा दुःख हो ।

ए गंगा मइया नहिं मोरा कंत विदेश कोखिअ दुख रोइला हो सात बालक राम दिहलन सातों मारी लिहलन हो।

ए गंगा मइया अठवे गरभ अवतार ए एकरों भरोंसा नहीं हो। चुप होखु, चुप होखु अतिवई सें आंखी लोर पोछ नु हो।

ए तिवई तोहरो जनमिहें नंन्दलाल महल उठी सोहर हो।

जाहु मेरा गंगा मइया दोइहें दोरिलवा.

ए गंगा मइया सोनवे मठइवों शडर हटवा न रुपे लागि सिढीयां नु हो।[48]

वैसे ही खेंतों में काम करने वाले मजदूर भी अपना काम करते करते यह गीत गाते है। और अपना दिन बिताते है।

पहिले ओहिले हम अइनी गवनवा कि सासु भेजे पानी के ए रामा।

देखनी कुंइँयवाँ के रीती व मन मुसुकाइल ए रामा।

लगले कुंइँयवाँ प भीर फुटले सिर के गागर ए रामा।

सासु मोरा मरिहें बढनिया, ननद गरिअइँहें ए रामा।

संइयाँ जी के बोलिया कठोर त सहलो ना जाला ए रामा।

सासु मोर सोवली अटरिया, ननद गजओवर ए रामा।

राजा मोर सुतले महलिया, त कइसे के जगाइब ए रामा।

उठ उठ लहुरी ननदीया त निन्द तोहार बाऊर ए रामा।

घरवा में घुसल बाडन चोर त मइया के जगाव ए रामा।

करवों में सोर-हों सिंगार त हाथे लेके दिपक ए रामा।

झमकी के चढवों अटरिया त संईयाँ के जगाइब ए रामा।

सुखिया पहले संसार सुख के निंन्द सोवले हो रामा।

दारु कबी हरि दुखिया हरी के गुण गावेले हो रामा।[49]

अंन्त मे यही कहॉ जा सकता है की मिथिलेश्वर का जिवन ग्रामीण क्षेत्र मे गुजरा है और वे जाने है की ग्रामणी जन जिवन लोगगित लोक परंम्पराओं से भरा पडा होता है। और उन्होंने अपने कथा साहित्य मे उसका सटिक प्रयोग किया है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते है की मिथिलेश्वर ग्रामीण धरोहर के संवाहक है। तथा ग्रामीण जीवन में सांस्कृतिक मान्यताओं का कितना महत्व होता है इसका चित्रण अपने कथा साहित्य में किया है। पढे लिखे लोग भी कभी कभी अंधश्रध्दा और अंधविश्वास के जाल में किस प्रकार फँस जाते है इसका चित्रण मिथिलेश्वरने गृहप्रवेश कहानी में बखुबी किया है। एक गांव की अन्त कथा में कृष्ठरोग जैसी बीमारियों के कारण कैसे परिवार बर्बाद होते है क्योंकि गांवों में आज भी डॉक्टरों के बजाय बाबाओं, ओझाओं का सहारा लिया जाता है। आदि का चित्रण मिलता हे । सवाल कहानी भी इसी समस्या पर चित्रित है । बीजारोपण कहानी में पढे लिखे लोगों पर टिप्पणी करती है। की यह लोग केवल चर्चा में बहस का एक हिस्सा बनते है लेकिन कारगर उपाय के लिए कोई आगे नही बढता। हर कोई कहता है की ऐसा होना चाहिए लेकिन कोई आगे बढकर किसी समस्या का निदान नहीं करता है। जमुनी कहानी की जमुनी एक भैंस है वह परिवार के लिए कितनी अभिन्न है। इसका विवेचन मिथिलेश्वरजीने किया है। जमुनी जब बिमार होती हैं तो सारा परिवार दाना पानी खाना छोड देता है। क्योंकि ग्रामीण में समाज यही पशु तो उनका असली धन होता है।

भूतप्रेत संबंधी भी ग्रामीण समाज में कई धारणाएँ है। उन्हें उखाड फेंकने की कोशिश मिथिलेश्वरजी द्वारा हुयी है। वैसे ही मंदिरों और मठों में क्या चलता है यह बात छिपी नहीं है। इन देवी देवताओं के नाम पर अनपढ, गरीब लोगों को लुटा जाता है। या लालच दिया जाता है। क्योंकि मंदिरों, मठों में जाने से संतान की प्राप्ति नहीं होती यह समझ आना अभी भी बाकी है। और इन्ही मंदिरों, मठों में ही अनाचार, यौनाचार तथा भ्रष्टाचार को बढावा मिल रहा है। इन सब बातों का पर्दाफाश लेखक अपनी कहानी द्वारा करते है। वैसे अपनी संस्कृति बडी महान मानी जाती है। लेकिन वही संस्कृति की आड में मजबूर लोगों का नाजायज फायदा उठाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में प्रकृती और लोकगीत, लोक परंपरा आदि मनुष्य जीवन से जुडे हुए है। मिथिलेश्वरजी ने बखुबी उसे हमारे जन मानस में उतारने का सफल प्रयोग किया है।

संदर्भ

1. सं-राम शकल पाण्डेय - साहित्य परिचय (1971-आगरा), शिक्षा और भारतीय संस्कृति विशेषांक - पृ.-17

2. कमलेश्वर- दो सौ नए निबंध पृ.-174

3. डॉ. ज्ञानचंद गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिंन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना पृ-96

4. पंडित जवाहरलाल नेहरु (डॉ. रामलाल विवेक) आधुनिक भारत के निर्माता पृ-136

5. डॉ. संगिता पाटील मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति पृ-122

6. डॉ. वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानीयों मे ग्रामीण यथार्थ पृ-73

7. डॉ. वर्षा मिश्र-मिथिलेश्वर की कहानियों मे ग्रामीण यथार्थ-पृ73

8. मिथिलेश्वर - युध्दस्थल के नेपश्य - पृ- 11-12

9. मिथिलेश्वर - बाबूजी - विरासत- पृ-41

10. मिथिलेश्वर - बाबूजी - विरासत- पृ-41

11.मिथिलेश्वर - बाबूजी - विरासत - पृ- 45

12.मिथिलेश्वर - एक गांव की अन्तकथा - पृ -211

13. मिथिलेश्वर - प्रेत की जट पृ - 37

14. मिथिलेश्वर - प्रेत की जट - - पृ, - 37

15. मिथिलेश्वर - प्रेत की जट - - पृ, - 39

16 मिथिलेश्वर - जमुनी - पृ, - 69

17 मिथिलेश्वर - जमुनी - पृ, - 70

18 मिथिलेश्वर - जमुनी - पृ, - 72

19 मिथिलेश्वर - जमुनी - पृ, - 73

20 मिथिलेश्वर - जमुनी पृ - 73

21 मिथिलेश्वर - जमुनी पृ - 75

22 मिथिलेश्वर-जमुनी - पृ 76

23 मिथिलेश्वर- जमुनी - पृ 80

24 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 135

25 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 135

26 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 135

27 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 135

28 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 140

29 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 140

30 मिथिलेश्वर - जमुनी गूँगा गंगू - पृ 140 - 141

31 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - बीजारोपण - पृ - 19

32 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - बीजारोपण - पृ - 23

33 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - बीजारोपण - पृ - 24

34 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - बीजारोपण - पृ - 27

35 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - बीजारोपण - पृ - 27

36 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - अभी भी - पृ - 15-16

37 मिथिलेश्वर - दूसरा महाभारत - अभी भी - पृ - 14

38 मिथिलेश्वर - जमुनी - जमुनी -98

39 मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर अपने- अजगर करै न चाकरी - पृ - 58-59

40 मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर अपने- अजगर करै न चाकरी - पृ - 68

41 मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर अपने- अजगर करै न चाकरी - पृ 61

42 मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर अपने- अजगर करै न चाकरी - पृ 64

43 मिथिलेश्वर - चल खुसरो घर आपने- अजगर करे न चाकरी - पृ 65

44 मिथिलेश्वर - जमुनी- जमुनी- पृ 95

45 मिथिलेश्वर - पानी बीच मीन पियासी- पृ 115

46 मिथिलेश्वर - माटी कहे कुंम्हार से- पृ 59

47 मिथिलेश्वर - माटी कहें कुंम्हार से- पृ 107

48 मिथिलेश्वर - माटी कहें कुंम्हार से- पृ 228

49 मिथिलेश्वर - माटी कहे कुंम्हार से - पृ 229

अध्याय सातवां

उपसंहार

मिथिलेश्वर ग्रामीण चेतना के कथाकार के रूप में विख्यात है आपका जन्म बिहार राज्य के बैसाडीह ग्रामीण कस्बे में 31 दिसंबर 1950 में हुआ । आपके पिता श्री वंशरोपनलाल और माता कमलादेवी थे । मिथिलेश्वर के पिता बिहार के ही एच डी जैन कॉलेज में वाणिज्य के प्रोफेसर थे । उनमें अद्‌भूत प्रतिभा थी । तथा माता कमलादेवी धार्मिक और पढी लिखी महिला थी । रामायण और महाभारत में उन्हें अधिक रूचि थी । किन्तु पिताजी 1968 में और माताजी 2003 में इस दुनिया को छोडकर चले गये । उस समय बेटे मिथिलेश्वर की आयु बहुत कम थी ।

मिथिलेश्वर अच्छी ग्रह दशा के दौरान पैदा हुए । और उनको जन्म के समय कहा गया कि इन्हें जीवन में किसी चीज की कमी नही होगी । किन्तु शरीर उनका दुबला पतला और शक्तिहीन था । बचपन भी ग्रामीण परिवेश में गुजरा । प्राथमिक शिक्षा गांव की ही पाठशाला में हुयी । पांचवी के बाद की पढाई सेदहां और हसन बाजार में पूरी की । और मैट्रिक की परिक्षा वीर कुँवर सिंह की नगरी जगदिशपुर में दी । इसके बाद उन्होंने ए.एस.कॉलेज विक्रम गंज (रोहतास) से हिन्दी में बी.ए. पास किया । बी.ए. करने के बाद मगध विश्वविद्यालय बोधगया में एम.ए. किया और वही से पी.एचडी की शिक्षा भी अर्जित की । उसके बाद मिथिलेश्वरजीने जीवन की पहली नौकरी डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय में शुरू की । लेकिन 50 रूपये मासिक वेतन की यह नौकरी छोडकर वे रामगढ कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में प्रविष्ट हुए । और अन्त में स्नातकोत्तर हिदी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा में ही रहें । और वही से रिटायर्ड कर गये है ।

मिथिलेश्वरजी का विवाह हसन बाजार के पोस्ट मास्टर श्याम सुन्दर प्रसाद की बेटी रेणु से 1969 में हुआ । उन्हें बेटियॉ है पिंकी, रीनी । मिथिलेश्वर जी का व्यक्तित्व बडा ही मिलनसार है । वे हमेशा दुखियारों की मदद करते है । अपने परिवार तथा समाज की जिम्मेदारियों को समझते है । स्पष्ट है कि उनमें मानवीयता कुट कुट कर भरी हुयी है । इस कारण उनकी मित्र मंडली की फेहरिश्त काफी बडी है । जैसे शिवनाथ सिंह, केशव सिन्हा, रामायण तैले । वैसे ही उनके बचपन के मित्र भी हमेशा

साथ रहे । वे थे जीन और बजाजी । रामायण उनका बंधु सखा था । साहित्यिक मित्रों में बनारसी प्रसाद भोजपुरी, रामेश्वर नाथ तिवारी, भगवती राकेश, डॉ. चंद्रभूषण तिवारी , मधुकर सिंह , नीरज सिंह, रामेश्वर उपाध्याय, ज्योति प्रकाश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, बिपिन बिहारी, राजेश कुमार , सुभाष प्रसाद सरकार, नवलकिशोर गौंड आदि । इसी सूची से स्पष्ट होता है कि मिथिलेश्वर कितने मिलनसार व्यक्ति है ।

मिथिलेश्वरजी का साहित्यिक जीवन कॉलेज के दिनों से शुरू हुआ है । उनकी पहली कहानी 'अनुभवहीन' मई 1973 की सारिका विशेषांक में प्रकाशित हुयी थी । किन्तु कॉलेज पुस्तिका में उनकी पद्रह मई और सात अगस्त कहानी 1968 में अभियान पत्रिका में छपी थी । इस कारण 1968 में छपी कहानी ही उनकी पहली कहानी मानी जायेगी । इसके बाद उन्होंने पीछे मुडकर नही देखा और कई उपन्यास और कहानी संग्रहों का सृजन किया । इस कारण उन्हें कई संस्थाओं से पुरस्कार और सम्मान भी प्राप्त हुए है ।

भारतीय समाज जीवन की धडकन गांवों में बसती है । उसके सारे रंग रूप हमें ग्रामीण क्षेत्र में दिखाई देते है । ग्रामीण वर्ग सदियों से अनेकों आक्रांत स्थिति से गुजर कर भी अपनी जीजिविषा में आगे बढ रहा है । इस स्थिति का चित्रण हिन्दी कथाकारों ने हमेशा से किया है । प्रेमचंद्र पूर्व परंपरा में भले इसे बहुत स्थान नही दिया गया । लेकिन प्रेमचंदजीने अपने कथा साहित्य में ग्रामीणों की हर समस्या को अपने सम्मुख रखा और उसे उजागर करने की कोशिश की है । प्रेमचंद के बाद जयशंकर प्रसाद ने भी 'तितली' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की यात्रा की है । शिवपूजन सहाय ने भी 'देहाती दुनिया' में गांव को चित्रित किया हे । निरालाजीने 'अलका' उपन्यास में किसान आंदोलन की चर्चा की है । वैसे ही 'चतुरी चमार' 'अपना घर' में भी ग्रामीणों की समस्याओं का चित्रण मिलता है । यशपाल मार्क्सवादी कथाकार के रूप में प्रसिध्द है । 'मनुष्य के रूप' में पहाडी क्षेत्रों को अपना कथ्य बनाया है । महादेवी वर्माने घीसा बदलू जैसी कहानियॉ लिखकर ग्रामीण जीवन को प्रकाश में लाने की कोशिश की है । वृन्दावनलाल वर्मा के 'अमर बेल' उपन्यास में आजादी के बाद भारतीय ग्रामीण यात्रा का दर्शन होता है । नागार्जून तो आंचलिक कथाकार के रूप में विख्यात है । उन्होंने रतिनाथ की चाची, बलचनमा , नई पौध, बाबा बटेसरनाथ जैसी कालजयी रचनाओं में ग्रामीण जन जीवन चित्रित किया है । फणीश्वरनाथ रेणु जीने 'मैला आचल' तथा परती

परिकथा लिखकर नयी ग्रामीण परंपरा को जन्म दिया है । यज्ञदत्त शर्मा ग्रामीण कथाकारों में जाने जाते है । 'झूनिया की शादी' उपन्यास कृषि पर आधारित है । उदय शंकर भट्ट जीने 'सागर लहरें और मनुष्य' में मछुआरों के जीवन को चित्रित किया है । भैरवप्रसाद गुप्त 'गंगा मैय्या' में उत्तर प्रदेश के (बलिया) ग्रामीण किसानों की समस्याओं का चित्रण है । उसी प्रकार राजेंद्र अवस्थी 'सूरज किरण की छांव में' बस्तर के आदिवासियों के जीवन की त्रासदी बयान की है । अलग अलग वैतरिणी में शिव प्रसाद सिंह ने भोजपूर प्रदेश की संस्कृति को वर्णित किया है । मनहर चौहान ने 'हिरना सांबरी' रचना में छत्तीसगढ का आंचलिक वर्णन किया है । मार्कडेंय ग्रामीण कथाकारों में सशक्त लेखक है । जिन्हेांने ग्रामकथाओं में नीम की टहनी, 'पानफूल' , 'महुए का पेड', 'धूल के घर' आदि में ग्रामीण जन जीवन को चेतना दी है ।

राही मासूम रजा ने 'आंधा गांव' लिखकर मुसलमानों का दर्द अभिव्यक्त किया है । डॉ. रागेय राघव ने उबाल में ग्रामीण तथा शहरी विषमताओं का चित्रण किया है ।

स्पष्ट है कि ग्रामीण जन जीवन का चित्रण, विभिन्न साहित्यकारों व्दारा हुआ है । क्योंकि बहुत से साहित्यकार भारतीय मिट्टी की गंध से जुडे है । उन्होंने ग्रामीण जन जीवन को भोगा और परखा है ।

मिथिलेश्वरजी के कथा साहित्य में ग्रामीण सामाजिक जीवन की परिपूर्ण अभिव्यक्ति हुयी है । ग्रामीण समाज की परपंराएँ, आस्थाएँ, विश्वास टूट रहा है । शहरी माहौल प्रति, आकर्षण ग्रामीण क्षेत्र में बढ रहा है । गावों में दया , ममता, ईमानदारी को छेद दिया जा रहा है । भारत में ग्रामीण क्षेत्र व्यापक रूप में फैला हैं । फिर भी उसकी ओर ध्यान नही दिया जा रहा है । गांव की गरीबी का चित्रण 'एक और हत्या' में मिथिलेश्वर जीने किया है । धनवानों के घरों में काम करनेवाले नौकरो की दशा बडी विचित्र होती है । के दिनभर खेतीबाडी , पशुओं की देखभाल करके भी उपर से मालिकों की गालिया सुनते है । वे लोग मजबूर है । 'शेष जिन्दगी' में ग्रामीण नारी की वैधव्य जीवन की त्रासदी चित्रित है । 'बाबूजी' कहानी में ग्रामीण नारी की व्यथा बयान है । 'पत्थर की लकीर' में अछूत कन्या का विवाह उच्च वर्ग के बाबा से होने की कहानी है । मिथिलेश्वर जीने बनिहार और चरवाहा लोगों के जीवन को भी अपनी कहानियों में लिया है । 'संगिता बॅनर्जी' कहानी में 'अबला निकेतन' नामक संस्था व्दारा नारी विकास की

बात कही गई है । 'पहली घटना' में बाल विधवा का विवाह कराने की घटना चित्रित हे । 'नरेश की बहू' में बहू की त्रासद स्थिति चित्रित है । 'प्रो.बी.लाल' कहानी में लेखक ने अपने पिता के व्यक्तित्व को लेकर संस्मरणात्मक कहानी लिखी है । 'शरीर से लाश तक' कहानी पुरूष व्दारा लाचार गरीब निर्धन नारी पर अत्याचार की कहानी है । 'सावित्री दीदी' में नारी ही नारी की दुश्मन होने की त्रासदी वर्णित है । 'शांता नाम की लडकी' में अनाथ बच्ची को बचपन में ही जवान बना देने की घटना को बयान किया है । 'जी का जंजाल' कहानी चार बेटों की मॉ होकर भी अनाथ जिंदगी बितानेवाली मॉ की व्यथा देखी जा सकती है । 'भोर होने से पहले' में आदिवासी महिला के अपनी ही बच्ची से बिछडने की कथा है । 'रात' में यौन शोषण का चित्रण है । 'पहली घटना' बाल धिवा की दुखभरी कहानी है । 'गंगिया फुआ' कहानी में विधवा की जीवन कथा को देखा गया है । मिथिलेश्वरजीने आदिवासी, 'ग्रामीण' दलित आदि लोगों के जीवन पर भी कई कहानियाँ लिखी है । इन लोगों पर कैसे कैसे अत्याचार होता है इसका चित्रण मेघना का निर्णय में हुआ है । 'मेघना का निर्णय' में मजदूरों के शोषण और उसके खिलाफ आवाज उठाने का चित्रण है । 'कुचलती हुई लाश' में मनुष्य कितना अमानवीय हो गया है इसका चित्रण मिलता है । 'रास्ते' में पत्नी की लाश पडी हो और उसकी कोई सहायता नही करता है । 'जिंदगी का एक दिन' कहानी में सामान्य व्यक्ति के एक रस जिन्दगी जीने की घटना लिखी गई है । 'छोटे शहर के लोग' कहानी में लोग किस प्रकार वासना के शिकार हैं का चित्रण है । 'बहादुर' में नेपाली गोरखा व्यक्ति की रोजी रोटी के लिए जी तोड मेहनत भी काम नही आती । अतः वह सबकुछ गंवाकर अपने वतन लौट जाता है ।

चौटी, डकैती लूट आदि का चित्रण भी मिथिलेश्वरजीने अपनी कहानियों में किया है और स्पष्ट किया है कि यह मजबूरी में चोर, डाकू बने है जिसका वर्णन रघुलाल का टोला, 'अपने लोग', 'हत्यारों की वापसी' में आया है । अपने लोग कहानी में डाकूओं का गिरोह भी जाति के आधारपर बट जाने की कथा व्यक्त करती है । हत्यारों की वापसी में गांव का सामान्य व्यक्ति भी हालात के कारण खूखॉर डाकू बन जाता है । इसे मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

ग्रामीण और शहरी बदलते परिवेश को भी मिथिलेश्वरजीने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है । 'हरिहर काका' कहानी में अपने ही लोग किस तरह से स्वार्थी और लोभी बन जाते हैं कि अपनों की बलि चढाने के लिए तैयार होते है । 'जहाज का पंछी' कहानी जाति व्यवस्था के शिकार व्यक्ति की है । जो चाहकर भी अपना काम त्यागकर दूसरा काम नही कर सकता । 'उनकी जिंदगी' अमीर आदमी के जीवन की कथा है । 'शिष्टाचार की समझ' में प्रेम के संकेतों का वर्णन है । 'जंगल होते शहर' में हत्याओं और अपराधों का वर्णन है । 'दण्ड' कहानी में छोटीसी चोरी पर भीडव्दारा पीटे जाने की त्रासदी है । जिसका लोग आनद उठा रहें है । 'तब तक' में गरीब लाचार औरत के बीमार बच्चे का इलाज करवाने हेतू अस्पताल गए लोगों की त्रासद स्थिति वर्णित है एक में अनक में मालिक का क्रूरतापूर्ण रवैया नौकरों के प्रति दिखाया गया है । 'रिश्ते' पिता पुत्र सम्बंधों पर आधारित कहानी है । 'थोडी देर बाद' में गरीबी और लाचारी के कारण लडकी अपने शरीर बेचने के लिए तैयार होने की मजबूरी बयान करती है । 'श्री सीमेन्ट स्टोर' में मजदूरों का शोषण और विद्रोह मौजूद है । 'कितनी दुनिया मे बाढ का वर्णन है । 'गांव का मधेसर' में निर्धनता के कारण ब्राम्हण होते हए भी बनिहारी करने ओर डोम जाति की लडकी से विवाह करने की त्रासदी चित्रित है । 'सीमाएँ' वर्ण व्यवस्था की शिकार नारी की कहानी है । 'सूरज ब्रम्ह के गांव' में धनवान मनुष्य पैसे के बलपर सबकुछ खरीदने की कहानी है यहॉ तक गांव की सुन्दर लडकियॉ भी । 'लापता' कहानी भागे हुए सैनिक की कहानी है । 'न चाहते हुए' भी मदारी का जीवन यथार्थ है । 'मोल ली हुई मुसीबत' दातौन तोडनेवाली गरीब लडकी को किस प्रकार भ्रष्ट किया जाता है इसका वर्णन है । 'जमुनी' भैस के करण परिवार किस प्रकार खुशहाल होता है । क्योंकि बंधुआ मजदूरी करनेवाले लोग पशुधन के कारण अपना विकास करते है । जमुनी इसकी मिशाल है । 'विषवृक्ष का बेटा' डाकू बनकर अपने ही पिता का शोषण करने की कथा है । 'नदी की राह' में ग्रामीण युवक पैसा कमाने हेतू शहर जाकर सबकुछ गॅवा देता है यहॉ तक कि अपनी बीवी भी । 'दुर्घटना' में भूकंप और प्लेग की अफवाहों की कहानी है । ' चल खुसरों घर आपने' में कई सालो बाद मॉ अपने स्वय के घर में प्रवेश पाने की कथा वर्णित है 'गॉव का घर' शहर से उबे हुए लोग गांव की ओर आते किंतू गांव में आकर मोह भंग होता है कि जो शहरों में हो रहा है

वह आज गावों में भी हो रहा हे । स्पष्ट है कि मिथिलेश्वर की कहानी यात्रा में विविधता है । ग्रामीण तथा शहरी समस्याओं का चित्रण कर मिथिलेश्वरजीने अपनी कथायात्रा केा नया आयाम दिया है ।

मिथिलेश्वरजीने तत्कालीन राजनीति पर भी गहराई से प्रकाश डाला है । हमारी राजनीति किस और जा रही है । जिससे हमारा प्रजातंत्र कितना खोखला होता जा रहा है इसका चित्रण भी अपने कथा साहित्य में किया है । 'सरे आम' कहानी मे बस कडक्टर को गुडों व्दारा पुलिस थाने के सामने मार दिये जाने की कहानी हैं । जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि आम आदमी की सुरक्षा क्या होगी ? । 'एक सडक और तीन सौदेबाज' कहानी के शीर्षक से ही भ्रष्ट व्यवस्था का अर्थ लगाया जा सकता है । 'एक गॉव की अन्तकथा' में गॉवों के लिए बनायी गई योजनाएँ गावों में कितने लोगों तक पहुचती है का चित्रण है । सो दुविधा पारस नहिं जानत राजनीति का असली चेहरा सामने आता है । क्योंकि सरकारें बदलती है तो चेहरे भी बदल जाते है । एक सरकार में व्यक्ति ईमानदार होता है तो दूसरी सरकार में वही व्यक्ति चोर और गुनहगार होता है ।

शिक्षा क्षेत्र भी अपराधमुक्त नही है । वहां पर भी राजनीतिक षढयंत्र चलते रहते है । 'अध्यापन' कहानी में अध्यापकों की कामचोरी गैरजिम्मेदारी को बयान किया है । स्पष्ट है कि राजनीति में नेता अपने अधिकारियों व्दारा अपना स्वार्थ साध रहे है । जिससे सामान्य आदमी उसमें पिसता जा रहा है । वह मूक बनकर देख रहा है कि यही प्रजांतत्र है ।

मिथिलेश्वरजीने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण आर्थिक जीवन का चित्रण भी किया है । 'नपुसंक समझौते' में गांव का पढा लिखा नौजवान नपुंसक बनता जा रहा है ।क्योंकि वर्तमान पढाई से नौकरी पा ना असंभव सा होता जा रहा है । 'अनुभवहीन' में डिप्टी कलक्टरी पाने में उसकी उम्र चली जाने की घटना वर्णित है । 'बीच रास्ते में ' के भाईयों के लिए साक्षात्कार देने हेतू कपडे नही है । 'कसूर' भी इसी तरह बेरोजगार युवक की कहानी है । 'रात अभी बाकी है' मे गरीब किसान के चार चार बेटे होकर भी निझावन आर्थिक विपन्नता में जीन्दगी गुजारने के लिए मजबूर है । 'विग्रह बाबू' कहानी क्लर्क की आर्थिक त्रासदी है । 'पहली हॅसी' में साहित्य से जीवन का गुजारा नही होने

का वर्णन है । आर्थिकता के कारण सरना डकैत बन जाने की कहानी 'उम्रकैद' है । सरना कहता भी है कि यहॉ तो बडे बडे डकैत है लेकिन पुलिस उसे नही पकडती । मुझ जैसे सामान्य चोर को बन्दी बनाया जा रहा है । 'तीन यार' भी पढे लिखें नौजवानों के बेकार होने की कहानी है । 'सुबह' की प्रतिक्षा कहानी शिक्षा संस्थाओं व्दारा होनेवाले यौन शोषण को चित्रित करती है । निष्कर्ष रूप में कहॉ जा सकता है कि आर्थिकता के कारण आज गांव का पढा लिखा युवक शहरों की गलियों की ठोकरे खा रहा है । मजदूर का शोषण हो रहा है । उसे विद्रोह के लिए मजबूर किया जा रहा है । गांव की निर्धन नारी एक रोटी के लिए अपनी इज्जत बेच रही है । आर्थिक अभाव के कारण पढे लिखे नौजवान चोर डाकू बनते जा रहे है । शिक्षा संस्थाओं में भी कम तनख्वाह पर पढे लिखे नौजवानों से अध्यापन कार्य किया जा रहा है । वहॉ भी नारियों का यौन शोषण हो रहा है । स्पष्ट है कि गांवों की स्थितियॉ बद से बदत्तर होती जा रही है । जिसे मिथिलेश्वरजी अपने कथा यात्रा में चित्रित करते है ।

मिथिलेश्वर अपने कथा साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के पक्ष को भी उद्घाटित करते है । भारतीय ग्रामीण समाज अंध विश्वास, अंधश्रध्दा और परपरांगत मान्यताओं से ग्रसित है । वे आज भी देवी देवताओं के प्रकोष को स्वीकार करते है । धार्मिक पूजा पाठ के लिए अपनी बेटी की शादी की पुॅजी भी लगाते है । संतान की प्राप्ति हेतू भी मठों , मन्दिरों मे ं आज भी अपनी बहू बेटियों को रात रात रहने के लिए मजबूर कर संतान प्राप्ति कर लेते है । भूत प्रेतों पर आज भी उनका विश्वास कायम है । भूत मनुष्य रूप धारण करके हमें डराते है । पढे लिखे लोग भी अंध विश्वास से अभी भी मुक्त नही पाये है । गृहप्रवेश करते समय पूजा पाठ किया जाता है । ग्रामीण समाज के लोग अपनी बिमारी दूर करने हेतू ढोगी बाबाओं तथा ओझाओं का सहारा लेता है । साथ ही साथ ग्रामीण समाज आज भी मेले, उत्सवों, त्यौहारों में अपनी श्रध्दा रखते है । आदिवासी लोग भी अपनी संस्कृति बनाये हुए है । स्पष्ट है कि ग्रामीण जन जीवन अशिक्षा से ग्रस्त होने के कारण इन तंत्र मंत्रो तथा पूजा पाठ में आस्था रखते है । मिथिलेश्वरजीने अपनी कथा यात्रा में इन सभी समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है । और ग्रामीण जीवन में बदलाव की अपेक्षा रखते है । मिथिलेश्वर अपनी रचनाओं के माध्यम से ग्रामीण यथार्थ को सच्चाई और ईमानदारी से हमारे सम्मुख रखते है ।

संदर्भ / पत्रिकाएँ / कोश

1. डॉ वर्षा मिश्र - मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ

2. डॉ विवेकी राय - माटी की महक धरती गांव की - भूमिका से

3. विवेकी राय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन

4. सुदर्शन कहानी की कहानी

5. डॉ संगिता पाटील- अप्रकाश्य साहित्य

6. डॉ नगीना जैन - आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास

7. डॉ. कैलास प्रकाश - प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास

8. गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास

9. प्रेमचंद - मानसरोवर - पुस की रात

10 शान्तिप्रिय द्विवेदी - युग और साहित्य

11. प्रेमचंद - गोदान

12. डॉ पदमसिंह शर्मा - वृदावनलाल वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व

13. नरपतचन्द सिंघवी - महाकवि निराला का कथा साहित्य

14 डॉ ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ

15 शिवपूजन सहाय रचनावली

16 यशपाल मनुष्य के रूप

17 डॉ वासुदेव हिन्दी कहानी और कहानीकार

18 शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास

19. फणीश्वर नाथ रेणू - मैला आंचल- की पृष्ठ भूमि से

20. गोपाल राय -हिन्दी उपन्यास का इतिहास

21. डॉ. भगवत- स्वरूप नागार्जून के उपन्यासो में आचंलिकतत्व

22. डॉ बेचन- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य

23. शिवप्रसाद सिंह - अलग अलग वैतरणी

24. मार्कडेय - उत्तराधिकार

25. डॉ इद्रनाथ मदान - आज की हिन्दी उपन्यास

26. श्रीपतराय, आकाशवाणी इलाहाबाद से दिए गए भाषण- 26/12/1955

27 डॉ रागेय राघव - कब तक पुकारू से संसदर्भ

28. डॉ प्रेमचंद सिन्हा - आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में समसापायिक जीवन की अभिव्यक्ति

29 डॉ रघुनाथ देसाई - हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में समाज जीवन

30 मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबुतरी

31. रामदरश मिश्र हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा

32. डॉ. प्रभा खेतान - हंस - नंवबर दिसबंर

33 तसलीमा नसरीन - नवबंर - दिसंबर - हंस 1994

34. डॉ. माधव सोनटक्के - समकालीन परिवेश और प्रासंगिक रचना संदर्भ

35. डॉ राकेश गुप्त एव डॉ ऋषिकुमार चतुर्वेदी - हिन्दी कहानी की भूमिका से

36. डॉ. रमेश देशमुख - आठवें दशक की कहानी में जीवन मूल्य

37 रामचंद वर्मा - संक्षिप्त हिन्दी शब्दकोश

38 महात्मा गांधी - हरिजन पत्रिका 28/7/-1946-1

39 डॉ हेमेद्र पानेरी - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में मूल्य संक्रमण

40 डॉ. टी. मोहन सिंह - साठोत्तर हिन्दी उपन्यास प्रतिपाद्य और शिल्प

41. संपा टी के लक्ष्मण , बी के नारायण, Rural Development of India

42 सं-राम शकल पाण्डेय - साहित्य परिचय (1971-आगरा), शिक्षा और भारतीय संस्कृति विशेषांक

43 कमलेश्वर- दो सौ नए निबंध

44 डॉ. ज्ञानचंद गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिंन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना

45. पंडित जवाहरलाल नेहरु (डॉ. रामलाल विवेक) आधुनिक भारत के निर्माता